

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178796

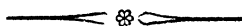
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H83** **P. G.**
G42H Accession No. **H589**
Author **धोषाल, स्वर्णकुमारीदेवी .**
Title **हुगली का इमामबाड़ा . 1936 .**

This book should be returned on or before the date
last marked below.

हुगली का इमामबाड़ा



मूल लेखिका—
स्व० स्वर्णकुमारी देवी घोषाल

अनुवादक—
स्व० मुरारीदास अग्रवाल

प्रकाशक—

पुस्तक-भवन,
बनारस सिटी ।

प्रथमावृत्ति]

अप्रैल, १९३६

[मूल्य १।।।]

सजिल्द के लिए आठ आने अधिक

प्रकाशक—

बिट्टलदास गुप्त, व्यवस्थापक

पुस्तक-भवन,

बनारस सिटी ।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मुद्रक —

श्रीनाथदास अग्रवाल

टाइम-टेबुल प्रेस,

बनारस सिटी ।

प्रकाशक क दो शब्द

स्वर्णकुमारी देवी बङ्गभाषाकी प्रख्यात लेखिका हैं। प्रस्तुत पुस्तक आप ही की लिखी है। यह सन् १९९३ बं० में लिखी जाकर पहले धारा-वाहिक रूपसे 'भारती' नामक मासिक पत्रिकामें निकली थी। बादमें पुस्तकाकार प्रकाशित हुई। मेरे श्रद्धास्पर्ध गुरु बाबू मुरारीदास बङ्गीय साहित्यके अच्छे विद्वान् थे। उनके पढ़ाये हुए आज यद्यपि हजारों छात्र हैं किन्तु मुझपर उनका विशेष स्नेह था। मेरे आज इस पदपर पहुँचनेमें उनका भी खास हाथ है। उनका छात्र होनेका मुझे आज भी गौरव है। जिस समय मैंने राम-चन्द्रिका, विनयपत्रिका, विहारी सतसई आदि साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन प्रारम्भ किया था उस समय उन्होंने हिन्दीमें अन्य भाषाओंकी उच्चकोटिकी शिक्षाप्रद पुस्तकोंके अनुवादके प्रकाशनकी ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया था। फलतः मैंने कई ख्यातिलब्ध बँगला तथा गुजराती लेखकोंकी पुस्तकें प्रकाशित भी कीं। रवीन्द्रनाथ ठाकुरके राजारानी तथा विर्सजन नाटकका तो अनुवाद भी उन्होंने ही किया। एक दिन स्वर्णकुमारी देवीकी इस पुस्तककी महत्ता भी उन्होंने बतलाई। मैंने उनसे इसका अनुवाद कर देने की प्रार्थना की। वे राजी हो गये। अनुवाद प्रारम्भ हो गया। उस समयके (सस्ती साहित्य पुस्तकमालाके) सम्पादक पन्नालालजीको उन्होंने बोलकर इसका अनुवाद लिखा दिया। इस पुस्तकको तो,

आज ८ वर्ष पूर्व जब यह लिखी गई थी, तभी मैं प्रकाशित कर दिये होता, किन्तु टाइम टेबुलकी भ्रष्टाचारोंके कारण ऐसा न कर सका ।

इधर पं० केदारनाथ पाठककी सहृदयता एवं उनकी आर्थिक-स्थितिका ख्यालकर बाबू मुरारीदासजीने इस पुस्तकका अधिकार उन्हें दे दिया और कह दिया कि इससे जो आय हो वह आप ले लीजिएगा । राजारानी एवं विसर्जनके पुरस्कारमें भी उन्हें जो कुछ मुझसे मिला था उसे भी उन्होंने उक्त पाठकजीको ही दे दिया था । पाठकजी हिन्दी साहित्यके 'गुदड़ीमें छिपे हुए लाल' हैं । आप हिन्दीके धुरन्धर विद्वान् हैं । आपकी स्मृति इतनी जबरदस्त है कि आजसे ४०-५० वर्ष पूर्व भी जो आप पढ़ चुके हैं वह एकदम ताजा याद है । हिन्दी साहित्यके सम्बन्धमें जितनी अधिक जानकारी एवं स्मृति आपकी है वह अद्भुत है । आप हिन्दीके जीवित विश्वकोष (Living Encyclopedia) माने जाते हैं । भारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी के जमानेसे वे बराबर हिन्दीकी सेवा करते चले आ रहे हैं । आपने अपने प्रोत्साहन एवं उद्योग द्वारा कितनों को ही अच्छा हिन्दी लेखक बना दिया । कितने ही साधारण पुरुष हिन्दी पाठकसे उच्चकोटिके विद्वान् बन गये । पुस्तकोंके तो आप कीड़ा हैं । अभी भी ६८ वर्षकी वृद्धावस्थामें अपने एकलौते पुत्र-शाक तथा आर्थिक कठिनाइयोंके कारण शरीर जर्जर हो जाने पर भी पुस्तकें पढ़नेका रोग आपको लगा ही है । आपका अधिकांश समय साहित्य-चर्चा एवं पुस्तकाध्ययनमें ही बीतता है । आप बड़े ही सरल हृदय हैं । बाबू मुरारीदासजीका स्वर्गवास हो जानेपर

पाठकजीने उनकी यह कृति बिना किसी प्रकारका पुरस्कार लिये निःस्वार्थ भावसे, प्रकाशित कर देना चाहा । उनको जब यह पता चला कि मैंने ही इसका अनुवाद स्वतः प्रकाशित करनेके लिए कराया था तब उन्होंने इसे मेरे ही यहाँसे प्रकाशित कराना उचित समझा और फलतः अपने श्रद्धास्पद गुरु बाबू मुरारीदासजीकी यह कृति लेकर मैं आप लोगोंके समक्ष उपस्थित हो सका हूँ । पाठकजीका मुझपर सदैव वात्सल्य-प्रेम रहा है, अस्तु इसके लिए उन्हें धन्यवाद देना उचित नहीं है । बाबू मुरारीदासजीके भ्राताओं के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट कर देना उचित समझता हूँ जिन्होंने जीवनीके सम्बन्धमें पूरा पूरा नोट दिया ।

बाबू मुरारीदासजीने, जैसा कि—मैं ऊपर कह आया हूँ, अनुवाद 'डिक्टेट' कर लिखाया था तथा उनको इसे दुबारा देख जानेका मौका नहीं मिला, इस कारण इसमें अनेक अशुद्धियाँ, भाषा एवं मुहाविरकी, रह गई हैं । मैंने भी आलस्यवश पहले तो इस ख्यालसे कि प्रूफ देखनेके समय अशुद्धियाँ ठीक कर दूँगा, इसका संशोधन छोड़ दिया और बादमें जब यह प्रेसमें जाने लगा तब एक आवश्यक कार्यसे बाहर चले जानेके कारण प्रूफ न देख सका । यह पुस्तक जिस रूपमें थी उसी रूपमें छप गई । अशुद्धियाँ ढेरको ढेर रह गईं । पाठकोंसे इसके लिए करबद्ध क्षमा-प्रार्थी हूँ । अगले संस्करणमें प्रेसमें जानेके पूर्व ही इन अशुद्धियोंको ठीक कर देनेका प्रयत्न करूँगा ।

काशी ।
रामनवमी, सं० १९९३

}

निवेदक—

मुकुन्ददास गुप्त 'प्रभाकर'

भूमिका

१—मूल-लेखिका-परिचय

‘हुगलीर इमामबाड़ा’ की सुलेखिका बंगभाषाकी एक परम विदुषी श्रीमती स्वर्णकुमारी देवी घोषाल विश्व-प्रसिद्ध कविवर श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुरकी बड़ी बहिन थी। स्वनाम धन्य महर्षि देवेन्द्र-नाथ ठाकुरकी आप पुत्री थीं और गृह पर ही इन्होंने संस्कृत तथा बंगलाकी शिक्षा पाई थी। इनका जन्म सन् १२६४ बं० (सन् १८५७ ई०) के भाद्रपद मासमें हुआ था। पिताके ऋषि-तुल्य चरित्रका इनपर भी बहुत असर पड़ा था। ग्यारह वर्षकी अवस्था में श्रीजानकीनाथ घोषालसे आपका विवाह हुआ और पति ही से इन्होंने अंग्रेजी भाषाका अच्छा अध्ययन किया था। पतिकी योग्यता तथा उनके उत्साह-प्रदानसे इनकी प्रतिभा विकसित हो उठी। १८ वर्षकी अवस्थामें इनका प्रथम उपन्यास दीपनिर्वाण रचित हुआ, जिसके हिन्दीमें स्यात् दो अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। यह उपन्यास बंगभाषामें स्त्री रचित उपन्यासोंमें सर्व प्रथम है और इतना उत्तम हुआ है कि उस समय लोग इसे स्त्री रचित माननेमें आनाकानी कर रहे थे, पर जब क्रमशः इनके एक पर एक उपन्यास निकलने लगे तब लोगोंकी शंका मिटी। इन्होंने केवल उपन्यास ही नहीं, नाटक, गीत नाट्य, विज्ञान आदि कई विषयों पर कई पुस्तकें लिखीं। बालोपयोगी भी कई पुस्तकें लिखीं।

भारती नामक पत्रिकाके संपादनका भार सन् १२९१ बं० में इन्होंने लिया और उसे सन् १३०१ ई० तक बड़ी योग्यतासे संभाला था। इसके अनंतर भी अपने दो कन्याओं हिरण्मयी देवी तथा सरला देवी चौधरानी बी० ए० को इसका भार सौंपा था। कुछ वर्ष बाद जब ये अपने पति गृह पंजाब चली गईं तब फिरसे इन्होंने उस पत्रको संभाला पर अंतमें अवस्था अधिक होने पर इसे दूसरेको दे दिया।

साहित्य सेवाके सिवा देशहितकर कार्य भी इन्होंने किये थे। सन् १२९३ बँगलामें इन्होंने 'सखी समिति' स्थापित किया था जिसका उद्देश्य था कि उच्चकुलकी महिलाओंका सम्मिलन हो तथा सखी भाव बढ़े। साथ ही बालिकाओंकी शिक्षामें माता पिताकी सहायता कर उसका प्रचार करना भी ध्येय था। असहाय विधवाओं के सहायतार्थ एक विधवाश्रम भी स्थापित किया था पर अर्थाभावके कारण वह अधिक दिनों तक नहीं चल सका। शिल्पकलाकी उन्नतिके लिये इन्होंने एक 'महिला शिल्प मेला' का प्रतिष्ठापन किया था जिसमें केवल महिलाओंकी बनाई हुई वस्तु प्रदर्शितकी जाती थीं तथा परितोषिक भी दिया जाता था। इसका लाभ सखी समितिको जाता था।

स्थणु कुमारीदेवी प्रथम विदुषी महिला थीं जो प्रतिनिधि होकर—स्यात् छठे कलकत्ता कांग्रेसमें सम्मिलित हुई थीं। यह बंगीय साहित्य परिषद्की बारह-तेरह वर्ष पहले सभानेत्री हुई थीं। पाँच छ वर्ष हुए कि इनका देहावसान होगया।

२—अनुवादक-परिचय

स्वर्गीय मुरारीदासजी अग्रवाल वैश्य थे तथा आपका काशीमें सं० १९४२ वि० के आषाढ़ कृष्ण ९ सोमवारको जन्म हुआ था । आपके पिताका नाम बा० गोपालदास था तथा आपके तीन बड़े भाई अभी तक वर्तमान हैं । गृह पर ही कुछ अक्षराभ्यास करनेके अनन्तर यह अग्रवाल महाजनी पाठशालामें भर्ती हुए और वहाँकी शिक्षा सम्मानके साथ पूर्णकी । इन्हें पारितोषिक भी मिले । इनके अक्षर बहुत सुन्दर होते थे । यह उसी समय अग्रवाल स्पोर्ट्स क्लबके सभासद हो गए और इनके लेख उक्त संस्थाकी हस्तलिखित पत्रिकामें निकलते थे । यह इस पाठशालाकी छात्रावस्था हीसे सेवा तथा उन्नयन कार्यमें तत्पर रहते थे । इस कारण उक्त संस्थाके प्रधानाध्यापकका पद रिक्त होने पर पाठशालेके संचालकोंने इन्हीं को उस पर नियुक्त किया और तबसे अंत तक वह उस कार्यको संलग्नता तथा तत्परतासे करते रहे । इन्होंने इस पाठशालाकी कहाँ तक उन्नतिकी है यह बात हर एक काशी-वासी जानता है । इन्हींके सतत् उद्योग तथा प्रयत्नका फल था कि अब पाठशालाका भवन निजका हो गया है और कई सौ विद्यार्थी उसमें शिक्षा प्राप्त करते हैं । श्रीअग्रवाल महाजनी पाठशालाकी भी उन्नतिमें यह प्रधान सहायक रहे ।

यह उपरोक्त कार्यसे जन साधारणमें भी प्रिय हो रहे थे ।

सन् १९३१ ई० में इन्हें चौक वार्डकी जनताने अपना प्रतिनिधि चुनकर म्युनिस्पल बोर्डमें भेजा और वहाँ रहकर इन्होंने योग्यता पूर्वक नगरकी अच्छी सेवा की। काशी सेवा समितिके भी सदस्य होकर इन्होंने उस संस्थाकी अच्छी सेवाकी थी। ये नागरी प्रचारिणी सभा, अग्रवाल पंचायत हिन्दू महासभा आदिके भी सदस्य रहे। इन्होंने घर ही पर बंगला तथा उर्दूका अंग्रेजीके साथ अच्छा अध्ययन किया था और मातृ भाषाकी सेवाकी इच्छासे बंगलासे कई पुस्तकोंका अनुवाद किया है जिस कार्यमें यह सफल हुए।

सं० १९८९ वि० के भाद्रपद कृष्ण ३ गुरुवारके दिन केवल ४८ वर्षकी अवस्थामें इनका देहावसान हुआ। यह अत्यंत उदार हृदय, नम्र तथा संकोचशील पुरुष थे। गुप्त रूपसे छात्रोंकी सहायता करना इनका एक विशिष्ट गुण था। कई पुस्तकें अनूदित कर इन्होंने एक सज्जनको सहायतार्थ दे दिया था कि वे उसका पुरस्कार अपने उपयोगमें लावें। इनकी मृत्युसे, इनके मित्रों, कुटुम्ब वालों, तथा संबंधियोंके शोकके साथ जनताने भी शोक मनाया था। ऐसे सज्जनोंकी हर एक समाज, संस्थाको आवश्यकता रहती है पर ऐसे लोग इने गिने मिलते हैं।

इस रचनाके सिवा इन्होंने उनतीसवीं शताब्दिका महाभारत (विनय कुमार सरकार कृत) राजारानी तथा विसर्जन नाटक, और सीताराम, रजनी तथा कृष्णकांतका बिल तीन उपन्यास अनूदित किए थे।

३—पुस्तक-परिचय

सरस्वती नदीके भट जानेसे बंगालके शाही बन्दर चटगाँवकी अवनति पर पुर्तगीजोंने सन् १५३७ ई० में हुगली नामक नगर बसाया और गोला घाट पर एक दुर्ग भी बनवाया, जिसका अवशेष अब नदीके गर्भमें है। मुगलप्रांताध्यक्षोंको प्रसन्न न रखने तथा सन् १६२१ ई० में विद्रोही शाहजहाँके बंगाल आने और पुर्तगीजोंसे सहायता माँगनेपर उसे सहायता देनेके बदले विद्रोही कह कर चिढ़ानेके कारण गद्दी पर बैठते ही उसने प्रांतिक शासकको उस पर आक्रमण करनेकी आज्ञा देदी। साढ़े तीन महीनेके घेरे पर एक सहस्र सिपाहियोंके मारे जाने पर दुर्ग टूटा और चार सहस्र लड़के बच्चे कैदी होकर राजधानी भेजे गए। इस विजयके अनन्तर चटगाँवसे बादशाही कार्यालय आदि सब हुगली भेज दिए गए।

शाहजहाँकी पुत्री जहाँआराको आरोग्य करनेके कारण डा० वाड्डन द्वारा प्राप्त फर्मान के अनुसार सन् १६४० ई० में यहाँ अङ्गरेजोंकी फैक्टरी खुली। कुछ झगड़ा होने पर सन् १६८८ ई० में युद्ध हुआ और अन्तमें अङ्गरेज अपनी कोठी फूँककर लौट गए। पर मुगलों द्वारा पुनः बुलाए जाने पर अङ्गरेजोंने सूतानाटीमें वर्तमान कलकत्ताकी नींव डाली। तब से अब तक हुगली प्रायः उसी दशामें स्थित है और अब चिसुरा बस्तीसे मिला हुआ है। हुगलीकी मुख्य इमारत एक इमामबाड़ा एक शीया मुसलमान

मिजा मुहम्मद मुहसीन द्वारा प्रदत्त धनसे बना हुआ है। इसी इमामबाड़ाको लेकर इस उपन्यासकी रचना हुई है।

मुसलमान धर्मके प्रवर्तक मुहम्मद साहब के बाद जो उस धर्म के पेशवा या प्रधान हुए थे वेही इमाम कहलाते हैं। इनकी संख्यामें कुछ मतभेद होनेके कारण मुसलमानोंके दो प्रधान दल सुन्नी और शीया हो गए हैं। “बारः” फारसी भाषामें दुर्ग या दुर्गकी दीवारके अर्थमें आता है अतः इमामबाड़ासे तात्पर्य इमामोंके स्मारकमें बनी हुई इमारतसे है। लेखिकाने बाराका स्यात् न तात्पर्य समझकर और इमामबाड़ाको मकानसा देखकर बँगला शब्द बाड़ी, जो मकान के अर्थमें आता है मिलाकर “इमामबाड़ी” रख दिया था।

यह उपन्यास सन् १२९३ बं० की वैशाख मासकी भारतीकी संख्यामें समाप्त हुआ है इसलिए इसका रचनाकाल यही माना जायगा। इस उपन्यासके प्रधान कुल पाँच पात्र हैं, जिनमें सबका चरित्र चित्रण अच्छी प्रकार हुआ है। इसकी घटनावली भी इमाम-बाड़ाके बनानेवालेकी जीवनीसे ली गई है। इसका अनुवाद भी अच्छा हुआ है पर प्रूफ संशोधनमें बहुत ढिलाई हुई है। तब भी यह उपन्यास पठनीय है और मनोरञ्जनके साथ पाठकके हृदय कुछ विचारणीय बातोंसे प्रभावान्वित भी होते हैं। आशा है कि उपन्यास-पाठकगण इसे अपनाकर स्वर्गीय अनुवादकके परिश्रम को सार्थक करेंगे।

हुगलीका इमामबाड़ा



पहला परिच्छेद

संन्यासी

अठारहवीं शताब्दीकी बात है—हुगली शहरमें कहींसे एक संन्यासी आ गये हैं। लोगोंका ऐसा विश्वास है कि ये बड़ेही सिद्ध हैं, इनकी कृपासे अन्धे आँख पाते हैं लँगड़े-लूले अच्छे होते हैं और इनके आशीर्वादसे रोग दुख दूर भाग जाते हैं। लोगोंने इन बातोंको कैसे जाना यह तो नहीं कहा जा सकता क्योंकि किसीने किसी अन्धे, लूले-लँगड़ेको अपनी आँखोंसे अच्छे होते नहीं देखा है। परन्तु चारो ओर इनके करामात की अफवाह उड़ रही है। हिन्दू इनको अपना महाप्रभु समझकर प्रणाम करते हैं और मुसलमान लोग

इनको पीर मानकर पूजा करते हैं। इनके निकट हिन्दू और मुसलमान एक हो गए हैं। संन्यासीको आये अभी थोड़ेही दिन हुए हैं। तो भी चार दिनोंसे गंगा तट पर बड़ी भीड़ जमा हो रही है। गरीब दुखियोंके अतिरिक्त बड़े-बड़े धनवान और भाग्यवान लोग भी उनके दर्शनके लिए लालायित हैं। उनका दर्शन करनेके लिये सबेरेसे शाम तक कतारके कतार लोग खड़े रहते हैं। इतनी भीड़ तो राज-दर्शनके लिए भी नहीं इकट्ठी होती। आज भी सबेरेसे ही गंगा किनारेके मार्गमें भीड़ समाती नहीं, टिड्डी दलकी तरह भुगड़ के-भुगड़ लोग संन्यासीका दर्शन करनेके लिये चलें जा रहे हैं। उसी समय उस भीड़को चीरते हुए एक पालकीको—जिस पर ओहार पड़ा था, सुसज्जित वेष भूषा-धारी कहार बड़े घमण्डसे लिये चले जा रहे थे। उनके साथ आठ पहरेदार भी बड़े घमण्डसे आस पासके लोगोंको बेंतसे मारते और हटाते हुए चले जा रहे थे। इतना करनेकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी, पालकीके पास आतंही, राहगीर आप ही-राह छाड़ देते थे। तिसपर भी सबकी रिहाई नहीं होती थी। दुर्भाग्यवश इसी समय एक बुढ़िया ने आकर पालकीके सामनेसे रास्ता पार करनेकी चेष्टा की। वह संन्यासीका दर्शन करने जा रही थी। घूमकर जानेसे देर होगी; यह सोचकर वह पालकीके ही पाससे दौड़कर जाने लगी। एक पहरेदारने बड़े क्रोधसे बुढ़ियाका हाथ पकड़कर वहाँसे हटा दिया। परन्तु बुढ़ियाने फिर वहीं आकर बड़े कातर स्वरमें रोकर कहा, “बच्चा तू मुझे छोड़ दे, मेरा लड़का मर रहा है, संन्यासीकी

चरण रज लेने जा रही हूँ, मुझे छोड़ दे ।” दुर्बल बुढ़िया उस बलवान पहरेदारके पराक्रमको पराजित करके उसी मार्गसे जानेके लिए प्राणपणसे चेष्टा करने लगी । बुढ़ियाका इस प्रकारका अस्वीम साहस देखकर और सब लोग चुपचाप खड़े होगये । देखते-देखते एक अबलाको पराजित करनेके लिए आठ पहरेदार टूट पड़े । परन्तु उसी समय एक युवकने आकर बुढ़ियाको सम्हाल लिया और सामनेके पहरेदारको एक लात जमाकर ढकेल दिया । उसने गर्जकर कहा—रे कापुरुषों ! एक वृद्ध स्त्रीको ही मारनेमें क्या तुम अपनी वीरता समझते हो ? यह कहकर उसने बुढ़ियासे कहा—आओ मा, आओ, मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँ ।

युवककी तेजस्वी वीर मूर्ति देखकर पहरेदार लोग स्तम्भित हो गये । उसके आँखोंसे ऐसा तेज निकल रहा था कि मानो उससे सहस्रों पहरेदार भस्म हो जायँगे, उसके बाहुओंमें इतना बल था कि हजारों तलवार मानों विफल हो जायँगी । पहरेदारोंका तर्जन-गर्जन क्षण भरमे शान्त होगया, सिंहके निकट भेंड़की तरह वे चुपचाप खड़े ही रह गये । युवक बुढ़ियाका हाथ पकड़कर सहजमें ही वहाँ से चला गया । दर्शकगण चकित होकर आपसमें कहने लगे, “इसका साहस सराहनीय है, नवाब खाँजहाँके आदमियोंको इसने हरा दिया ! ” युवक बुढ़ियाको लेकर जाने लगा, यह देखकर एक लूलेने कहा—भाई, मेरी लाठी एक दुष्ट लड़केने छीन ली है, जरा मेरा हाथ पकड़ लो । मैं भी साँई बाबाका दर्शन करने जाऊँगा ।

एक अन्येने इन बातोंको सुनकर कहा—तुम कौन हो भाई,

जय हो, अन्धे ब्राह्मणका भी हाथ जरा पकड़ लो, कितने कष्टसे मैं यहाँ तक आया हूँ पर अब पहुँच न सकूँगा। एक छोटा लड़का अन्धेका हाथ पकड़कर उसे लिये जा रहा था, परन्तु बुढ़ियाके साथ पहरेदारोंका झगड़ा आरम्भ होते ही वह उसको छोड़कर भाग गया। युवकने उनके पास आकर लूलेसे अपना कन्धा पकड़नेके लिये कहा। वह एक हाथसे बुढ़ियाको और दूसरेसे अन्धेका हाथ पकड़कर उन तीनोंको लिये हुए संन्यासीके पास पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने एक अपूर्व दृश्य देखा। एक देवताकी तरह कांतिवाला पुरुष रत्न, गङ्गा-तट पर एक पेंड़के नीचे पद्मासन लगाकर बैठे थे। इनका वेष-भूषा साधारण संन्यासीकी तरह नहीं था। इनका वेष देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह हिन्दू है या मुसलमान। परन्तु युवकने उन्हें अपना स्वजाती ही समझा। साधारण संन्यासीकी तरह इनकी देह नंगी नहीं थी, एक ढीला वस्त्र गलेसे पैर तक पहरे थे। कण्ठमें रुद्राक्ष या स्फटिककी माला इत्यादि कुछ नहीं था, मुख-मंडल भस्म अथवा चन्दनसे पुता नहीं था, परन्तु पीठपर जटा और हृदय तक दाढ़ी लटक रही थी और उनके मुख-मंडलसे एक असाधारण ज्योति निकल रही थी। न जानें कितने अनाथ दीन दुखी रोग शोक, पाप और तापसे व्याकुल मनुष्य उनके चरणोंपर आकर गिर रहे थे। वह किसीको औषधि दे रहे थे, और किसीको अपने पवित्र हाथोंसे छूकर शांति प्रदान कर रहे थे परन्तु जिसका रोग शोक मिटानेकी सामर्थ्य उनमें नहीं थी उसको भी ऐसे स्नेह युक्त वाक्योंसे ईश्वरपर विश्वास

करनेका उपदेश दे रहे थे जिससे वह भी अपने हृदयमें शांति अनुभव कर रहा था। इसी प्रकार न जाने कितने निराश हृदयोंमें वे आशाका संचार कर रहे थे, न जाने कितने रोगी, पापी, तथा दीन दुखियोंका उदास मुख प्रफुल्लित कर रहे थे, युवकने ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था। सैकड़ों लोगोंको सुख पहुँचनेसे उस समय उसका हृदय प्रफुल्लित हो उठा, वह मुग्ध होकर वहीं खड़ा रह गया और भक्तियुक्त हृदयसे संन्यासीके शांत, गम्भीर देव-कांति-युक्त मुखकी ओर एक टक देखने लगा।

धीरे-धीरे समय अधिक हुआ, दोपहर होने लगी, संन्यासीके ध्यान करनेका समय हो गया। वह अब घर जायेंगे, भीड़ भी कुछ कम होने लगी, जो लोग बहुत देरसे आये थे वे चले गये, नये आये हुए लोग आशामें ठहर गये। संन्यासी खड़े हो गये, संन्यासीकी नजर युवक पर पड़ी, युवक मुग्ध हो गया। संन्यासीने युवकके पास आकर धीरे-धीरे कहा—वत्स ! मेरे साथ आओ। वह स्वर जिसे सुनाई पड़ा उसके कानोंमें मानो शांति भर गयी। संन्यासी आगे बढ़े; युवकभी उनके साथ-साथ चलकर गङ्गा तीरके एक टूटे मकानमें पहुँचा। तब युवककी ओर फिर कर संन्यासीने जरा हँसकर कहा—संसारमें वही वीर है जो दुर्बलोंकी रक्षा करता है, वही सच्चा मनुष्य है जो असहायोंकी सहायता करता है, और वही महात्मा है जो अत्याचारका निवारण करता है। आओ, मैं तुम्हारा आर्लिगन करूँ, आजसे तुम मेरे शिष्य हुये।

संन्यासीने युवकका स्नेहसे आर्लिगन किया। वह स्पर्श कैसा

पवित्र और कैसा शुभ जनक था ! संन्यासीके आलिंगन करते ही युवकका मोह मानो दूर हो गया, अन्तर्दृष्टि खुल गयी । मनमें एक प्रकारकी दिव्य-स्मृति जाग उठी । उसे ऐसा जान पड़ा मानो इस महापुरुषकी पवित्र मूर्ति ही उसने आज तक देखा है । उसे ऐसा जान पड़ा कि मानो निःशब्द गंभीर रात्रिमें जब दुःख और तापसे उसे चारो ओर सूना दिखाई पड़ता था तब-तब यह महापुरुष अपने अमृतमय वचनोंसे उसे ढाढ़स देते थे । कईवार जब अज्ञानके कारण अशांतिकी तरंगमे वह बह रहा था तब मानों इस देव मूर्ति ने आकर उसका हाथ पकड़कर तीरपर खींच लिया है । जाग्रत अवस्थामें स्वप्नावस्थामें और दुःखमें मानों इसी मूर्तिने कईवार उसे दर्शन देकर उसका दुःख दूर किया है । युवकने पुलकित होकर उन्हें अभिवादन किया । तब संन्यासीने उसे बैठनेकी अनुमति दी और आप भो एक व्याघ्र चर्मपर बैठ गये । बैठनेपर उन्होंने युवकसे कहा—वत्स ! हम लोग स्वयं अपना शिष्य चुन लिया करते हैं, यदि कोई योग्य होता है तो उसे गुरु पानेके लिये कष्ट नहीं उठाना पड़ता । गुरुका मुख्य काम शिष्यको शिक्षा देना ही है, और शिष्यका मुख्य काम शिक्षाका विषय चुन लेना है । किस शास्त्रमें प्रवेश करनेकी तुम्हारी इच्छा है ? किस विद्यामें पंडित होनेकी तुम्हें आकांक्षा है ?

युवकने फिर प्रणाम करके विनीत बचनसे कहा—प्रभो ! यदि आपने आज्ञा दी है तो मैं अपनी इच्छा प्रकट करूँगा—शास्त्र जानने की मेरी इच्छा अवश्य है, परन्तु आज मैंने आपकी जो विद्याका

प्रभाव देखा है उसके निकट शास्त्र ज्ञान अत्यन्त तुच्छ है। प्रभो, सबसे पहले मुझे वही शिक्षा देकर मेरी आकांक्षा पूर्ण करें।

संन्यासीने मुस्कराकर कहा—वत्स ! तुमने ठीक कहा, पढ़कर शास्त्र-ज्ञान प्राप्त करनेकी तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं। वह ज्ञान तो तुम्हें स्वयं प्राप्त हो चुका है। जिसके हृदयमें हिन्दू-मुसलमानका भेद नहीं है, जिसे अपने और पराये धर्ममें भेद भाव नहीं है, जो अपने और पराये दोनोंको समान दृष्टिसे देखता है, वह मनुष्य तो सब शास्त्रोंसे अतीत है। वेद और कुरान उसे और अधिक शिक्षा क्या दे सकती है, इसलिए मैं भी तुम्हें अधिक क्या सिखा सकता हूँ ? अच्छा तब क्या तुम सुख शांति प्राप्त करनेकी विद्या प्राप्त करना चाहते हो ? क्योंकि वह शास्त्रके परे है, पंडित होनेसे ही किसानको सुख शांति नहीं मिलती, सुख शांति प्राप्त करनेके लिये दूसरी ही साधना करनी पड़ती है।

संन्यासीके इस प्रशंसाको सुनकर युवक लज्जित हो गया। उसने समझा कि इस परीक्षामें उसे उत्तीर्ण होना होगा। उसने धीरे धीरे कहा—नहीं प्रभु ! मैं अपने लिये सुख शांति प्राप्त करनेकी विद्या नहीं चाहता, अधिक मैं क्या कहूँ ?

संन्यासी—मैं जानता हूँ, उसके लिये साधना करना भी तुम्हारे लिये अनावश्यक है। धर्म ही सब सुखोंका मूल है, पुण्य ही सब शांतिका आधार है, और ईश्वरमें विश्वास ही धर्म और पुण्यकी जड़ है। तुम्हारे हृदयमें तो सुख और शांति स्वयं विराज रही है। अच्छा, तब क्या तुम प्रकृतिको वशमें किया चाहते हो ? क्या

प्रकृतिको जीत करके देव-तुल्य अलौकिक शक्ति प्राप्त करना चाहते हो ?

युवकने सिर नीचा करके कहा—नहीं गुरुवर ! आप जानते हैं कि मैं यह नहीं चाहता ।

संन्यासी—मैं जानता अवश्य हूँ, सत्य ही जिसका व्रत है, दीनोंपर जिसे दया है, काम-क्रोध जिसके बशमें हैं, उसने तो तीनों लोकको जीत लिया है—उसके लिये प्रकृतिको जीतना अति सामान्य बात है । तब बताओ वत्स ! तुम क्या सीखना चाहते हो ?

युवकने समझा परीक्षा समाप्त हो गयी, उसने साहस करके कहा—जिस विद्याके अद्भुत प्रभावसे आज आपने दीन दुखियोंका आँसू पोंछकर सबको मुग्ध कर दिया है, दूसरेको सुखी करनेका वही विद्या कृपा करके मुझे दीजिये । बहुत दिनोंसे मेरे हृदयमें यही इच्छा और यही आकांक्षा बनी है । दूसरेका दुःख देखकर जब मैं उधे उस दुःखसे छुड़ानेका यत्न करता हूँ तब मैं उसमें सफल क्यों नहीं होता ? मैं और कुछ नहीं चाहता, मुझे आप यही विद्या दान कीजिये । पुलकित संन्यासी खड़े हो गये और युवकको एक बार और आलिंगन करके उन्होंने कहा—मैंने तुम्हें जैसा महत् चरित्र समझा था तुम उससे भी अधिक महत् हो । परन्तु वत्स ! जो विद्या तुम प्राप्त करना चाहते हो, उसका ज्ञान मुझे बहुत ही कम है । संसारका कुछ भी दुःख दूर करनेमें मैं समर्थ नहीं हो सका हूँ । बड़े-बड़े ऋषि-मुनि जिस काममें अब तक सफलता प्राप्त नहीं कर सके, उसे भला मैं तुच्छ जीव कैसे प्राप्त कर सकता हूँ ।

महम्मद सहसा मानो निरुत्तर हो गया, क्षण भरके बाद गद्गद

स्वरमें कहा—परंतु-परंतु, तब आज मैंने यह क्या देखा है। संसार का दुःख दूर हो सकता है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, परन्तु आप जहाँ बैठे थे वहाँका दुःख लोप होते तो मैंने प्रत्यक्ष देखा है।

संन्यासीने हँसकर कहा—नहीं वत्स ! दुःख लोप करनेकी अर्थात् पूर्ण सुख प्रदान करनेकी सामर्थ्य मुझे बिलकुल नहीं है। तुमने जो देखा है वह केवल दुःखका क्षणिक विराम है। सच पूछो तो इस सृष्टिसे दुःख लोप करना एक प्रकारसे असम्भव है। यह यदि सम्भव होता तो बुद्ध देवका दिखाया हुआ मार्ग मनुष्योंके लिये दुःस्साध्य न होता। क्योंकि, जन्म लोप न होनेसे संसारमें दुःख लोपकी सम्भावना नहीं है और उसका एक मात्र सहज और निश्चित उपाय ब्रह्ममें लीन हो जाना ही है।

यह सब बातें महम्मदके मस्तिष्कमें प्रवेश न कर सकीं। ब्रह्मचर्य, जन्म लोप इत्यादि हिन्दू शास्त्रोंकी बातें उसके कानोंमें बिलकुल नई सी जान पड़ती थीं। वह बालककी तरह चकित दृष्टिसे चुपचाप संन्यासीकी ओर देखता रहा।

संन्यासी कहने लगे परन्तु लोपके उद्देश्यसे संसारकी रचना नहीं हुई है, इसका उद्देश्य कर्मोन्नति है। इसीलिये वह सहज और करने लायक उपाय भी जीवोंके लिये दुःस्साध्य है, इसीलिये जीवन स्पृहा और भोगाकांक्षा, जीव जगतमें कितनी प्रबल है। इसी लिये जहाँ आकांक्षा और स्पृहा है वहीं द्वन्द और संग्राम है, और साथ-ही-साथ जय-पराजय, सुख और दुःख भी भोगना अवश्य-म्भावी है। इसीलिये सृष्टि-रक्षाके लिये उसकी उन्नति साधनके

उद्देश्यसे ही प्रकृति-देवने आकांक्षा और वासनाका लोभ फैला रखा है। उसके निवारण करनेकी मुझे क्या सामर्थ्य है ? तब मैं तुम्हें सुख-दान करनेकी विद्या कैसे सिखा सकता हूँ ?

महम्मद निराश हृदयसे चुपचाप बैठा रहा, संन्यासी कहने लगे—तथापि तुम निराश न हो। हम संसारका दुःख लोप नहीं कर सकते परन्तु दुःख कम करनेकी क्षमता हम लोगमें है। मनुष्य केवल स्वार्थ और स्पृहासे ही नहीं चलता कोई चाहे कितना निष्ठुर और पामर क्यों न हो उसके हृदयमें भी प्रेम और करुणाका कुछ अंश अवश्य ही रहता है। जिसके हृदयका प्रेम विश्वव्यापी है वही महा प्रेमिक है, और उसमें ही दुःख निर्वाणकी क्षमता सबसे अधिक है। तुम्हारे हृदयमें भी प्रेम और करुणा भरी है। इसलिये तुम्हारी साधना निश्फल न होगी। आजसे तुम जातीय और विजातीय, योग्य और अयोग्यका विचार छोड़कर प्रेम और करुणा-वितरणका अभ्यास करना प्रारम्भ करो, जब अभ्यास करते-करते स्वार्थकी मलीनता दूर हो जायगी तब यह प्रेम आपसे आप स्रातकी तरह निकलने लगेगा, उस समय दीन-दुःखी पापी और तापके दुःख दूर करनेका असाधारण क्षमता तुम्हें प्राप्त हागी। इसलिये वत्स ! निराश न हो, साधना करो, इस साधनमें मैं तुम्हारा सहायक हाऊँगा।

युवकने समझा, संन्यासीने उसे शिष्यरूपसे ग्रहण कर लिया, उसकी प्रार्थना स्वीकार हुई। आनन्दसे उसका हृदय भर गया। उसने पहले इतने आनन्दका अनुभव कभी नहीं किया था। काँपते हुए आवाजसे उसने कहा—फिर कब मैं आऊँ।

संन्यासीने उसके मनका अभिप्राय समझकर तनिक हँसकर कहा—अब तुम्हें आना न होगा, यदि आवश्यकता होगी तो तुम मुझे देख सकागे । यह कहकर अत्यन्त करुणा और प्रेमकी छिहसे देखते हुए उन्होंने युवकको आशीर्वाद दिया । युवकके देहमें बलका संचार हा आया, उसका हृदय तेजसे परिपूर्ण हो गया । भक्ति-भाव से प्रणाम करके वह वहाँसे चला गया । दूसरे दिन संन्यासीको फिर वहाँ किसीने नहीं देखा ।

दूसरा परिच्छेद

चित्र

जिस दिनकी बात कही जा रही है, उस दिन दोपहरके बाद नावसे हुगली शहरकी ओर आँख उठाकर देखनेसे एक बिलकुल ही नया दृश्य दिखाई पड़ता है। आजकलकी तरह श्रेणीबद्ध सिपाहियोंकी तरह सफेद मकानोंकी पंक्ति एकके बाद एक गंगाके किनारे शोभा नहीं देती, मकानोंके आस-पास वृक्षोंकी कतार नहीं दिखाई पड़ती। कहीं बड़े और छोटे वृक्षोंके झुण्ड परस्पर एक दूसरेको गाढ़ आलिङ्गन करते हुए नदीके किनारे झुक गये हैं। इन वृक्षोंके झुण्डके बाद कुछ दूर तक कोई वृक्ष दिखाई नहीं पड़ता। वहाँ कतारकी कतार टेढ़ी-मेढ़ी तरह-तरहकी छोटी-बड़ी पत्तोंकी झोपड़ियाँ दिखाई पड़ती हैं। उसीके पास कहीं कहीं बड़े बड़े पीपलके पेड़ोंके पत्तोंके बीचसे पुर्तगीजवालोंके बनाये हुए किलोंका टूटा हुआ हिस्सा और गोल-

न्याजोंकी एक पुरानी अट्टालिकायोंकी श्रेणी अत्यन्त दीन भावसे माना भाँक रही हैं। कहीं-कहीं उद्यानयुक्त विचित्र और वृहत् अट्टालिकाएँ चारों ओरके छोटी-छोटी झोपड़ियोंकी अवज्ञा करती हुई और आस पासके बड़े-बड़े वृक्षोंकी ओर अनादरकी दृष्टिसे देखती हुई गर्वसे अपना सर उठाये खड़ी हैं। ऐसी ही एक विशाल अट्टालिकाके झरोखेमें एक छोटा सुन्दर मुख-कमल खिला है। युवती झरोखेमें बैठी हुई कसीदा काढ़ रही थी। काम करते-करते उसकी कोमल अँगुलियाँ थक गयीं, मुका हुआ मृणालकी तरह कंठ शायद व्यथित हो गया, इसलिए वह काम छोड़कर आकाशकी ओर देखने लगी। आकाशमें बादलके टुकड़े एक-पर-एक बहुत दूर तक फैले हुये थे, उनमेंसे कभी कोई टुकड़ा हट जाते थे और कभी एक दूसरेके पास आकर उसे आलिंगन करते थे। देखते ही देखते बादलों के टुकड़े अलग होकर हवासे उड़ गये। युवतीके हृदयमें भी इसी प्रकार नाना प्रकारकी चिन्ताएँ आ-आकर बादलोंकी तरह जमने लगीं। उसी समय धीरेसे आकर उसकी आँखें अपने हाथोंसे किसीने बन्दकर दिया। मुन्ना चौंक उठी। एकबार न जाने कौन सी आशा से उसका प्राण काँप उठा; क्षण भरमें सम्मलकर युवतीने हँसकर कहा—मैं समझ गयी मसीन, हाथ हटाओ। मसीनने हाथ हटाकर मुन्नाके सामने एक चित्र रखकर कहा—बताओ, यह चित्र कैसा है ?

हम यहाँ चित्रके विषयमें कुछ बतला देना चाहते हैं। महम्मद मसीन, खंन्यासीके यहाँसे विदा होकर जब घर आरहा था, तब मार्गमें एक चित्र विक्रेताने उससे यह चित्र खरीदनेके लिये बड़ा

आग्रह किया, उसकी इच्छा चित्र खरीदनेकी न थी, परन्तु जब चित्रवालेने उसका मूल्य दो रुपये ही माँगा और उदास होकर कहा—महाशय, आज दिन भरमें एक चित्र भी मैं बेच नहीं सका, इस समय यदि मैं कुछ न पाऊँगा, तो बाल-बच्चोंको कुछ खिला न सकूँगा। तब मसीनने बिना कुछ कहे ही दो रुपयेके बदले दस रुपये देकर चित्र ले लिया। चित्र विक्रेता चकित हो गया।

भाईके हाथसे चित्र अपने हाथमें लेकर मुन्नाने उसकी ओर देखा। नामसे ही पाठक समझ गये होंगे कि ये हिन्दू नहीं है। महम्मद मसीन और मुन्ना ये दोनों भाई-बहन हैं, पर सगे नहीं। मुन्ना की माताका दो विवाह हुआ था। पहले पतिसे मसीनका जन्म हुआ। उसके बाद जब वह विधवा होगयीं तब उस संतानको लेकर उन्होंने अपना दूसरा विवाह किया। इसी दूसरे पतिसे मुन्ना का जन्म हुआ। मसीन और मुन्ना बराबर एकही घरमें रहते थे, इन दोनोंमें चार वर्षकी छोटाई-बड़ाई है। इसलिये इनमें बड़े-पनका अन्तर नहीं है; बराबरीका ही दोनों में बर्ताव है। मसीन इस समय छब्बीस वर्षका युवक है। उसका ललाट उन्नत, आँखें बड़ी बड़ी और उदारताकी ज्योतिसे परिपूर्ण हैं। उसके मुखकी कांति तेजसे परिपूर्ण है और गोरे मुख पर मूछ और दाढ़ीका बाल भी बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है, उसका विशाल वक्षस्थल और सुगठित बलिष्ठ देह ऐसी जान पड़ती है मानों वह सैकड़ों दुर्बलोंका आश्रय-निकेतन है। अपने स्नेह और अनुरागकी छायासे वह मुन्नाकी बड़े यत्नसे रक्षा करना चाहता है।

चित्र देखनेके बाद मुन्नाने जरा हँसकर मसीनसे कहा—ऐसा अच्छा चित्र तुमने कहाँ पाया ? किसने दिया ?

मसीन—क्यों ? देगा कौन ? यों ही क्या कोई चीज नहीं पायी जाती ?

मुन्ना—ऐसी अच्छी चीज योंही पायी जाती है यह तो मैं नहीं जानती थी ।

मसीन—क्यों, अच्छी चीजकी कदर कहाँ है ? अब तक तो मैंने नहीं देखा है ।

मुन्ना—तब शायद अबतक कोई जौहरी पैदा न हुआ होगा, इसीसे जवाहिरातकी इतनी बेकदरी है ।

मसीन—बहन, तू इसकी कदर करदे, मैं इसे बेचने आया हूँ, तू इसकी अच्छी कीमत लगा दे ।

मुन्नाने हँसकर कहा—तुम्हारे लिये तो अच्छी चीजों की कीमत नहीं है क्योंकि तुम तो उन्हें योंही पा जाते हो, फिर दूसरेसे अच्छी कीमत क्यों चाहते हो । यह तो अच्छा मज्जा है !

मसीन—तूने समझा नहीं, यही तो चतुर लोगों का काम है ।

मुन्नाने सिर हिलाकर कहा—तुम्हीं तो एक चतुर हो, और दुनियाँ भर मानों गवाँर है ?

मसीन—दुनियाँमें तो आधी औरतें हैं । इसीसे तो मैं तेरे पास चित्र बेचने आया हूँ । बता कितना देगी ? यह कहकर मसीन तनिक हँसा । इस हँसनेमें उसके ललाटपर कुछ सरल विद्रूप मय भावकी रेखा पड़ गयी । मुन्नाने कहा—मुझे कौनसी गरज पड़ी है

कि जिसे तुम मुफ्तमें पा गये हो उसे मैं कीमत देकर खरीदूँ ! मैं इसके लिये एक कौड़ी भी न दूँगी ।

मसीनने सिर हिलाकर कहा—तुमने तो इसके लिये एक कौड़ी भी न दो परन्तु इसी बीचमें इसका एक हजार रुपया दाम उठ चुका है ।

मुन्नाने हँसकर कहा—ऐसा गवाँर कौन है ?

मसीन—ऐसा गवाँर और कोई नहीं, मेरे लायक बहनोई सले-उद्दीन हैं ।

पतिका नाम सुनते ही मुन्नाका मन न जाने कैसा हो गया, उसके आँठोंसे हँसीकी रेखा मिट गयी । यह बात सुनकर मुन्नाको कष्ट होगा, मसीन यह न जानता था और इसीलिये उस कष्टको उड़ा देनेके अभिप्रायसे उसने पहले ही हँसीके तौरपर इस विषय को उठाया था । मुन्नाको उदास देखकर मसीन भी गम्भीर हो गया और उसने कहा—मैं हँसी नहीं करता, सचमुच हजार रुपये देकर सले-उद्दीनने इसी तरहका एक चित्र खरीदा है । इस प्रकार कै दिन चलेगा । सब धन तो चला जा रहा है, तब भी क्या तुम एक शब्द भी उनसे न कहोगी ।

आँखका आँसू रोककर मुन्नाने कहा—भाई ! जिसका धन है वही यदि उसको बचाना नहीं चाहता तो मैं क्या कर सकती हूँ ? मैं कौन हूँ ?

इस बातसे मसीनका सुन्दर मुख म्लान हो गया, उसकी आँखोंसे व्याकुलता प्रकट होने लगी । तनिक ठहरकर उसने मुखपर

बनावटी हँसी लाकर कहा—धन किसका है ? क्या धन तुम्हारा नहीं है ? तुम्हारे मुँहसे इन बातोंको सुनकर एक बालक भी बिना हँसे न रहेगा । सब स्त्रियाँ यदि तुम्हारी ही तरह होतीं तो इस संसारकी धारा ही उलट जाती ।

मुन्नाके पिताके ऐश्वर्यसे ही मुन्नाके पति धनी हैं, परंतु मुन्ना कभी इस भावसे उन्हें नहीं देखती थी । क्षणभरके लिये भी उसके मनमें यह विचार उत्पन्न नहीं हुआ कि यह धन उसका है उसके पतिका नहीं है । भाईकी बातें सुनकर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ । वह बहुत ही असन्तुष्ट हो गयी । मसीन भी यह समझ गया । बात सम्हालनेके लिये उसने कहा—परन्तु जिसका धन है वह यदि पागल होकर जो चाहे सो करे तो क्या उस पागलको कोई मना न करेगा ?

यह तो ठीक है, परन्तु मुन्ना यह बात अपने पतिसे कैसे कह सकती है ? मुन्नाने उनसे कितनी ही बार रोकर, उनसे शराब न पीने की विनती की है, परन्तु उससे कुछ भी फल न हुआ । उन्होंने क्या उसकी बातोंपर तनिक भी ध्यान दिया ? तब भला फिर मुन्ना कैसे उन्हें सलाह देने जायगी । गर्व और अभिमानसे वह चुप रहना चाहती है, यह बात नहीं है । जहाँ दुःखमें प्रेमकी आशा होती है, जहाँ अविश्वासमें विश्वास छिपा रहता है वहीं दुःखसे अभिमान और गर्व किया जा सकता है । किसी समय मुन्नाके लिये भी ऐसा ही दिन था, परन्तु वह समय अब नहीं है । सदासे यदि मुन्ना इसी प्रकार अनादर और कष्ट पतिके द्वारा पातो तो उसके लिये अच्छा होता परन्तु विवाहके कुछ दिन बाद तक उसे उसका पति बहुत प्यार

करता था। उसी प्रेमसे उसके सरल नवीन हृदयमें पूर्ण प्रेम जागृत होकर सदाके लिये स्थायी होगया। परन्तु चंचल बुद्धि सलाउद्दीनने विपुल ऐश्वर्यका स्वाद पाकर मुसाहब और यारोंसे घिरकर शराब पीना आरम्भ किया, और धीरे-धीरे अधोगतिकी ओर जाने लगा। उसने मुन्नाको एक प्रकारसे त्यागकर नरकका आश्रय ग्रहण किया। पहले कुछ दिन जब नशा छूट जाती थी तब उसे अनुपात होता था, मुन्नाके कष्टसे दुःखित होकर वह मन-ही-मन अपनेको सुधारनेका संकल्प करता था। कुछ दिन तक उसने यार दोस्तोंके साथ मुलाकात करना छोड़ दिया था और वह शराब छूता तक नहीं था। परन्तु अधिक दिनों तक वह अपनेको रोक न सका क्योंकि उसकी तरह दुर्बल हृदय मनुष्योंके लिये यह सम्भव भी नहीं है। उसने मुन्नासे छिपाकर दो-एक गिलास शराब पीना फिर आरम्भ किया, और सोचा कि अधिक न पीऊँगा। परन्तु दो-एक गिलास पीनेके बाद ही शराबकी मात्रा खूब तेजीसे बढ़ने लगी, उस समय मुन्नाका ध्यान उसे कहाँ ! यार दोस्तोंकी फिर बुलाहट होने लगी, या वह स्वयं उनमेंसे किसीके घर जाकर बैठता और उसी प्रकार तरह-तरह की बेशर्म बात होती थीं। इसी प्रकार होते-होते वह एक दम पिशाच और अधम हो गया। प्रेम और करुणा उसके हृदयसे अन्तर्धान हो गयीं, मुन्नाके दुःखसे अब उसको बिलकुल ही दुःख नहीं होता। मुन्नाके मनमें भी पतिका प्रेम प्राप्त करनेकी तनिक भी आशा नहीं है। उसका हृदय निराशासे भर गया है। वह अपने पतिसे कुछ कहा नहीं चाहती, उसका कारण गर्व या अभिमान नहीं है बल्कि

दुःख और कष्ट है। मुन्नाने उसके सामने दुःखसे आँसू बहाया है परन्तु उसने उसकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखा है। मुन्नाने कभी यदि आवेगसे व्याकुल होकर कोई बात कह दी है तो उसका वह कुछ उत्तर दिये बिना ही चला गया है। यदि कभी मुन्नाने अपनेको भूलकर रोगीके जीवनकी आशाकी तरह अपने पति का चरण पकड़ लिया है तो वह उस आश्रित लताको कुचलकर चला गया है। स्नेह और अनुग्रहकी दृष्टिसे उसकी ओर एक बार देखा तक नहीं। इसीसे जब मुन्नाका हृदय यातनाके तीव्र अनलमें भस्म होने लगता है तब वह अपने हृदयकी उस अग्निको गम्भीर गात्रिके वायुमें मिला देती है। मुन्ना अपने दुःखके आँसूओंको बर्फकी तरह हृदयमें जमाकर सुखा डालती है तो भी पतिके निकट उसे प्रकाश नहीं करती। इतना कष्ट इतना अनादर पानेपर भी मुन्ना अपने पतिको प्यार करती है। बहुतसे लोग यह देखकर आश्चर्य करेंगे, परन्तु ऐसा प्रेम प्राकृतिक नियमके विरुद्ध नहीं है। एक बार जिसको सती स्त्रियाँ प्यार करती हैं, पाप और कष्टमें भी उसे अपने मनसे हटा नहीं सकतीं। मुन्नाके मनका भाव भी इसी प्रकारका था, उसके पिता और भाई सलाउद्दीनके बर्तावको असाध्य समझ कर चाहते थे कि मुन्ना उसे छोड़ दे। और इस प्रकारकी इच्छा भी उन्होंने प्रकट की थी, परन्तु मुन्नाके हृदयमें इस बातसे गहरी चोट पहुँचती थी। वह सलाउद्दीनसे मनमें सैकड़ों दोषोंके रहते हुए भी पति समझकर, प्रेम करना चाहती थी। वह उसके साथ एक ही घरमें रहती है और दिन रातमें एक दो बार छिपकर उनका

दर्शन भी कर लेती है, यही उसके लिए परम सुखकी बात है। इस सुखसे वह वंचित होना नहीं चाहती। पतिको इस प्रकार विपथ-गामी देखकर भी उसके मनमें कभी-कभी आशाका संचार होता है कि कभी-न-कभी मेरे पतिकी बुद्धि सुधर जायगी। कभी-न-कभी शैतान उनको छोड़कर अवश्य ही चला जायगा।

ऐसे प्रेममें क्या कभी गर्व और अभिमान आसकता है ? महम्मद के बातोंसे जब मुन्नाने समझा कि, सलाउद्दीन जिस प्रकार धन खर्च कर रहे हैं उससे थोड़े ही दिनोंमें वह 'राहके भिखारी' हो जायेंगे तब वह अपना सब संकोच भूल गयी। उसने अपने दुर्बल हृदय पर पत्थर रखकर अपने पतिसे एक बार इसके बारेमें कुछ कहनेका निश्चय किया। यदि उसे कोई दुःख होता तो वह कभी भी न कहती परन्तु उसके पति अपना सर्वनाश आप ही कर रहे हैं यह देखकर भला वह कैसे चुप रह सकती है ? वह जानती है कि उसके पति उसकी बात न सुनेंगे, फिर भी वह ईश्वर पर भरोसा रखकर कम-से-कम एक बार उनको समझाने की चेष्टा करेगी। यह सोचकर उसने धीरे-धीरे मसीनसे कहा—वह क्या मेरी बात सुनेंगे ? अच्छा मैं एक बार कहकर देखूँगी।

तीसरा परिच्छेद

अलंकार

धीरे-धीरे दिन बीत गया, मुन्ना हृदयका भार हृदयमें रखकर गृहस्थीके काम करनेके लिये चली गयी। मसोन भी बाहर चला गया। प्रति दिन जिस प्रकार मुन्ना काम-काज करती थी उस दिन भी उसने उसी प्रकार किया। संध्या होनेपर प्रति दिन जिस प्रकार वह बैठकर अपने पिताको भोजन कराती थी उसी प्रकार प्रसन्न मुखसे आज भी उनके पास बैठकर, उनके साथ बात-चीत और आदर करती हुई उनको भोजन कराने लगी। बीच-बीचमें क्षणभर के लिये वह गम्भीर हो जाती थी, बात करते-करते बीच-बीचमें क्षणभरके लिये वह अन्मनस्क हो जाती थी, दो-एक बार लम्बी स्वाँस भी निकल जाती थी, मुन्नाके पिताने उसकी इस हँसीमें, बातोंमें छिपे हुए आँसुओंको देखा। वह भी अपने हृदयमें दुःखका भार लेकर भोजन करके उठ गये। मुन्नाने सोचा कि उसने अपने पिताको भुलावा दे दिया। उसने अपने सरल चित्तमें सोचा कि उसके पिताने उसके मनका दुःख नहीं समझा। यह सोचकर उसका मन कुछ-कुछ प्रसन्न हुआ। पिताको भोजन करानेके बाद वह फिर अपने सोनेके कमरेके खिड़कीमें आकर बैठ गयी। चारो ओर अन्धकार दिखाई पड़ता था। पेड़ोंके मुण्डमें अन्धकार और भी

घना हो गया था। कहीं-कहीं जुगनू उस अन्धकारमें चमक रहे थे, गंगाके जलमें आकाशके असंख्य नक्षत्रोंकी छाया पड़ रही थी। बालिका मुन्ना उस रात्रिके धार अन्धकारमय प्रकृतिकी ओर देख रही थी। धीरे-धीरे रात्रिका दो पहर बीत गया तब भा मुन्ना सोने नहीं गयी। रात्रिका तीसरा पहर भी बीत चला, तब बाहरका नाच-गान और उसका चिल्लाहट रुक गयी, नाचनेवाली और सलाउद्दीन-के यार दोस्त अपने-अपने घर चले गये, उसकी ऐयाशीकी मजलिस टूट गयी। तब वह नाचकें हा घरमें मसनद पर लेट गया। उस समय मुन्ना बहुत धीरे-धीरे भय और संकाचके साथ पैर रखती हुई एक क्षण-छायाकी तरह उस घरमें आकर खड़ी हो गयी। सलाउद्दीनने आधा खुली हुई आँखासे उसे देखा, और कहा—कौन है ? मुन्नाके मुँहसे कुछ उत्तर न निकल सका, दो पहरसे मुन्ना अब तक जो साच रहा थी। कि क्या कहकर अपने पतिका समझाऊँगी, इस समय वह सब माना भूल गयी, उसका हृदय कॉपने लगा। आँखोंमें आँसू भर आया। मुन्ना साच नहीं सकी कि वह यहाँ क्यों आई है और आकर क्या करेगी। उसने सोचा कि लौट चली, परन्तु उसके पैर मानो उठ नहीं रहे थे न वह जा सकती थी और न ठहर ही सकती थी। वह पाषाण मूर्तिकी तरह वहीं खड़ी रह गयी। इधर सलाउद्दीन नशेके भोंकमें सातवें आसमानमें विचरण कर रहे थे। उसे ऐसा जान पड़ा कि कोई स्वर्गकी दूर (अप्सरा) शायद उसको देखनेके लिये आयी है। उससे किस प्रकार बात-चीत करें यह वह सोच नहीं सका, उसको बुलाकर पास बैठानेके लिये वह उठना

चाहता था परन्तु उठ नहीं सका । वह फिर आँख मूँदकर वहीं पड़ गया । और उस दूरके पास आनेकी प्रतीक्षा करने लगा । उसे भय हुआ कि कहीं आँख खेलनेसे वह चली न जाय । आँख मूँदे ही उसने टूटा-फूटी आवाजमें जो कहा उसका अर्थ यही था कि—ऐ स्वर्गकी परी आव मेरे हृदयके अन्धकारको दूर करो ।

मुन्नाने समझा कि मेरे पति भूल रहे हैं, उसके मुँहसे बातें निकलीं । मुन्ना जिस समय बोलने लगी उस समय सलाउद्दीनको ऐसा जान पड़ा कि मानो वह स्वर्गसे रसातलमें गिर पड़ा । आधी आँखें खोलकर वह मुन्नाकी ओर आश्चर्यसे देखने लगा । उसने कहा—मुन्ना—तुम—क्यों—आई ?

मुन्ना क्यों आई हो यह वह कैसे बता सकती है ? वह तो स्वयं इस बातको भूल गयी है । इस समय मसीन घरके बारामदेमें एक बार खड़े होकर क्षणभरमें मुन्नाके सामनेसे चले गये । मुन्नाने उसे देखा परन्तु सलाउद्दीनने उसे नहीं देखा । मसीनको देखकर मुन्नाके निस्तेज प्राणोंमें बलका संचार हो गया, उसने अब निश्चय किया कि जो बात कहनेके लिये वह आई है वह अवश्यही उससे कहेगी । अपने हृदयको दृढ़ करके मुन्नाने कहा—एक बात है ।

सलाउद्दीनने पहले की ही तरह लड़खड़ाती हुई आवाजमें कहा—बातें मैं बहुत सुन चुका हूँ, अब कल सबेरे सुनूँगा, इस समय क्यों ?

सबेरे वह जो कुछ सुनेगा उसे मुन्ना भली प्रकार जानती थी । रातभर मजलिसमें रहनेके बाद दिन वह सोनेमें ही बिताता था ।

उसके बाद शाम को सज-धजकर वह फिर मजलिसमें जाता था। ऐसी हालतमें बातें करनेका अवकाश ही कहाँ मिलता था। मुन्ना इससे अधिक कोमल उत्तरकी आशा नहीं करती थी, तथापि वह क्षणभरके लिए चुप होगयी। फिर पतिके निकट आकर एक चित्र उनके पास रखकर कुछ कहनें लगी परन्तु कह न सकी। उसके मन की सब दृढ़ता दूर गयी। सलाउद्दीनने काँपते हुए हाथसे चित्रको उठा लिया और चित्रकी ओर देखने लगा। चित्र देखते ही दुनियाँ-का क्रोध मानो उसके सिर पर सवार होगया। उसने आँखे लाल करके पहलेकी अपेक्षा स्पष्ट शब्दोंमें कहा—इसे तुमने कहाँ पाया ?

मुन्नाने धीरे से कहा—मसीन खरीद लाये हैं।

वह और भी चिढ़ गया। वह समझता था कि यह चित्र दुनियाँमें एक ही है और संयोगसे वह उसे पागया है, ऐसा सुन्दर चित्र कहाँ खरीदनेसे नहीं मिल सकता। उसने सोचा कि अवश्य-ही उसके इस चित्रको किसीने चुरा लिया है। इस लिये तरह-तरहकी गालियाँ देकर वह कहने लगा कि कल सबेरे उठतेही उस चित्रके चोरका सिर तोड़नेका वह प्रबन्ध करेगा। मुन्नाने साहस करके कई बार कहा कि तुम्हारा चित्र किसीने चुराया नहीं है। वह जहाँ था वहीं है। देखनेसे ही मालूम हो जायगा। परन्तु उसकी बात सुनता कौन है ? बहुत देर तक उसे उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ, अन्तमें एक बार उसने आँखें खोलकर दीवालकी ओर देखा। सचमुच जहाँ-का-तहाँ चित्र टँगा था। परन्तु क्राध एक बार भड़क उठनेसे सहजमें ही शान्त नहीं होता। उसने

कठोर स्वरसे कहा—तुम क्यों इस चित्रको दिखाने आई हो ? जाओ मैं देखना नहीं चाहता ।

अब तक मुन्नाके मुहँसे भली प्रकार कोई बात नहीं निकली थी परन्तु पतिके इस कठोर वाक्यसे मुन्नाके हृदयसे रुका हुआ खोत फूट निकला । उसका साहस बढ़ गया, उसने धीरे-धीरे कहा— मैं तुम्हारी स्त्री हूँ । परन्तु इस कारण मैं तुमसे कुछ कहने नहीं आयी हूँ । मैं अपनेको दासी समझकर तुमसे विनती करने आयी हूँ । मैं तुम्हारा चरण पकड़कर कहती हूँ एक बार अपनी ओर और अपने कामोंकी ओर आँख उठाकर देखो । देखो, तुम आपही अपना सर्वनाश किस प्रकार कर रहे हो । दो दिन बाद यह मकान तक तुम्हारे हाथसे निकल जायगा, उस समय भीख माँगनेके सिवा तुम्हें और कोई सहारा न रहेगा । यह सोचकर अब भी सावधान हो जाओ । मैं अपने लिए इन बातोंको नहीं कह रही हूँ । दुनियाँके धन-दौलतसे मुझे सुख न होगा । ईश्वर जानते हैं मैं अपने लिये तनिक भी चिन्ता नहीं करती । परन्तु धन न रहने पर तुम्हारी क्या दशा होगी इसे जरा सोचो !

एक साँसमें इन सब बातोंके कहनेसे मुन्ना थक गयी । उसका सब बल मानो समाप्त हो गया । वह चुपचाप उत्तरकी आशामें खड़ी रही । इस मतवाली हालतमें ये सब बातें उसके पतिके मस्तिष्कमें प्रवेश कर सकती हैं या नहीं, मुन्ना यह न सोच सकी । वास्तवमें सलाउद्दीनके मस्तिष्कमें इतनी बातें एक साथ इस समय प्रवेश न कर सकीं । उन्होंने केवल सुना धन और दौलत, धन और

दौलत । कुछ देर बाद टूटे-फूटे शब्दोंमें उसने कहा—जहन्नुममें जाय धन दौलत ! धन-दौलत अगर मैं खो देता तो इतने जवाहिरात और गहने तुम्हारे शरीरपर कहाँसे दिखाई पड़ते ? पहले तुम्हारे ये गहने जायँगे, तब मेरा धन खतम होगा ।

अवसन्न और उदास बालिकाने, इस कठोर आघातसे सबल होकर, अभ्रुहान नेत्रोंसे पतिकी ओर देखती हुई उसके ओर भी निकट आकर स्वष्ट और गम्भीर स्वरसे कहा—स्वामिन् ! इन गहनों की मुझे क्या आवश्यकता है ? मेरी तरह दुखियाके लिये शृंगारकी क्या आवश्यकता है ? मेरा हृदय तो सूख रहा है इस शृंगारसे क्या लाभ होगा ? मैं अपने सुखके लिये ये गहने नहीं पहनती थी यदि इसे देखकर भी तुम्हें कष्ट हाता है, ता वह कष्ट भी मैं तुम्हें देना नहीं चाहती । तुम्हारा कष्ट छुड़ानके लिये मैं अपना हृदय फेंका दिया हं । तब भला इन साधारण गहनोंका उतार देनेमें मुझे क्या दुःख हागा ? ये गहने तुम्हारे काममें आवेंगे, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है । मेरे देहपर ता यह व्यर्थ ही पड़े है ।

मुन्ना यह कहकर गहनोंको उतार उतारकर अपने पतिके सामने रखने लगी । उसने सोचा कि जब तक धन रहेगा मेरे पतिकी बुद्धि ठीक न होगी । शैतान उन्हें छुड़ावेगा नहीं । कुछ पहले वह सलाउद्दीनके धनके रक्षाकी इच्छासे उन्हें उपदेश देने आई थी । परन्तु इस समय वह गहनोंको उतारती हुई अतःकरणसे प्रार्थना करने लगी कि—जाय सब धन चला जाय, जितनी जल्दी जा सके जाय । भगवान धनकी मोहसे इन्हें मुक्त करो, दरिद्र होकर भी इनकी

मति ठिकाने आवे । जंगल और झोपड़ीमें रहकर भी मैं उस समय सुखी हो सकूँगी ।

सलाउद्दानकी नशा बहुत कुछ कम हो गयी थी, वह चकित होकर इस तेजस्विनी मूर्तिकी ओर देखने लगा । मुन्ना जब चली गयी, तब उसके मनमें एक अशांतिका भाव उत्पन्न हुआ । परन्तु अब फारसके शाही खानदानके सलाउद्दीन महम्मदखाँ के लिये एक मामूली स्त्रीके बातोंसे इस प्रकार उदास होना, बड़ी हीनताकी बात होगी, यह सोचकर उसने नौकरको बुलाकर एक बोतल और शराब लानेकी आज्ञा दी ।

चौथा परिच्छेद

तीर्थ-यात्रा

मताहर आगा हुगली शहरके एक धनी मुसलमान थे। वह जमींदार नहीं थे, कार-बारमें ही उन्होंने धन पैदा किया था। कुछ जमीन भी इनके पास थी परन्तु नकद रुपये ही अधिक थे। इनको और कोई नहीं था, एक मात्र कन्या मुन्ना ही इनके संसार की बन्धन और हृदय की सहाय थी। बचपनमें ही कन्या मातृ-हीन हो गयी थी, तबसे मताहरने फिर विवाह नहीं किया। विवाह करनेसे कदाचित् मुन्नाको कष्ट हो, यही सोचकर उन्होंने विवाह नहीं किया था; क्योंकि मुन्ना को वह बहुत प्यार करते थे मुन्ना ज्यों ज्यों बड़ी होने लगी, त्यों त्यों उसके लड़कपनके रूप और गुण भी प्रस्फुटित होने लगे। और स्नेहमय पिताका मन भी उसके स्नेहसे परिपूर्ण होने लगा। परन्तु इस आनन्दमें भी मताहर को एक चिन्ता होने लगी कि ऐसी रूप-गुण-सम्पन्न कन्या-रत्न किसको समर्पण करें। किसके कण्ठमें यह रत्न शोभा देगा। अनेक पात्र आने लगे परन्तु कोई भी उनके मन-माफिक नहीं होते थे, उनको धनका तो अभाव था नहीं, धनके अतिरिक्त वह जो चाहते थे वह गुण एक साथही किसीमें नहीं पाये जाते थे। नवाब खॉजहाँखॉ तकने मुन्नासे विवाह करनेकी प्रार्थना की, परन्तु मताहरको वे भी

पसन्द नहीं आये। मताहर एक साथ सब गुण चाहते थे। वे चाहते थे कि उनका दामाद रूपवान, गुणवान और राजवंशका हो। इसके अतिरिक्त वह उसे घर जमाई बनाकर अपने पुत्रकी तरह रखना चाहते थे। परन्तु खोजहाँखाँ धनवान और वंश-मर्यादामें इतने सुयोग्य पात्र थे कि घर जमाई न कर सकने पर भी मताहर उनको कन्या दे सकते थे। उन्हें कन्या देनेमें केवल मताहरको एक यही आपत्ति थी कि उनके कई विवाह हो चुके थे और मताहर सौतके घर कन्याको भेजना नहीं चाहते थे।

अन्तमें मुन्नाका विवाह हुआ। धनके लोभसे फारसके एक राजवंशीय युवकने अपनी वंश-मर्यादा मताहरको दान दी। मताहरने राजवंशके साथ कन्याका विवाहकर दिया, परन्तु इसके लिये उन्हें अपनी सब सम्पत्ति दामादके नाम लिख देना पड़ा। परन्तु इसमें मताहरको कोई दुःख नहीं था क्योंकि धन-सम्पत्ति तो कुछ दिन बाद कन्या और दामादको ही मिलती। मताहर जैसा चाहते थे वैसा ही हुआ, उनको रूपवान, राजवंशीय स्वसुरगृहमें रहनेवाला दामाद तो मिल गया परन्तु जैसा गुणवान चाहते थे वैसा गुण उनमें नहीं था। विवाहके समय दामादके इस त्रुटिको वह नहीं देख सके थे। उस समय उन्होंने सोचा था कि सभी बातोंमें वह उनके मन माफिक होंगे। पर धीरे-धीरे उन्हें दामादके ऐब दिखाई पड़ने लगे।

पिताने इतनी चेष्टा और इतना कष्ट करके मुन्नाका विवाह किया, परन्तु उनकी कन्या सुखी नहीं हुई। मुन्ना राजरानी तो हुई परन्तु

सुखी नहीं हुई। मताहरके दामादने उनके कन्याका गुण नहीं समझा, हाथीके पैरोंके नीचे रत्न दलित होने लगा।

नवाब सलाउद्दीन रात-दिन विलास-सागरमें डूबे रहते थे, विलासके अतिरिक्त वह और कुछ नहीं जानते थे। उनकी सीमा रहित विलास-तृष्णा किसी प्रकार भी मिटती नहीं थी। उनकी तृष्णाके आगे कुबेरका धन भी तुच्छ था। नकद रुपये मताहरने उन्हें जो कुछ दिया था, वे सब तो छः सात वर्षोंमें उड़ गये। जमीन, मकानादि जो सब बच गये हैं वे भी अब जानाही चाहते हैं। नवाबकी नवाबीसे धीरे-धीरे वे बन्धक पड़ रहे थे। मताहरने देखा, कि एक दिन उनकी कन्याको पथकी भिखारिणी होना पड़ेगा। जिसका उन्होंने राजकन्यासे भी बढ़कर यत्नसे लालन-पालन किया था उसे एक मुट्ठी अन्नके लिये लालायित होना पड़ेगा। विपत्ति अकेली नहीं आती, इस समय मताहरको रोजगारमें भी घाटा होने लगा। कुछ दिन यदि इसी प्रकार उनकी दशा रही तो उनके कष्टकी सीमा न रहेगी। मताहरका हृदय असीम वेदनासे व्यथित होने लगा, वह कन्याकी ओर देख भी नहीं सकते थे। क्षणभर जिसका मुख न देखनेसे मताहरको चैन नहीं पड़ता था, वही मुख देखनेसे मताहरके हृदयमें असीम वेदना होने लगी। मुन्ना बड़ी बुद्धिमति थी, वह यह सोचकरकी मेरे दुःखसे पिताको कष्ट होगा, अपने हृदय की वेदना छिपाये रहती थी, वह हँसीसे आँसुओंको ढाँकना चाहती थी। पिताको उदास देखकर वह हँसती हुई उनके पास जाती थी, लड़कपनमें पिताके साथ किस दिन कौन कौन सी बातें हुई थीं यह

सब सुखकी स्मृति लौटाकर वह पिताको दिखाना चाहती थी कि उसे किसी प्रकारका कष्ट नहीं है ।

परन्तु मुन्नाके इस हँसीसे और उसकी बातोंसे मताहरका हृदय रोने लगता था । मुन्नाके उस हँसीके उजालेमें मताहर उसके हृदयकी वेदना और स्पष्ट देख सकते थे । वे सोचते थे कि हाय मुन्ना ! मैंने तुम्हारी सब हँसी मिटा दी । तब यह हँसी क्यों ? सोचते-सोचते उदास होकर वह कन्याके पास आकर उसके पीठपर स्नेहपूर्वक हाथ रखकर न जाने क्या सोचते हुये कहने लगते थे कि, मुन्ना ! मेरे साथ भीख माँगने तू निकल सकेगी ? वह हँमकर कहती कि, क्यों न सकूँगी ! यह सुनकर मताहरकी आँखोंमें आँसू भर जाते थे—वह सोचते थे कि फूलको तरह कोमल यह बालिका कितना कष्ट सह रही है—भगवन् ! अभी क्या इसे और भी अधिक कष्ट सहना पड़ेगा ?

इसी प्रकार दिन बीतने लगा, मताहरके मनमें शांति नहीं थी, कन्याका दुःख न सह सकनेके कारण वह चाहते थे कि कहीं दूर चले जायँ, परन्तु जब कन्याका मुख देखते थे तो उनका यह विचार बदल जाता था । उस समय वह सोचते थे कि यह मुख बिना देखे क्या मुझसे रहा जायगा ? जो कुछ भाग्यमें लिखा है वही होगा । यदि भीख माँगना ही पड़ेगा तो पिता पुत्री दोनों हाथ पकड़कर साथही भीख माँगेंगे ।

परन्तु इसीसे अन्त नहीं था । जिस रातकी घटना पहले परिच्छेदमें लिखी गयी है, उसके दूसरे दिन सबेरे ही यह बात मताहरके

कानों तक पहुँच गयी। केवल इतनाही नहीं, जो कुछ नहीं हुआ था वह भी उन्होंने सुना। उन्होंने सुना कि, उनके दामादने अपने हाथोंसे मुन्नाका सब गहना उतार लिया। उसके बाद जब उन्होंने अपनी आँखोंसे कन्याका अलंकार-शून्य वेष देखा, तब उनका हृदय फटने लगा। उन्हें जान पड़ा कि सलाउद्दीनके साथ कन्याका विवाह करके उन्होंने बड़ाही बुरा काम किया है, वह अपने आपको घोर अपराधी समझने लगे। यद्यपि वह प्रति दिन अनुताप करते थे परन्तु आज उन्हें अत्यधिक संताप होने लगा। इस पापका प्रायश्चित्त कब होगा? कदाचित किसी दिन दामाद मुन्नाकी हत्या उनके आँखोंके सामने न कर डाले। उनकी ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि वह कन्याकी रक्षा कर सकें। मताहर यह सोचकर काँपने लगे, उनका धैर्य छूट गया। उनकी इच्छा हुई कि वह इसी समय कन्याको लेकर कहीं भाग जायँ। पहले भी कई बार अपने मनका यह विचार उन्होंने मुन्नासे कहा था परन्तु आज अत्यन्त उत्तेजित और अधीर होकर उन्होंने यह प्रस्ताव किया। उन्होंने कहा—मुन्ना, अब तो यहाँ रहना नहीं हो सकता।

मुन्ना चुप रही। मताहरने फिर कहा—प्रायः सब सम्पत्ति तो मैंने दामादको दे दिया है—रहनेका यह मकान तक अब मेरा नहीं है, तो भी जो कुछ थोड़ा सा धन मेरे पास बच गया है उससे हम दोनोंका जीवन निर्वाह किसी प्रकार हो जायगा। इसलिए आज ही चलो, हम दोनों इस स्थानको त्यागकर कहीं चले जायँ।

मुन्नाने हड़ताके साथ कहा—बाबा ! आप इतनी चिन्ता क्यों

करते हैं ? कुछ दिन और देखें जो सम्पत्ति अभी बच रही है उसे भी समाप्त हो जाने दें, तब सब ठीक हो जायगा, आप निश्चिन्त रहें ।

अब भी इस प्रकारकी बातें ? मताहर विस्मित और क्रुद्ध होकर कहने लगे—मृत्युके पहले उसकी मति न फिरेगी । मुन्ना, तेरी बातें मैं अब न सुनूँगा, तुझको यह घर अब छोड़ना ही पड़ेगा । यदि उसका बुद्धि ठिकाने हो जायगी तो अच्छा ही है और उस समय उसे ग्रहण करनेमें कोई बाधा न होगी ।

मुन्नाने विनती करके कहा—बाबा ! मैं क्या अपने पतिको इस विपतिमें छोड़कर कहीं जा सकती हूँ ? वह तो भीख माँगनेकी तैयारी कर रहे हैं । थोड़े ही दिनोंमें वह सब कुछ खा बैठेंगे । उस समय उनके यार-दोस्त कोई भी उनकी ओर आँख उठाकर भी न देखेंगे, फिर ऐसे कुसमयमें मेरे सिवा उस समय उनकी कौन सेवा करेगा ?

मताहर चुप रहे । दूसरे कमरेमें जाकर व्याकुल होकर वह रोते हुये ईश्वरसे प्रार्थना करने लगे कि हे भगवन् ! मेरे पाप के कारण इस अनाथ बालिका को कष्ट न दो जो कुछ भी दंड देना हो मुझे दो । मेरे पापोंका जो कुछ दंड हो मेरे मस्तक पर गिराओ । मैं उसे प्रसन्नता पूर्वक सहन करूँगा ।

उनके हृदयमें बड़े वेगसे आँधी चलने लगी । उन्होंने अपना सब बल लगाकर अपने अंतर देवताको व्याकुल होकर पकड़ लिया । उस दिन उनके मनमें यह निश्चय हो गया कि, ईश्वरके निकट जाकर अपने पापोंका प्रायश्चित्त बिना किये छुटकारा नहीं

है, मुन्नाकी भलाई की भी आशा नहीं है वह अपने पतिको किसी प्रकार भी त्याग न करेगी। यदि कभा सलाउद्दीनकी मति फिरे तभी कन्याको सुख प्राप्त होगा। परन्तु ऐसी आशा करना भां दुराशा मात्र है। ईश्वरके बिना मनुष्यकी सामर्थ्य नहीं है कि कोई उनके दामादको सुधार सके। इसलिये यदि ईश्वरही उनके ऊपर दया करें, तभी कुछ हो सकता है। उस दिन अपन मनसे प्रबल युद्ध करके, स्नेहका दृढ़ बन्धन तोड़कर उन्होंने दूर तीर्थोंमें जाकर इस पापका प्रायश्चित्त करनेका पूर्ण निश्चयकर लिया। किसीसे अपने मनकी बात कुछ नहीं कहा—केवल संध्या समय भोजन करनेके उपरान्त मुन्नासे उन्होंने कहा—मुन्ना, मैं वृद्ध हुआ। एक बार तार्थ-यात्राकर आऊँ। ज़िन्दगीका कोई ठिकाना नहीं। इसलिये सोचता हूँ कि जल्दी जाना ही उचित है।

मुन्ना उस समय पिताको पान दे रही थी, उसके हाथसे पान की बन्टी गिर पड़ी, उसको दोनों आँखोंसे आँसू बहने लगे। वृद्ध मताहर भी वहाँ अधिक ठहर न सके, बाहर सोनेके कमरेमें आकर बालककी भाँति रोने लगे।

मुन्ना भी व्याकुल होकर एकान्तमें रोने लगी। तां भी उसने पिताको तीर्थ-यात्रासे रोका नहीं। उसने सोचा कि यहाँके अशांति और कष्टप्रदकारी दृश्यको देखनेसे पिताको जो कष्ट हो रहा है दूर चले जानेसे वह छूट जायगा। यह सोचकर उसने अपने मनकी व्यथा मनमें ही छिपा रखी।

इसके बाद एक दिन प्रातः काल एक नौका मुन्नाकी आँखोंके

सामनेसे गुज़री। थोड़ी देर बाद वह आँखोंसे अदृश्य हो गयी, मुन्नाका जो कुछ सहारा था वह सब मानो चला गया। सचमुच मुन्नाके पिता मुन्ना को छोड़कर चले गये।

मुन्ना इसके बाद कुछ देर तक वहीं खड़ी रही, परन्तु जब उसने देखा कि रात-दिन खड़े रहने पर भी वह नौका अब नहीं लौटेगी—जब उसने समझा कि कदाचित्त इस जन्ममें वह नौका अब न लौटेगी—तब उसका हृदय मानों आँसूके साथ बाहर निकलने लगा। उस समय उसका चित्त इतना व्याकुल था कि वह सोच नहीं सकती थी कि मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ—जिस घरमें उसका पति सो रहा था, उसीके द्वारपर आकर वह ठहर गयी—उस समय मानो उसे होश हुआ। धीरे-धीरे उसने आँखों का आँसू पोछकर घरमें प्रवेश किया।

सलाउद्दीन सारी राततो बाहरी बैठकमें शराब पीता, ऐयाशी करता और रातकी पिछली पहरमें उसीमें सो जाता था। अन्तः-पुरमें आकर उसे सोनेका अवसर ही नहीं मिलता था। मुन्ना प्रातः काल उठकर एक बार अपने निद्रित पतिको देखने आती थी, कुछ देर उसे देखकर उसके जागनेके पहले ही भीतर चली जाती थी। आज मुन्नाके शून्य हृदयमें दुःख का वेग उमड़ रहा था इसलिये वह आज अपनेको सम्भाल न सकी। वह अपने पतिके चरणोंके पास आ उनके दोनों चरणोंको अपने गोदमें रखकर रोती हुई मन-ही-मन कहने लगी—मेरा अब अपना और कोई नहीं है, एक मात्र पिता भी मुझे छोड़कर चले गये। प्राणेश्वर ! क्या तुम

एक बार अब भी इस अभागिनीकी ओर आँख उठा कर न देखोगे ?

सलाउद्दीनने नींदके झोंकमें अपना पैर खींच लिया । मुन्नाके माथेमें पैरकी ठोकर लग गयी । मुन्नाने उस समय उनके पैरोंको चूम लिया और धीरे-धीरे उनके चरणोंपर जो आँसूके बूँद गिरे थे उन्हें अपने अंचलसे पोंछ दिया । एक बार निद्रित स्वामीके मुखकी ओर देखकर दीर्घ-निश्वास लेकर वहाँसे चली गयी । उसके बाद मनकी व्यथा मनमें ही रखकर गृह कार्यमें लग गयी ।

पाँचवाँ परिच्छेद

जाग्रित-स्वप्न

महम्मद मसीन सुबह शाम नियमित रूपसे दो काम करते थे, सबेरे कुछ देर तक कसरत और सन्ध्याको संगीतका अभ्यास। परन्तु कई दिनसे इन कामोंमें भी कुछ ढिलाई पड़ रही है, कसरत करने का तो प्रायः उन्हें अवसर ही नहीं मिलता, और संगीतकी सभा नियमित रूपसे सन्ध्याको होती तो अवश्य है, पर जमती नहीं। भोलानाथ गायक जो भी गीत गाने लगते हैं मसीन उसीको नापसन्द कर देते हैं। भोलानाथका कोई भी गीत मसीनको पसन्द नहीं आती, क्योंकि भोलानाथ बहारमें अब पहले की तरह कोमल कड़ी नहीं लगा सकते, उनके बिहाग रागमें कड़ी मध्यम प्रस्फुटित नहीं होती, ईमन कड़ी मध्यमके बिना अच्छी नहीं मालूम होती। इसी कारण भोलानाथ भी चिढ़कर अब गीतके बदले रोदनका स्वर निकालकर रागको बेराग करने लगे। यह हालत देखकर उनके बन्धु बाँधव भी धीरे-धीरे उठकर चले जाने लगे। भोलानाथ भी तानपूराको रखकर चलने लगे। उनका सब क्रोध तानपूराके ही ऊपर निकलने लगा।

इस प्रकार भोलानाथका मन दुःखी होने लगा। भोलानाथकी अवस्था नवीन न होने पर भी उनका मन नया है, गायकोंका मन

प्रायः ऐसा ही होता है। चिड़ियोंकी तरह हँस खेलकर वे अपना जीवन बिताना चाहते हैं। महम्मदका नाखुश मिजाज उन्हें बहुत-ही बुरा लगता है, महम्मद उदास होकर आज-कल बहारको विहाग कहकर ऐब निकालते हैं और गीत बिना सुनेही गीतकी आलोचना करने लगते हैं इससे विचारे वृद्ध भोलानाथको बड़ा दुःख होता है। जब तक इसका प्रतिकार वह नहीं कर सकेंगे तब तक उनका मन स्थिर न होगा।

आज भोजन करनेके बाद जब सन्ध्या समय मसीन सभामें आये, तब भोलानाथने अपने माथे पर हाथ फेरते हुए हँसकर कहा—आज हवा दक्षिणसे बह रही है, समयानुसार क्या एक गीत गाया जाय ?

मसीनने भी हँसकर कहा—उस्तादजी ! दक्षिणी हवा आपने कहाँ पाया ! इस समय तो उत्तरी हवा चल रही है ! हम लोग तो मर रहे हैं।

उस्तादजी बड़ी कठिनाईमें पड़ गये, आँखें फाड़कर चारों ओर देखते हुए कहा—आप क्या कहते हैं ? अब भी उत्तरकी हवा ? इस बुढ़ौतीमें उत्तरकी हवा लगनेसे अब उठ न सकूँगा ?

मसीन—आपके हृदयमें रात दिन बसंती हवा बह रही है, उत्तरकी हवा उसे छूनेका साहस कैसे कर सकती है ?

भोलानाथने हा, हा, करके हँसते हुए अपना हाथ रगड़ने लगे। उन्होंने कहा—अब हवा कहाँ बहती है। हृदयमें वह रुक गयी है।

मसीनने कहा—रुकनेकी क्या आवश्यकता है, बहने दीजिये न,

जितना वह सके बहने दीजिये, गीत वाद्य आज कौनसा होगा ? होने दीजिये !

अब भोलानाथके मन माफिक बात हुई, बड़ी प्रसन्नतासे उन्होंने हँसते हुए कहा—पर हुजूर, आप इस तरह आसमानकी ओर देखते रहेंगे तो काम न चलेगा, इस बसंती हवाको देहमें लगना चाहिये ।

ममीन—बहुत अच्छा उस्तादजी, ऐसा ही होगा ।

धीरे-धीरे महम्मदके बन्धु बान्धव भी सभामें आने लगे । भोलानाथ तानपूरा उठाकर बसंत बहारकी राग निकालने लगे । उन्होंने पहलेसे ही निश्चय कर लिया था कि कुछ दिन तक गीत न गायेंगे ।

सप्रम स्वर तक पहुँच कर, मध्यमसे पंचम, और पंचमसे सप्रम तथा छठवेंसे फिर सप्रममें वह तान उठने लगी । ग्रामसे ग्राम में उठकर स्वरमें स्वर मिलता हुआ वह मधुर ध्वनि चारों ओर गूँजने लगी । उस तानसे मलय हिलोर बहने लगा, कोयलकी आवाज छठने लगी, हृदयमें बासंती फूल खिलने लगे ।

महम्मद कुछ देर तक समस्त जगतको भूलगये उनके हृदयमें सुखका प्रवाह बहने लगा । फूलोंसे सुवासित हवाकी तरह इस राग-ने उनके हृदयको उन्मत्त कर दिया । धीरे-धीरे यह राग उनके हृदयमें आकर लुप्त होगयी, उसकी झंकार अब सुनाई नहीं पड़ती थी । परन्तु एक अज्ञात और अपूर्व भावसे उनका हृदय भर गया । सहसा एक अनिर्वचनीय प्रकाशसे उनका हृदय प्रकाशित हो गया । आँखें बन्द करके मसीन उस ज्योतिकी ओर देखने लगे, उस ज्योति

के उच्छ्वासमें एक छाया उन्हें दिखाई पड़ी, वह छाया धीरे-धीरे एक धूमिल चित्राकार हो गयी, मसीन एक टक उसकी ओर देखने लगे। चित्र इतना धूमिल था कि वह स्पष्ट चिन्हाता नहीं था। देखते-देखते वह कुछ साफ होने लगा, वह चित्र एक रमणीका था। उसके मुख पर पाप, ताप और मलिनताका लेश मात्र भी नाम नहीं था, दुःख और विपादकी रेखा भी नहीं थी, स्वर्गीय शांतिकी वह जीवित प्रतिमा थी। महम्मद उसको पहचाननेकी चेष्टा करने लगे। सहसा चारों ओरसे उस चित्रपर प्रकाश पड़ने लगा, उस प्रकाशमें मुन्नाकी शांतिमयी प्रतिमा चमकने लगी। उस प्रतिमाके पास एक और मूर्तिको उन्होंने खड़े देखा। वह एक संन्यासी थे।

चुपचाप एक टक महम्मद उस ओर देखने लगे। संगीत ध्वनि रुक गयी, मसीनकी निद्रा मानो टूट गयी, वह चौंक उठे। क्षणभरमें वह प्रकाश और वह चित्र बिलीन होगये। उन्होंने समझा कि मैं स्वप्न देख रहा था। फिर उस दिन गीतकी मजलिस समाप्त होगयी। मसीन उठकर मुन्नाके पास चले गये।

छठवाँ परिच्छेद

भाई-बहन

जबसे मुन्नाके पिता तीर्थ-यात्रा करने चले गये, तबसे मुन्ना और भी उदास रहने लगी। उसकी सुख और शांति जो कुछ बच गयी थी वह भी मानो चली गयी। मुन्नाके लिये महम्मदको अत्यन्त चिन्ता रहती थी। वह रात दिन यही सोचा करते थे कि किस प्रकार उसके हृदयमें शांति प्रदान करें। काम-काज छोड़कर दिनभर में कई बार वह उसको देखने आते थे, यदि वह खाती नहीं थी तो वे उसे जबर्दस्ती खिलाते थे, उसको उदास देखकर हँसानेका प्रयत्न करते थे, अपने असीम स्नेहसे वह मुन्नाके सब अभावोंको पूरा करना चाहते थे।

उनके कारण मुन्ना भी बिना खाये और बिना हँसे नहीं रह सकती थी, क्योंकि मुन्नाके न खानेसे मसीन भी नहीं खाते थे। उसको उदास देखकर वे भी उदास हो जाते थे। इसी प्रकार मसीन के अनन्त स्नेहकी छायामें मुन्नाके हृदयकी अशांति जब थोड़ी देर के लिये भी दूर हो जाती थी, तब मसीनके हृदयमें आनन्द-स्रोत समझने लगता था। उनके हृदयका वह आनन्द-स्रोत मुन्नाके हृदयको भी स्पर्श करता था, मसीनके विशुद्ध प्रेमसे मुन्नाके उदास मुख पर भी हँसीकी रेखा दिखाई पड़ने लगती थी।

प्रति दिन रातको जब वह देख लेते थे कि मुन्ना सोनेके लिये चली गयी है, तब वह भी सोने जाते थे। मुन्ना जब बिछौनेपर सो जाती थी तब वह द्वारपर आकर कुछ देर तक चुपचाप खड़े रहते थे, जब वे यह देख लेते थे कि मुन्ना निद्रादेवीके गोदमें विश्रामकर रही है तब वहाँसे चले जाते थे। रातको जब अगणित तारे आकाशमें चमकते थे तब वह यही मनाते थे कि प्रातःकाल उठकर मुन्नाका मुख भी इन्हीं तारोंकी तरह प्रफुल्लित देख सकूँ। यह सोचते हुए उनके निराश हृदयमें भी उस समय आशाका संचार होने लगता था। परन्तु प्रातःकाल आकर जब वह फिर मुन्नाका मुख उदास देखते थे, तब उनके आँखोंसे आँसू बहने लगते थे। रात दिन मसीन को केवल इसी बातका सोच रहता था कि किस प्रकार मैं मुन्नाको सुखी करूँ। आज सन्ध्या समय कदाचित् मसीन इसी प्रकारका स्वप्न देख रहे थे। वासनाकी मायासे मुन्नाकी शांतिमयी प्रतिमा उनके आँखोंके सामने दिखाई पड़ने लगी।

स्वप्न देखकर महम्मदका हृदय आशासे प्रफुल्लित हो उठा। वह अधीर होकर मुन्नाकी वह छवि देखनेके लिए आये। परन्तु आकर क्या देखते हैं कि मुन्ना रो रही है, किन्तु उनको देखकर अपने आँखों का आँसू पोछकर वह खड़ी हो गयी। मसीनके निराश हृदयमें उस समय यह बात प्रतिध्वनित होने लगी कि—हे भगवान्, विश्व-पिता, अब भी क्या मेरा यह हृदय स्वार्थ-शून्य नहीं हुआ ! अपने प्रेमसे क्या मैं एक मनुष्यका भी आँसू पोछ न सका ?

बिना कुछ कहे मसीन मुन्नाके पास आकर बैठ गये—अब तक

सैकड़ों कष्ट रहने पर भी मसीन हँसते हुए प्रवेश करते थे, परन्तु आज वे ऐसा न कर सके। आज उनकी आशा भंग हो गयी। इसलिये उनके हृदयमें भारी चोट पहुँची। उनका अस्वाभाविक भाव देखकर मुन्नाने धीरे-धीरे कहा—मसीन क्या आज कुछ हुआ है ?

मसीनने हँसनेकी चेष्टा करके कहा—नहीं, मुन्ना कुछ नहीं।

मुन्नाको उनकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने समझ लिया कि मसीनके हृदयमें किसी बातका दुःख है। वह दीर्घ स्वाँस लेकर चुप हो गयी।

संसारमें ऐसा निःस्वार्थ स्नेह कहाँ, इस प्रकार सुखमें सुखी और दुखमें दुखी कौन होता है ? ऐसे अकृतिम स्वर्गीय स्नेहका प्रतिदान मुन्नाने क्या दिया ! मसीन तो उससे और कुछ नहीं चाहते, वह केवल उसका प्रसन्न मुख ही देखना चाहते हैं, परन्तु अभागी मुन्नाने ऐसा सुख-शांति-हीन हृदय लेकर जन्म लिया है कि, वह प्राण दे सकती है, परन्तु मसीन जो चाहते हैं वह उनको नहीं दे सकती। यदि संसारके एक आदमीको भी वह सुखी नहीं कर सकती तो उसकी मृत्यु क्यों नहीं हो जाती ? ईश्वरने तब क्यों उसे इस संसार में भेजा ?

मुन्नाने देखा कि मसीनका स्नेह असीम है, परन्तु उसका स्नेह अत्यन्त लुट्र है, मसीनका हृदय निःस्वार्थ है, परन्तु उसका हृदय स्वार्थसे भरा हुआ है। हृदयमें लुट्र प्रेम रखकर वह अनंत प्रेमका प्रतिदान किस प्रकार करेगी ? स्वार्थमय हृदयमे निःस्वार्थ हृदयको कैसे सुखी करेगी ? वह तो मसीनके शुभ्र निर्मल हृदयके

सुखको भी अपने स्वार्थकी मलीनतासे दिन पर दिन ढाँक रही है, उसके अशांति रूपी अन्धकारसे मसीनके हृदयकी सुख और शांति भी नष्ट हो रही है। मुन्ना इस प्रकार जितना ही सोचती थी, उतना ही उसे अपने उद्देश्यहीन लुट्ट जीवनके प्रति घृणा होती थी और उसे जीनेकी तनिक भी इच्छा नहीं थी।

थोड़ी देर तक इसी प्रकार उदास हृदयसे दोनों भाई बहन चुपचाप बैठे रहे। कुछ देर बाद मसीनने कहा—मुन्ना, रात अधिक हो गयी है। क्या आज सोओगी नहीं ?

मुन्नाने कहा—हाँ जाती हूँ।

वह और कुछ कह न सकी। क्षण भर बाद वह उठकर सोनेके लिये चली गयी। मसीन भी एक दीर्घ निःस्वास लेकर बरामदेमें आकर खड़े होगये। बाहरके घरमें आकर मसीनकी इच्छा सोनेकी नहीं हुई। रात अधिक नहीं बीती थी, इससे वे घूमनेके लिये बाहर सड़क पर चले गये।

सातवाँ परिच्छेद

शांति

अभी मार्ग बिलकुल शून्य नहीं हुआ था। दुकानोंमें इस समय भी लेन-देन खरीद-विक्री हो रही थी। रातकी निस्तब्धता तोड़कर सड़कके एक ओर एक मकानसे रह-रहकर पैशाचिक हास्य ध्वनि हो रही थी। साथ ही कुत्ते भी जोर-जोरसे भूँक रहे थे जिससे ऐसा जान पड़ता था कि मानो इनके पशु-प्राणमें यह भीषण हास्य-चीत्कार सहन नहीं होता है। इस समय भी दो एक भिखमंगे भीख माँग रहे हैं, वे पेड़ोंके नीचे बैठकर करुण स्वरसे पथिकोंके हृदयमें दया उत्पन्न करनेकी चेष्टा कर रहे हैं।

मसीनको यहाँ भी कहीं शांति नहीं दिखाई पड़ी, जिस प्रकार घरमें उन्हें अशांति दिखाई पड़ी थी, वैसी ही यहाँ भी दिखाई पड़ी। वही हाहाकार, वही आँखोंका आँसू और वही हृदयकी वेदना यहाँ भी सब वही ही दिखाई पड़ी।

उन्होंने सोचा, संसार दुःखमय है ! जहाँ देखो वहीं दुःख-ही-दुःख है ! महलोंमें, भोपड़ियोंमें, अपने पराये सभीके घर दुःख विराज रहा है ! सुखके मर्म-स्थानमें भी उसका आधिपत्य होगया है ! गुरुदेवने सच कहा था—इस दुःखको निवारण करनेकी किसे सामर्थ्य है ? इसे दूर करनेकी चेष्टा करना केवल बालूमें जल छिड़कनेके समान है। संसार यदि इसी प्रकारका है और संसारमें यदि

कहीं भी सुख नहीं है, तो लोग सुख क्यों चाहते हैं ? जीवन यदि दुःख ही मय है, तो लोग दुःखसे व्याकुल क्यों होते हैं ?

संन्यासीका वचन उन्हें फिर याद आया । उन्होंने सोचा, क्या यह केवल प्रलोभन है ! जगतकी स्थितिके लिये प्रकृति देवीने क्या यह प्रलोभनका जाल नहीं बिछाया है ? परन्तु यह जाल केवल सुखका ही जाल क्यों न हुआ ? ऐसा क्या नहीं हो सकता था ? जिसने अपनी इच्छा मात्रसे कीट, पतंग, पशु, पक्षी, मनुष्य, सूर्य, नक्षत्र, स्वर्ग और पृथ्वीको बना दिया है तो क्या यदि वह चाहता तो संसारको सुखमय न कर सकता ? पर ऐसा उसने क्यों नहीं किया ? किस उद्देश्यसे यह जन्म-मरण और सुख-दुःखको उसने बनाया ? इतना पाप-ताप शोक और मोहकी क्या आवश्यकता थी ? संसारके अनन्त चक्रसे जीवमात्र क्यों पीसे जा रहे हैं ?

इस गंभीर रात्रिमें तारका-खचित नभ-मण्डलके नीचे खड़े होकर महम्मद इसी प्रकारके प्रश्नोंकी मीमांसा करने लगे । परन्तु अन्तमें घबड़ाकर उन्होंने सोचा कि इस जटिल सृष्टिके रहस्यको भेद करनेकी सामर्थ्य उनमें नहीं है । अनन्तकालसे यह अनन्त विश्व संसार चल रहा है, और उसका नियम भी अनन्त है; इस अनन्त नियमका छोटासा अंश देखकर अज्ञान मनुष्य भला क्या यह समझ सकता है कि इसमें कौनसी वस्तु आवश्यक है और कौन सी अनावश्यक ? कौन कह सकता है कि सृष्टिका उद्देश्य मंगल-मय नहीं है, कौन कह सकता है कि यहाँ दुःख और ताप ही जीवोंके लिये अनन्त सुख मंचपर चढ़नेकी सीढ़ी नहीं है ?

मसीन इसी प्रकारकी गम्भीर चिन्तामें डूबे हुये, भिखारियोंको भिक्षा देते हुये चले जा रहे थे। एक पेड़के नीचे एक भिन्नकको भिक्षा देनेके लिये आकर देखा कि एक स्त्री मैला कपड़ा पहने हुये उस भिन्नकके पास खड़ी होकर कह रही है—कुछ पाया या नहीं ? क्या आज भी उपवास ही होगा ?

उस भिन्नकने अपनी भिक्षाकी भोली उस स्त्रीको दे दी। भोली पातेही उसने चटसे उसके भीतर हाथ डालकर जब देखा कि उसमें केवल दो-तीन छटाँक चावल और दो-चार पैसे ही हैं, तब उसने झुंझलाकर कहा—बस इतना ही ? इतनेसे इतने लड़कोंका पेट कैसे भरेगा ? खिला नहीं सकता था, तो व्याह क्यों किया ? हे भगवन् ! मेरी किस्मत क्यों फूट गयी ?

यह कहकर वह अपने किस्मतको धिक्कारती हुई, जोर-जोरसे रोने लगी। अन्धे भिन्नकने कहा—दोहाई तेरी, रो मत, जिस समय व्याह किया था, उस समय क्या जानता था कि मैं अन्धा हो जाऊँगा ! अच्छा, थोड़ी देर और मैं यहीं बैठा रहूँगा।

महम्मदका हृदय उनकी यह दशा देखकर करुणासे भर गया। उन्होंने सोचा कि कैसे कहा जा सकता है कि इस दुःखका परिणाम सुख है ! इस विशाल संसारमें प्रेम कहाँ—शांति कहाँ ? यहाँ तो दुःखमें सहानुभूति तक नहीं, कष्टमें ममता तक नहीं—केवल दूसरे का दुःख देखकर उपहास और न्यायके प्रति अन्याय, दुर्बलके प्रति सबलोंका अत्याचर ही दिखाई पड़ता है। इस यंत्रणा और वंदनाके भट्टहासके साथ पृथ्वी निरंतर घूम रही है। सुख यदि कहीं हो तो

इस संसारके उस पार होगा, यहाँ तो नहीं है। भगवन् ! तुम्हारे सृष्टिका यह कैसा रहस्य है ?

इसी समय दो पथिक बात करते हुए उसके पाससे चले गये, एककी बात उन्हें सुनाई पड़ी, वह कह रहा था—भगवानको दोष देना व्यर्थ है। जैसा किया है, वैसा ही फल भोगना पड़ेगा।

वह मानो उन्हींके प्रश्नोंका उत्तर देकर चला गया। मसीन सोचने लगे, कर्म फल ! यह सुख-दुःख, पाप-पुण्य क्या सब मनुष्यों का कर्म-भोग मात्र है ? प्रकृति क्या जीवोंको केवल जालमें फँसाकर जगतकी रक्षा कर रही है ? क्या उसे इस बातकी कुछ भी चिन्ता नहीं है, कि तुम उसके जालमें कैसे फँसते हो और अपनी मूर्खतासे अपना प्राण कैसे गँवाते हो ? कार्य और कारणके अतिरिक्त पाप-पुण्य और सुख-दुःखका स्वतंत्र्य मूल्य क्या प्रकृतिमें कुछ भी नहीं है ? क्या प्रकृतिका यही नियम है कि जो भोग करता है वही सहन करता है ? क्या इसीको कर्मफल कहते हैं ? परन्तु वास्तवमें कर्म-क्षेत्रमें मनुष्यकी स्वाधीनता कितनी है ? क्षुद्र बुद्धि दीन, दुर्बल, अज्ञान मनुष्य प्रकृतिके द्वारा प्रवृत्तिकी उत्तेजनासे जो काम करता है उसके लिये उसे इतना दंड और इतना दुःख भोगना पड़ता है। विधाता, तुम्हारा न्याय, प्रेम, करुणा, सब कहाँ है। इसी प्रकारकी बातें सोचते हुए महम्मदने उस स्त्रीके पास आकर उसके हाथमें कुछ रुपये देकर कहा—बहन ! यहलो, आजसे तुम्हारे भरण पोषण का भार मेरे ऊपर रहेगा।

मसीनकी यह बात उस अन्धके कानमें संगीतकी तरह सुनाई

पड़ी। इसी स्वरको उसने एक दिन और भी सुना था, जिसे वह अब तक भूला नहीं था। उसने महम्मदको पहिचान लिया, प्रसन्नता और कृतज्ञतासे उसका हृदय भर गया। उसने कहा—जय हो, जय हो ! एक बार तुम्हींने मुझे बचाया था, आज भगवान् ने फिर तुम्हे मेरे पास भेज दिया है। ब्राह्मणी भी मुक्त कंठसे उनको आशीर्वाद देने लगी।

उन गरीब अनाथोंके आशीर्वादसे मसीनका हृदय गद्गद् हो गया, उनके प्रसन्नतासे उन्हें इतनी प्रसन्नता प्राप्त हुई कि एक सम्राटके मिलनेपर भी उतना न होती। महम्मदका हृदय विमल करुणासे परिपूर्ण हो गया। निस्वाथं प्रेम और करुणा वितरण करनेसे उनके हृदयका प्रेम-भण्डार मानो इतना बढ़ गया कि वह उसे दान करके खाली नहीं कर सकते थे। अब तक दूसरेका कष्ट दूर करके और प्रेम करके उन्हें तृप्ति नहीं हुई थी। वे चाहते थे कि दूसरेका सब दुःख दूर कर दें, परन्तु उन्होंने देख लिया कि ऐसा करनेकी उनमें क्षमता नहीं है, यहाँ तक कि अपना प्राण देकर भी दूसरेको पूर्ण सुखी नहीं कर सकते। वह तो एक अति तुच्छ व्यक्ति है, न जाने कितने महात्मा अपना सर्वस्व देकर भी मनुष्योंको पूर्ण सुखी नहीं कर सके हैं—तब महम्मदके मनमें अशांति उत्पन्न हो जाती है। दूसरेका सुख-दुःख देखकर वे अपनेको इतना भूल जाते हैं कि उस समुद्रमें उनका सुख-दुःख जल विम्बकी तरह विलीन हो जाता है।

आनन्दसे परिपूर्ण होकर महम्मदका चिन्ता स्रोत दूसरी ओर घूम गया; ईश्वरके प्रेम और करुणामें अविश्वास करके उन्होंने ईश्वरके

प्रति जो दोषारोप किया था उससे उन्हें आत्म ग्लानि होने लगी। उन्होंने सोचा, मैं कृतघ्न हूँ, भगवान्‌की करुणा और रनेह मैं सदासे पा रहा हूँ तो भी उस मगलमय परमात्माके कामोंमें सन्देहकर रहा हूँ। दूसरेके लिये मेरे हृदयमें जो दुख दया और करुणा उत्पन्न हो रही है, क्या यह उस परम पिता की प्रेरणा नहीं है? अब तक मैंने अन्धे और उन्मत्तकी भांति एक ही ओर देखा है, सुख और शांति न होनेसे क्या जीव बच सकता था? दुखमें भी सुख मिला रहता है, अमंगलमें भी मंगल दिखाई पड़ता है, इसीसे संसार अब तक टिका हुआ है। नहीं तो कभी का इसका ध्वंस हो जाता, अथवा शैतानका राज्य हो जाता, इसमें सन्देह नहीं।

वह कृतज्ञ हृदयसे ईश्वरका ध्यान करते हुए घरकी ओर चले जा रहे थे, सहसा एक भोपड़ीसे उन्हें रोनेकी आवाज सुनाई पड़ी। आवाजके सहारे वह भोपड़ीके द्वार पर पहुँच गये।

द्वार खोल घरमें प्रवेश करके उन्होंने देखाकि एक रोगीके सिरहाने एक बुढ़िया बैठी हुई रो रही है। महम्मदको देखकर उसने व्यग्रताके साथ कहा—तुम क्या डाक्टर हो, क्या मेरे लड़केको बचानेके लिये आये हो! एक बार फकीरके चरण रजसे इसकी रक्षा हुई थी, इस बार तुम इसको बचा दो।

महम्मद बुढ़ियाको पहिचान गया। बुढ़ियाके रोनेसे रोगीने चिढ़कर कहा—तबसे बराबर तू “मैं मरूँगा मरूँगा” कर रही है—क्या मुझे बिना मारे न छोड़ेगी?

बुढ़िया—ऐसी बात मुझसे क्यों निकालता है?

महम्मदको कुछ-कुछ चिकित्साका भी ज्ञान था; गरीब दुखियों के उपकारके लिये उन्होंने कुछ इसका भी अभ्यास किया था। महम्मदने रोगीके पास जाकर उसके सिर और देहपर हाथ रखकर देखा। उसके बाद जेबसे एक डिबिया निकालकर थोड़ी दवा खिलादी। उसके बाद कब और किस तरहसे दवा खिलाना होगा, यह बताकर दवाकी डिबिया बुढ़ियाके हाथमें दे दी। उनका यह काम नया नहीं था, वे सदैवसे ही गरीबोंकी इस प्रकार सहायता किया करते थे। कुछ रुपये और थोड़ी बहुत दवा साथ बिना लिये महम्मद बाहर नहीं निकलते थे। दवाकी डिबिया बुढ़ियाके हाथमें देकर उन्होंने कहा—डरनेकी कोई बात नहीं है, इसी दवासे आराम हो जायगा नहीं तो मैं कल सबेरे डाक्टरको भेज दँगा।

बुढ़िया—अहा ! धन्य हो बेटा, धन्य हो, तुम्हारी दया अपार है ! एक बार और मैंने ऐसा ही दयालु देखा था !

यह कहकर बुढ़ियाने उन्हें पहिचान लिया और प्रसन्नतासे चीख कर वह उनके पैरोंपर गिरनाही चाहती थी कि महम्मदने उसका हाथ पकड़कर उठा लिया। बुढ़ियाने कहा—बेटा, तू आगया, मुझ अनाथका सहारा तू आगया !

और कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं थी, बुढ़ियाके उस सुखपूर्ण हृदयके उच्छ्वाससे महम्मदके हृदयमें सुखका समुद्र उमड़ने लगा। बुढ़ियाके निराश हृदयमें आशाका संचार करके महम्मद घर लौटे। बिछौनेपर सोनेपर भी उन्हें वही सब दृश्य दिखाई पड़ने लगे। उस अन्धे और उस बुढ़ियाके आनन्दका ध्यान करनेसे

उन्हें एक अपूर्व शांति प्राप्त हुई, सुखके कोमल स्पर्शका अनुभव करते हुए वह सो गये ।

बुढ़ियाने रातको एक बार और दवा खिलानेके लिये जब डिब्बिया खोला तब उसने चकित होकर देखा कि दवाके साथ कई एक रुपये भी उसमें रखे हुये हैं ।

आठवाँ परिच्छेद

खास मजलिस

सलाउद्दीनखाँकी बैठकमें साज-समानकी कोई त्रुटि नहीं है। फर्शपर मसनद गद्दी, दिवालोंपर तस्वीरें और छतमें झाड़ फानूस लटक रहे हैं। जहाँ जिस चीजकी आवश्यकता है वहाँ वह तैयार है, परन्तु कुछ दिन पहले, महीने भरके भीतर ही दिवालोंकी पुरानी तस्वीरोंके बदले नयी तस्वीरें लगाई जाती थीं। सप्ताह बीतते न बीतते दिवालोंपर नयी नयी चित्रकारी होती थी। दिनमें कई बार बिछौने बदले जाते थे—परन्तु इस समय इन बातोंका अभाव दिखाई पड़ता है। इसलिये घरकी शोभा भी कुछ और ही प्रकारकी हो रही है। बिछौनेके कारचोत्रीके काम उधड़ रहे हैं, तकियोंसे रूई निकल रही है। झाड़-फानूस और दिवालगीरके कमल आधे गिर गये हैं, किसी किसीके कमल टूट भी गये हैं। घरके चारो ओर देखनेसे ऐसा जान पड़ता है कि बहुत दिनोंसे इस घर पर झाड़ूकी कृपा-दृष्टि नहीं हुई है। कुछ दिन पहले इस घरकी कैसी अवस्था थी—आज कैसी दुर्दशा है। इस घरको देखनेसे लक्ष्मीकी चंचलता पर और पार्थिव सुखोंकी अनित्यतापर विश्वास करनेके लिए धर्मा-चार्योंकी लम्बी चौड़ी वक्तृता सुननेकी आवश्यकता न होगी।

इसी प्रकारके सुसज्जित विलास गृहमें फटी मसनद पर फारसके राजवंशीय सलाउद्दीन बन्धु वगैरोंके साथ बैठे हैं। अर्थाभावके कारण

कुछ दिनोंसे इस घरने नर्तकियोंके नूपुर ध्वनित चरण स्पर्शका सुख भोग नहीं किया; परन्तु अब भी शराबकी सुगन्धसे घर सुवासित हो रहा है। बोटलोंके कार्क खुलनेके साथ ही 'यहाँ लावकी' चीत्कार सुनाई पड़ती है। उसीके साथ बीच-बीच में अट्टहास ध्वनिसे रात्रिकी निस्तब्धता भंग हो रही है। मजलिस अभी आरम्भ हुई है। घरमें अभी सुरादेवीका पूर्ण आविर्भाव नहीं हुआ है। सलाउद्दीन की आँखों पर अभी थोड़ा ही नशा चढ़ा है, अभी बिलकुल अज्ञानता नहीं आई है, दाहिने और बायें उनके खास दोस्त बैठे हैं। एकका नाम अमीर और दूसरेका कासिम है। परन्तु नाम चाहे जो हा मजलिसमें नामके साथ उनको कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। इस मजलिसमें दोस्तके ही नामसे परिचित हैं। अमीर कुछ लम्बे हैं और वह सलाउद्दीनका अधिक प्रिय हैं इसलिये इनका नाम 'बड़े दोस्त' है। कासिमका नाम 'छोटें दोस्त' है, इनके अतिरिक्त और भी चार दोस्त जिनको जहाँ जगह मिली बैठ गये हैं। सलाउद्दीन एक बार सुरा-पात्रमें मुँह लगाते हैं और फिर एक बार बड़े दाँस्त फिर छोटे दाँस्तकी आर देखकर बातें करते हैं। उनके दोस्त जो कुछ कहते हैं, उसे सुनकर वह मारे खुशीके लाट-पोट हाँ जाते हैं। एक बार खुशीकी इतनी अधिकता हुई कि ग्लासकी शराब एक घूँटमें पाकर गिलास जमीन पर रखकर दाँस्तके पोँठ पर हाथका जबदस्त आदर जड़कर उन्होंने कहा—दोस्त साहब, दिल खो गया, अब सब्र कहाँ ?

खानसामा उस समय दोस्त साहबके गिलासमें शराब ढाल रहा

था। दोस्त साहब बिहलीकी तरह तृपित नेत्रोंसे गिलासकी ओर देख रहे थे। उन्होंने कहा—नवाब साहब, कुछ पर्वाह नहीं—बह सब—बन्दा—

गिलास भर गया। बात पूरी करनेका समय नहीं मिला। झटपट उसे उठाकर दोस्त साहब चढ़ा गये। छोटे दोस्तने इसी समय कलेजे पर हाथ मारकर कहा—हुक्म हो तो एक ही छलांगमें गङ्गा पार कर सकता हूँ—फिर भला एक दुलहिन ठीक करना कौनसी बड़ी बात है।

सलाउद्दीनने नशीली आँखोंसे उसकी ओर देखते हुए हँसकर कहा—क्या बात है? अलहमदुल (चिल्लाकर अल्लाहको तारीफ)।

इधर अजीम, गंज और एक दूसरे दोस्तने देखा कि यही दोनों सब वाह-वाही लूट लेना चाहते हैं, इसलिये उसने हुसेनखाँको खोदकर कहा—अब देरी करनेसे ठीक नहीं। गिलासकी शराब खत्म करके हुसेनखाँने जोरसे कहा—नवाब साहब! इस बातको पहले मैंने ही छेड़ा था, इसका जरा ख्याल राखियेगा।

नवाब साहबने कहा—ठीक है, अहह।

बड़े दोस्तने आँखें लाल करके हुसेनसे कहा—आपने क्या कहा? हुसेनखाँ—जी हाँ, नवाब साहबकी शादीका पैगाम मैंने ही किया है।

बड़े दोस्तने खफा होकर सलाउद्दीनकी ओर देखते हुए कहा—यह बात आप न सुनियेगा।

छोटे दोस्त और भी चतुर थे, उन्होंने मुस्कराकर हँसते हुए

सलाउद्दीनके कानोंके पास मुँह लाकर धीरेसे कहा—मगर असल घटक (विवाहका पैगाम लानेवाला) कौन है इसे शायद आपसे कहना न होगा ?

यह सुनकर शेरअलीने कहा—नहीं, नहीं, मैं ।

महम्मदअली—मैं ।

अलिफ—मैं ।

अब्दुल—मैं । घरके सभी एक साथ बोल उठे—मैं—मैं ! इस मैं के महासमुद्रमें पहलेका छोटा मैं एकदम डूब गया । तब सब निस्तब्ध हागये । सलाउद्दीनने अल्लाहका नाम लिया । उसके बाद तुरन्त ही इस भगड़े और चिल्लाहटकी भोंक शराबपर पड़ी । दूने जारसे 'लाव, लाव' की चिल्लाहट होने लगी, उसके बाद बड़े वेगसे गिलासके शराबपर लोगोंका आक्रमण होने लगा; उस युद्धमें सब लोग और सब बातें भूल गये । एकके ऊपर एक तीन-चार गिलास पीनेके बाद सलाउद्दीनने कहा—सिर्फ तस्वीर दिखानेसे तो जान बचेगी नहीं । असल सूरत कब दिखाओगे ?

बड़े दोस्तने कहा—सूरत—ऐसी सूरत दुनियाँमें और कहाँ दिखाई पड़ सकती है ?

छोटे दोस्तने कहा—खूबसूरतीमें वह तो नूर महल है, महल रोशन किया करती है । 'लाव-लाव' एक प्याला और लाव खानसामा साहब ।

बड़े दोस्तने कहा—नूर महल क्या कहता है रे पागल । नूर आलम कह ।

हुसेनने कहा—धत्तू यह क्या कहता है ! नूरे जन्नत (स्वर्गीय-सुन्दरी) कह ।

सलाउद्दीनने मारे खशीके मुस्कराते हुए कहा—मेरी नूरजहाँने मेरा दिल रौशन कर दिया है, लाव जी लाव सिराज लाव ।

अब सबकी नशाने कुछ जोर पकड़ा, मजलिस जम गयी, खानसामा शराब ला लाकर ढालने लगा । सलाउद्दीनने कहा—क्यों-जी दोस्त ! इस पहली शादीकी बात तो जाहिर नहीं न हुई है ?

दोस्त—तोबा, तोबा, ऐसा भी क्या कभी हो सकता है ? कोई भाँजी मारेगा तो उसकी जवाबदेही कौन करेगा ?

नवाब साहबका दिल कुछ हलका हुआ । उन्हें बड़ा भय था कि पीछे इस विवाहकी बात कोई सुन लेगा तो नयी शादी न हो सकेगी । इस समय रुपयेकी जैसी कमी हो रही है उससे अगर खूबसूरत न भी हो तो भी चल सकता है, परन्तु खूबसूरत मिल जाय तो इससे बढ़कर क्या हो सकता है ? उन्होंने कुछ सचेत होकर कहा—क्या बात है ? ऐसी अच्छी अक्ल और कहाँ ?—अब शादीका दिन तै हो जाना चाहिये ।

खानसामा सिराज दे गया था—उसे पीनेपर सलाउद्दीनको जान पड़ा कि यह सिराज नहीं है, दूसरी शराब है । परन्तु इस शुभ अवसरपर उनका दिल सिराज ही चाहता था । उसे न पानेसे मानो सब व्यर्थ हो गया । लाल आँखोंको और भी लाल करके 'सिराज, सिराज' कहकर चिल्ला उठे । खानसामाने आदत बुरी देखकर धीरेसे कहा—सिराज नहीं है, खत्म होगयी है ।

सलाउद्दीन 'जहन्नुममें जाव' कहकर चिल्ला उठे। बड़े दोस्तने कहा—नवाब साहब, कुछ पर्वाह नहीं। दो राज बीत जाने दीजिये, फिर सिराजमें ही रात-दिन सोये रहियेगा।

घरकी हालत यद्यपि बहुत दिनसे जाहिर हो चुकी है, तौ भी खानसामाकी बातोंसे सलाउद्दीनको कुछ लज्जा मालूम हुई। उसे ढाँकनेके लिये उन्होंने कहा—दोस्त साहब जहाँ औरते रहती हैं वहीं दुरत (ईर्ष्या) रहती है। हजरत हुसेनका भी इसी हिंसासे मरना पड़ा था फिर मेरी कौन गिनती है। मेरे घरकी औरतने इस नयी शादीकी बात सुन लिया है। इसीसे उसने सिराज रोककर मेरा हासला पस्त करना चाहा है—पर वह कै दिन तक हासला पस्त कर सकेगी।

छांटे दोस्तने कहा—हा, हा—दो दिन बाद हमारे नवाब साहब नयी दुलहिनके पास बैठेंगे, तब बीबो साहबाकी दमबाजी कहाँ रह जायगी ?

हुसेनखाने अजीमके कानमें धीरेसे कहा—यह हालत ! यहाँ शराबकी कमी होगयी है, इसीलिये जल्दीसे दूसरी शादी करा देना चाहिये जिससे कुछ दिन तक और हम लोग आरामसे दिल भरके शराबखोरी कर सकें।

नवाँ परिच्छेद

उपाय

भोलानाथने न जाने कैसे सुन लिया है कि, सलाउद्दीन मुन्नाको छोड़कर एक दूसरा विवाह करना चाहते हैं। उन्होंने सोचा ऐसा होनेसे सर्वनाश हो जायगा। मुन्नाके कष्टकी सीम न रहेगी। महम्मद-का प्रफुल्ल मुख भी सदाके सिये म्लान हो जायगा। इस घरकी प्रसन्नता सदाके लिये विदा हो जायगी। सोनेका घर मिट्टी हो जायगा। भोलानाथने यह नहीं सोचा कि महम्मद और मुन्ना हिन्दू नहीं हैं, सलाउद्दीन मुन्नाको यदि तलाक देकर दूसरा विवाह कर लेंगे तो शायद महम्मदके मनमें यह सोचकर कि मुन्ना भी दूसरा विवाह कर सकती है, दुःख न होगा। हिन्दू भोलानाथ महम्मदको मुसलमान नहीं समझते थे। इसलिये दिन भर मुन्ना और महम्मद-का दुःख भोलानाथके हृदयमें वाणकी तरह विधने लगा। सन्ध्या समय गीत गानेके लिये जब वह आये तब महम्मदको देखते ही उनके हृदयका कष्ट और भी प्रबल हो गया। बूढ़े भोलानाथ मानो अपनेको भूल गये। किस प्रकार अपने हृदयको सम्हालें यह निश्चय न कर सके, इसलिये झटपट तानपूरा उठाकर स्वर बाँधने लगे। वह तानपूरासे सब काम निकालना चाहते थे। गृहिणी अप्रसन्न होती थी तो वह तानपूरासे ही उसका मान भंग करना चाहते थे, मनका भाव छिपानेके लिये, क्रोध, प्रसन्नता और विषादके समय

तानपूराको ही लेकर वह खींचा तानी करने लगते थे । इसी प्रकार सुख-दुःख काम-काजके समय भी सब झोंक विचारे तानपूराको ही सहना पड़ता था । परन्तु आज न जाने क्यों तानपूराने भी उनका साथ न दिया । वह जितना ही उसका कान पकड़कर उसमें स्वर लाना चाहते थे, उसके तार उतना ही घन-घन पट-पट करके टूट जाते थे । उसकी इस आवाजसे भोलानाथ लज्जित होकर सबके मुँह की ओर देखने लगते थे और फिर झटपट तार चढ़ाने लगते थे । परन्तु इस प्रकार अधिक समय तक न कर सके, उन्होंने देखा कि चारो ओर हँसीका स्रोत बह रहा है, थोड़ी ही देरमें वह बड़े बेगसे उनके ऊपर आ गिरेगा । तरवारसे भी बढ़कर इस हँसीके आक्रमण से वह डरते थे । इसलिये इसी प्रकार डरते हुए सुरा बेसुरा तान-पूराको बाँधकर गीत गाने लगे । परन्तु वह गीत गा न सके । मुँह बाकर वह महम्मदकी ओर एक टक देखने लगे । यह दृश्य ऐसा अद्भुत हुआ कि महम्मद भी भोलानाथकी व्याकुलताका अनुभव करनेमें असमर्थ होकर हँस पड़े । इसपर भोलानाथने भी हँसनेकी चेष्टा की, परन्तु सिर मुकाकर रोने लगे । उन्हें ऐसा जान पड़ा कि शायद वह महम्मदकी ऐसी हँसी फिर और न देख सकेंगे । उसके चारो ओरसे खुली हुई हँसीका स्रोत उमड़ आया । बन्धु-बान्धव ठठाकर हँस पड़े । भोलानाथने घबड़ाकर तानपूरा रख दिया और फिर सिरपर हाथ फेरते हुए उठकर चले गये । उनके चले जानेपर भी कुछ देर तक हँसीका ठहाका होता रहा । ऐसी घटना आज नयी नहीं है, भोलानाथ प्रायः ऐसा कर बैठते थे ।

भोलानाथ घर आकर भी थोड़ी देर तक तान पूरा बजाकर, थोड़ी देर तक सिर पर हाथ फेरकर और कुछ देर तक गृहिणीके साथ झगड़ा टंटा करके यही सोचते रहे कि सलाउद्दीनका विवाह किस उपायसे रोका जा सकता है। बहुत चिन्ता करनेके बाद एक उपाय उन्हें सूझ पड़ा। सवेरा होते ही वह अमीरखाँके घर पहुँचे। द्वार बन्द था। बहुत पुकारनेके बाद एक स्त्रीने आँख मलते हुए आकर द्वार खोला। उत्तम-मध्यम बहुत सी बातें सुनाकर उसने कहा—मरनेके लिये क्या और कोई जगह नहीं थी जो इतने सबेरे यहाँ आये हो ?

भोलानाथ इसका क्या जवाब देते। वह बारबार ऐं ऐं करने लगे और सिरपर हाथ फेरने लगे। अन्तमें सिरपर हाथ रखकर उन्होंने कहा—रानी बीबी, क्रोध न करो, बड़ी आवश्यकता होनेसे मैं एक बार अमीरसे मुलाकात करनेके लिये आया हूँ।

यह सुनकर उस स्त्रीने कुछ नर्म होकर उत्तर दिया—साहबसे क्या अभी मुलाकात हो सकती है? वह तो दस बजे सोकर उठते हैं।

भोलानाथ—मुझे यदि थोड़ी बैठनेकी जगह दे दो तो मैं दस बजे तक बैठा रहूँगा।

स्त्री—अच्छा तब आओ।

भोलानाथ उसके साथ एक घरमें जाकर बैठ गये। किसी प्रकार एक पहर बीत गया। और कितनी देर इसी तरह बैठना होगा, यह सोच ही रहे थे कि उस समय कासिम भी वहाँ आगया। उसे भी अमीरसे कुछ काम था। थोड़ी देर बाद अमीरने स्वयं

आकर दर्शन दिया। भोलानाथको देखकर उसने आश्चर्यसे अभिवादन करके कहा—उस्तादजी, आज आप कहाँसे भूल गये ? मिजाज शरीफ ?

भोलानाथ—दोस्त साहब ! तुम लोगोंने मिलकर मेरे मिजाजको तो दफा-रफाकर दिया, अब शरीफ कहाँसे होगा।

अमीर—क्यों-क्यों ? ऐसी बात क्यों कहते हैं ? हम लोग तो इसीलिये चार-बार नमाज पढ़ते हैं।

भोलानाथने इस बात पर ध्यान न देकर कहा—अच्छा मीर साहब ! आप परलोक तो मानते हैं न ?

अमीर—परलोक ? हाँ, शास्त्रमें यह बात लिखी है सही, परन्तु इस समय इससे क्या मतलब ?

कासिमने अपनी छोटी-छोटी दोनों आँखें आधी बन्द करके हूँ हूँ करके हँसने लगा और कहा—उस्तादजीके वहाँ जानेका शायद बन्दोबस्त होगया।

भोलानाथ—अरे भाई ! केवल मेरे ही लिए नहीं, वह बन्दोबस्त तो सभीके लिए है। इसीसे मैं कहता हूँ दोस्त साहब ऐसा काम क्यों करते हो जिसकी जवाबदेही यहाँ करना पड़े।

अमीर—कौन सा काम उस्तादजी ? किसकी जवाब देही ?

भोलानाथने उत्तेजित होकर कहा—नवाब साहबको मुन्ना बीबीसे छीनकर उनकी एक दूसरी शादी करनेका बन्दोबस्तकर रहे हो, क्या यह काम अच्छा है ?

कासिमखाँने कर्कश स्वरसे हँसकर कहा—दोदाई उस्तादजी,

ऐसी बदनामी न दीजिये । हम लोगोंने नहीं छोना है, बहुत दिन पहलेसे ही वह छिन गये हैं ।

अमीरने भी कहा—क्या इसी गुनाहके लिये खुदाके सामने जवाबदेही करना पड़ेगा ? शास्त्र (कुरान) में तो लिखा है कि शादी जितनी कर सको, करो ।

भोलानाथका मुहँ बन्द हो गया । उनकी बुद्धि लोप हो गयी । किस प्रकार इस दोषका गुरुत्व इनके मलिष्कमें प्रवेश करावें यह सोचने लगे । कासिमने कहा—क्यों उस्तादजी, तुम्हारे शास्त्रोंमें ऐसी शादी क्यों नहीं लिखी है ?

भोलानाथने चिढ़कर कहा—कौन कहता है ?—परन्तु इससे एक निर्दोषीका खून करना होगा, यह क्या सोच चुके हो ?

कासिमने उसी प्रकार हँसकर कहा—ऐसा खून तो अक्सर ही हुआ करता है, यह तो खुदाका फजल है । कितने पशु पक्षी बकरी और गाय रोज मारे जाते हैं, वह खून क्या खून नहीं है ? तुम लोग क्या ऐसा नहीं करते ?

भोलानाथने गायका नाम सुनकर कॉपते हुए 'राम राम' कहकर कानों पर हाथ धरकर धीरेसे कहा—इन सभी का हृदय पत्थरका है । इनके पास आना व्यर्थ हुआ । हे भगवन् !

अमीरने देखा कि बूढ़ेको कुछ अधिक चिढ़ाया जा रहा है । इतना चिढ़ानेकी कोई आवश्यकता नहीं है । उसने सोचा—बूढ़ेसे शागवकी तरह मोठी बातें कहकर कुछ मजाक किया जाय । उसने धीरे-धीरे बनाकर कहा—उस्तादजी, वाकईमें क्या इस शादीसे बहुत बड़ा

नुकसान होगा ? अगर मैं ऐसा जानता तो इस काममें हाथ न डालता ।

भोलानाथका उस समय सिरसे पैर तक जल रहा था—वह अपनेको सम्हाल न सके और कह उठे—नुकसान ! इससे बढ़कर नुकसान क्या कभी आज तक हुआ है ?

अमीर—ऐसी बात ? तब तो मैं किसी प्रकार भी इस शादीमें नहीं पड़ सकता, बताइये, बताइये, नुकसान क्या है जरा सुने तो सही ?

भोलानाथ मानो आपमें हो गये, उन्होंने सोचा कि अब भी भाशा है, इसलिये कहा—देखो, शादी हानसे बीबीजी (मुन्ना) न बचेंगी ।

कासिमने कहा—अजी आप तो बीबीजी बीबीजी करके पागल हो रहे हैं ! भला औरतोंकी बात ही कौन सो हें ? शास्त्र (कुरान) कहता है कि औरतें और जानवर समान हैं ।

भोलानाथने उसकी बातें समाप्त हाने न दी और क्रोधित होकर कहा—रहने दो अपना शास्त्र, ऐसा शास्त्र (धर्म-ग्रंथ) यदि हमारा होता तो उसे जलाकर गंगामें बहा देते । हमारा शास्त्र क्या कहता है उसे पहले सुनो—स्त्रियः श्रियश्च गेहेश्च न विशेषास्ति कञ्चन । स्त्रियाँ घरकी लदमी हैं । स्त्री और लदमामें कोई भी भेद नहीं है । आद्याशक्ति भगवती स्त्रियोंमें ही अधिवास करती हैं । जिस घरमें स्त्री नहीं, उस घरमें सुख और शांति भी नहीं है । स्त्रियाँ ही इस कठोर संसारमें आनन्दकी मूर्ति हैं ।

यह सुनकर छोटे दोस्तके गलेसे कर्कस हँसीका स्वर फूट पड़ा। उसने कहा—बापरे ! औरतोंकी जलनसे तो मैंने सब ऐश-आराम खो दिया है। सिर्फ मैंने ही नहीं, बल्कि तमाम दुनिया भरने। ऐसी बात अब और क्या कहें ?

भोलानाथने देखा कि मेरा कथन भैंसके सामने बीन बजानेके समान है। हमारे शास्त्रको वे लोग न समझेंगे, ऐसी जगह इन बातों को न कहना ही अच्छा है। इसलिये उन्होंने कहा—अच्छा बीबी-जीकी बात जाने दो। औरतोंकी तकलीफ नहीं समझते नहीं सही, परन्तु बीबीजीभी तकलीफ देखकर क्या मसीन साहब बचेंगे ?

अमीरने गम्भीर मुँह करके अपनी दाढ़ी हिलाकर कहा—हाँ, यह तो एक गौर करनेकी बात है।

इस सहृदयतासे भोलानाथ पिघल गये, उनकी इच्छा हुई कि वह अमीरको अपने गलेसे लगालें। उत्साहित होकर उन्होंने कहा—देखो कैसा सर्वनाश हो जायगा। मसीन साहब असहायोंके सहाय, अनार्योंके बन्धु हैं, उनके न रहनेसे पृथ्वीका एक अमृच्य रत्न खो जायगा।

अमीर—वेशक, ऐसा रत्न खो जानेपर दूसरा क्या मिल सकता है !

भोलानाथ मारे प्रसन्नताके फूल उठे। उन्होंने कहा—देखो, मसीन साहबका कुछ बुरा होनेसे भोलानाथ बचा रहेगा इसका ह्वप्रभे भी ख्याल न करना, उसकी मौत भी निश्चय होगी। और इस बुढ़ेके मरने पर बंगाल देशसे रागरागिनो एक प्रकारसे लोप ही हो जायगी। बंगालका एक पुराना स्तम्भ गिर जायगा, अब समझा ? इस विवाहसे कितना बड़ा नुकसान होगा ?

अमीरने यह सुनकर सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—वाकईमें पृथ्वीका निमक खाकर ऐसी निमक हरामी करना शैतानका ही काम है। ओफ ! कैसे खराब काममें मैंने हाथ डाला था। उस्तादजी, आपने पहले क्यों नहीं कहा ?

कासिमने भी हँसी रोककर कहा—उस्तादजी, आजसे आप हमारे गुरु हुए, आपके नाम पर दोनों वक्त मैं खुतबा पढ़ूँगा। किसीकी तालीम अब तक मेरे दिलपर असर न कर सकी थी।

अमीरने कहा—जो होना था वह हो गया, आओ भाई अब हम लोग अपना हाथ समेट लें, ओफ ! उस्तादजीके दिलपर चोट पहुँचती है। कल ही चलकर हम लोग शादी तोड़ दें !

भोलानाथके सरल हृदयमें इनकी बातों पर तनिक भी अविश्वास नहीं हुआ। वे समझते थे कि मनुष्य अनजान में ही पाप करता है, वे समझते थे कि मनुष्य चाहे कितना ही निष्ठुर और पापी क्यों न हो उसके हृदयमें कोई न कोई ऐसा स्थान अवश्य है जहाँ पर चोट मारनेसे अवश्य ही प्रभाव पड़ता है। भोलानाथने सोचा कि उन्होंने आज उनके हृदयके ऐसे ही मर्मस्थानमे चोट मारा है। वह प्रसन्नतासे गद्गद् हो गये। उनकी वक्तृत्व-शक्तिसे इतना बड़ा काम हो जायगा, इसका उन्हें स्वयं अनुमान नहीं था। वह उत्साह पूर्ण हृदयसे इसके बाद एक घण्टे तक जन्म-मृत्यु, पाप-पुण्य, यह लोक पर लोककी वक्तृता देकर उनके अनुताप-दग्ध हृदयको शीतल करके वहाँसे विदा हुए। उस समय उनके मनमें अपने प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया था। उनका हृदय ऐसा प्रफुल्ल हो गया था, कि यदि

मार्गमें कोई पापी-तापी मिलता तो उस पर अपनी वक्तृता झाड़कर उसका उद्धार कर देते। दुर्भाग्यवश यह आशा उनकी पूरी हो न सकी। परन्तु यदि उस समय आजकलकी तरह गति-मति संचारिणी, चतुर वर्ग फलप्रदायिनी बड़ी बड़ी सभा समितियाँ होतीं अथवा बहुत सस्ते, अति उत्तम समाचार पत्रोंके विज्ञापनकी धूम मची होती तो बड़े सहजमें ही उनकी यह आशा पूरी हो जाती। परन्तु भोलानाथ विवश होकर अपनी वक्तृता अपने ही हृदयमें रखकर घर लौट आये। घरमें पैर रखते ही उन्हें ध्यान हुआ कि आनेमें बहुत देर हो गयी, गृहिणी आज रुष्ट होगी। यह सोचते ही वक्तृताका ध्यान बिल्कुल उनके हृदयसे जाता रहा। धीरे-धीरे गृहिणीका मान-भंग करनेकी इच्छासे गीत गाते हुए उन्होंने अंतःपुरमें प्रवेश किया।

दसवाँ परिच्छेद

बात चीत

निस्तब्ध रात्रिमें ज्योत्सनामयी नदी तटपर खड़े होकर संन्यासीने महम्मदके प्रश्नोंके उत्तरमें कहा—इस जन्मके कर्मसे ही केवल यहाँका सुख दुख प्राप्त होता है यह बात ठीक नहीं है। शास्त्रमें लिखा है—“कर्मशायो दृष्टादृष्ट जन्म वेदनीयः” कर्मबीज दो प्रकारका है। एक वर्तमान शरीर द्वारा दूसरा गत जन्मोंके शरीरका।

महम्मदको ये बातें कुछ विचित्र जान पड़ीं। वे मुसलमान थे, पुनर्जन्मको हिन्दू-शास्त्रकी कल्पना मात्र समझते थे। लड़कपनसे ही यह विश्वास उनके हृदयमें जम गया था, परन्तु संन्यासीके मुखसे, जिसको वह विद्या बुद्धि और ज्ञानमे देव-तुल्य समझते थे, यह बात सुनकर चकित हो गये। उनके हृदयमें एक प्रकारकी चोट पहुँची। इस आघातका अनुभव-स्थल मनुष्यका हृदय नहीं है, मनुष्यका अहंकार है, इस वेदनाका जन्म-स्थल मनुष्यकी अज्ञानता है। परन्तु इस आघातसे उनके पूर्व विश्वासको जड़ भी हिल गयी। संन्यासीकी तरह ज्ञानवान और बुद्धिमान पुरुष जिसे सत्य समझते हैं वह बिल्कुल निर्मूल कैसे हो सकता है, यह संशय उनके हृदयमें उत्पन्न हो गया।

महम्मदने कहा—आप क्या हिन्दू हैं ? ऐसी बातें तो केवल हिन्दू लोग कहा करते हैं, परन्तु हमारे धर्म-शास्त्रोंमें तो ऐसी बातें नहीं लिखीं हैं।

संन्यासीने हँसकर कहा—मैं कैसे बताऊँ कि मैं हिन्दू हूँ अथवा नहीं। सब धर्मोंका सत्य मेरे निकट मान्य है। और सब धर्मोंकी मिथ्या बातें मेरे लिये त्याज्य हैं, इसलिये मेरे वंशका धर्म चाहे जो कुछ रहा हो, परन्तु इस समय तो तुम मुझे हिन्दू भी कह सकते हो और मुसलमान भी। परन्तु मुसलमान धर्म शास्त्रके सिवा और कहीं क्या सत्य नहीं रह सकता ? सब धर्म-शास्त्रोंमें सब प्रकारका सत्य कहाँसे मिल सकता है ? प्रत्येक शास्त्र एक-एक महात्माके ध्यान और चिन्ताका फल मात्र है—इसलिये सभी महात्माओंके ध्यानका विषय एक कैसे हो सकता है ? यदि एक हो भी तो सबको समान फल कैसे प्राप्त हो सकता है ? चिन्ताशीलता, एकाग्रता, प्रवृत्ति, स्वच्छंदता, दिव्यानुभूति इत्यादि, जिन जिन रास्तोंसे सत्यको पाया जा सकता है, सब शास्त्र-प्रणेताओंके लिये समान रूपसे उसपर अधिकार प्राप्त करना असम्भव नहीं है। इसलिये सभी शास्त्र-प्रणेता अभ्रान्त अथवा पूर्ण सत्यके अधिकारी नहीं हो सकते। इसके सिवा शास्त्रोंमें बहुत सा सत्य इस प्रकार रूपक अवस्थामें है कि, साधारण मनुष्योंके लिये उसका अर्थ समझना कठिन है। देखो, जैसे पुराणमें लिखा है कि सब मनुष्योंको एक दिन फिर सशरीर अपने कर्मोंका विचार करानेके लिए गोरसे उठना होगा, इसका यथार्थ अर्थ पुनर्जन्म ही है पर इस कै आदमी समझ सकते हैं ?

महम्मद—आपने जो कुछ कहा वह सत्य हो सकता है। किसी एक शास्त्रमें जो नहीं लिखा है वह दूसरे शास्त्रमें पाया जा

सकता है। परन्तु शास्त्रमें लिखा है केवल इसीसे तो इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता? वास्तवमें जन्म और पुनर्जन्मकी युक्ति कहाँ है? जिसकी कोई युक्ति नहीं, जिसका कोई प्रमाण नहीं, उस पर विश्वास कैसे करें?

दूसरोंकी दुर्बलता देखकर यदि संन्यासीको हँसी आती तो महम्मदकी इन बातों पर वह अवश्य ही हँस पड़ते। क्योंकि अभी महम्मद कह रहे थे कि मुसलमान शास्त्रोंमें जो बातें नहीं लिखी हैं वह सत्य कैसे हो सकती हैं? परन्तु हिन्दू शास्त्रके समय उनके मनमें यह शंका हुई कि शास्त्रमें जो लिखा है क्या उन सभी बातों पर विश्वास करना होगा?

संन्यासी—इसकी युक्ति अवश्य है। उसे दिखानेके लिए बहुत दूर नहीं जाना होगा। विचारकर देखो जो वस्तु कभी नहीं थी उससे कुछ उत्पन्न नहीं हो सकता, इसलिये यदि तुम आज हो तो कल भी तुम अवश्य थे, और भविष्यमें भी अवश्य रहोगे। विश्वका नियम यही है, जो असत्य है अर्थात् जो किसी समयमें भी नहीं था, उससे कुछ उत्पन्न नहीं होता और जो सत्य है, अर्थात् जो है, उसका विनाश नहीं होता। थोड़ेमें यह समझ लो कि प्रकृतिकी शक्ति-पुंजका हास और वृद्धि नहीं होती, केवल रूपान्तर मात्र होता है। इसलिये वस्तुमात्र ही अनन्त भविष्यके सहित बँधी है, इसमें उलटफेर नहीं होता। यहाँ पर मैं एक और हिन्दू शास्त्रकी बात बतलाता हूँ।

“अतीतानागतं स्वरूपतो हस्त्यध्वभेदात्तद्वर्माणाम्” जिसका

हम अतीत और अनागत अर्थात् मर गया, नष्ट होगया और जन्म लेगा कहकर उल्लेख करते हैं, वास्तवमें उसका प्रकृतिरूप जो है वह बना रहता है। केवल उसका धर्म, गुण और अवस्था परिवर्तित होती है।

महम्मद—मैं इसपर अविश्वास नहीं करता। आज मैं जिस शक्तिसे उत्पन्न हुआ हूँ वह शक्ति अनंत कालसे विद्यमान है इसमें सन्देह नहीं, परन्तु यह सुख-दुःख अनुभवशील, जीव वेपधारी मैं पहले भी था, इसे कैसे जान सकता हूँ ?

संन्यासी—शक्ति जिस प्रकार आविनश्वर है, शक्तिका काम भी उसी प्रकार नियमाधीन है। किसी विशृंखल-नियममें शक्ति काम नहीं कर सकती। जिस नियमसे शक्ति काम करती है, उसको क्रम विकास अथवा क्रमोन्नाति भी कह सकते हैं। जीवोंकी आकृति भी इसी नियमके अधीन है, तितली (प्रजापति) भी इसका एक दृष्टांत है। परन्तु प्रकृतिको समझ लेनेसे जान पड़ेगा कि जगतके समस्त पदार्थोंका भी यही लक्षण है। निकृष्ट सोपानसे बिना चढ़े एकाएक उत्कृष्ट जीवोंकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। यह नियम स्थूल-सूक्ष्म दोनों हो जगतके लिये समान है। क्योंकि प्रकृतिका मूल नियम विश्वव्यापी है; उसका फल सभीमें एक ही समान होता है। वास्तवमें स्थूल और सूक्ष्मका वस्तुगत प्रभेद नहीं है, एक ही शक्तिके विकासके भेदसे भिन्न-भिन्न रूप दिखाई पड़ता है। हमलोग जिसको जड़ कहते हैं, उसमें भी चैतन्य विद्यमान रहता है। पर वहाँ वह विकसित नहीं होता, मनुष्योंमें वह विकसित हो जाता है। जैसे एक गुलाबकी

कली और खिला हुआ गुलाब दोनों ही गुलाबके फूल हैं, उसी प्रकार जड़ और जीव दोनों ही चैतन्यमय हैं ।

उक्त चैतन्य, प्रकृति गत क्रम विकास नियमके अधीन होकर धीरे-धीरे उपयोगी और श्रेष्ठ आकृतिवाले उन्नति जीवोंके रूपमें आविर्भाव होते हैं । वास्तवमें जीवोंके गुण केवल बाहरी आकृति देखनेसे उसके जातिगत श्रेष्ठता और निकृष्टताका विचार नहीं हो सकता । जो जाति ज्ञान और बुद्धिमें पृथ्वीपर सर्वश्रेष्ठ हो उसी जातिकी आकृतिको हम उन्नतिपर पहुँची हुई समझते हैं । इसीलिये मनुष्य जाति जीव-जगतमें श्रेष्ठ समझी जाती है, उसमें भी आर्य्य जातिका रूप आदर्श समझा जाता है । उनका गौर वर्ण, उन्नत ललाट, उन्नत नासिका बड़ी-बड़ी आँखें और विशाल वक्षस्थल हम लोगोंके लिये सबसे अधिक दर्शनीय है । यदि जीवोंके क्रम विकासमें वानर रूप कोई देव जाति आविर्भूत होकर मनुष्य जातिको पशुकी तरह चलावे तो उस समय वह वानराकृति ही जीवाकृतिका उन्नत आदर्श होगा, इसमें सन्देह नहीं ।

उन्नतिके सोपानपर चढ़नेके लिये जीवोंको इसी प्रकार आकृति-पर आकृति, जन्म पर जन्म, अवस्था पर अवस्था धारण करना पड़ता है । इस नियमके विरुद्ध कोई शक्ति एकाएक श्रेष्ठ मनुष्य-रूपमें विकसित नहीं हो सकती । हिन्दू शास्त्र पढ़ो, तब तुम्हें दिखाई पड़ेगा कि उद्भिद, कीट, पतंग, पशु, पक्षी समस्त जीवमे भ्रमण करके मनुष्य जन्म प्राप्त होता है । एक श्रेणीके उन्नत-पदार्थसे दूसरा उससे उन्नत पदार्थ उत्पन्न होता है, नहीं तो प्रकृतिके नियमोंकी समानता नहीं रहती और सृष्टिमें भी व्यतिक्रम हो जाता है ।

यह कहते हुए संन्यासीने एक मुट्ठी धूल हाथमें उठाकर कहा—
 तुम समझते होगे कि मैं इस धूल राशिसे बहुत ऊँचा हूँ । तुम्हारे ऐसे
 जीवोंके पैरोंके नीचे रहकर तुम्हारे कार्योंमें जीवन बिताना ही इस
 धूलका मुख्योद्देश्य है, परन्तु हे गर्वित मनुष्य, तुम कैसे भ्रान्त हो !
 इस धूलिके प्रत्येक कणोंमें जो चैतन्य विद्यमान है वह तुम्हारी तरह
 उच्च मानव होनेके लिये अपेक्षा कर रहा है, और इसी प्रकारके एक-
 एक कणोंके चैतन्य होनेसे ही तुम्हारे हमारे ऐसे मनुष्योंका जन्म
 हुआ है । प्रत्येक मृत्तिका अणु, उद्भिद, पतंग और पशु पक्षीके अंतर
 निहित चैतन्यसे या शक्तिके उन्नत सोपानसे ही तुमने मनुष्य जन्म
 ग्रहण किया है । यह न सोचना कि तुम्हीं उन्नत हुए हो और सब
 योंही पड़े रहेंगे । यदि ऐसा होता तो इस सृष्टिका कुछ अर्थ ही न
 होता । जब अनेक युगोंके बाद तुम मनुष्यसे भी उच्चतर जीवमें
 परिणत होगे उस समय शायद आजकी यह धूल, मनुष्याकृतिके
 प्रथम सोपानपर पैर रख चुकेगी ।

अपनी बातें समाप्त करते ही संन्यासीने सोचा कि मैं अपनी
 स्वाभाविक गंभीरतासे कुछ दूर जा रहा हूँ, इसलिये उन्होंने तुरन्त
 ही अपने को सम्भालकर धीरेसे कहा—देखो वत्स, संसारकी ओर
 आँख उठाकर देखो । जीवनकी अद्भुत विचित्रता दिखाई पड़ेगी ।
 कोई जन्मसे ही कुसुम शैल्यापर लालित-पालित होता है, कोई एक
 मुट्ठी अन्नके लिये लालायित रहता है, कोई अपने सुकुमार रूपसे
 जगतको मोहित करता है, तो कोई अपने विकृत रूपसे दूसरेके
 हृदयमें घृणा उत्पन्न करता है; किसीकी बुद्धि जन्मसे ही पापमें लगी

रहती है और कोई पुण्ययात्माओंके यहाँ पुण्यमय जीवन लेकर जन्म लेते हैं। ये सब तो कोई भी वर्तमान जन्ममें अपने दोष या गुणसे इस प्रकार कष्ट या सुखके अधिकारी नहीं होते ? तब ऐसी घटना क्यों होती है ? देखो, एक पिता-माताके अनेक संतानके एक ही अवस्थामें लालित-पलित होनेपर भी उनमें कितना भेद रहता है, कोई रूप, वाक्य-गुणवान होता है और कोई कुरूप गुणहीन। यदि पूर्व जन्मके कर्मफलको नहीं मानते तो इसका कौनसा कारण दिखला सकते हो ? कहीं-कहीं हम लोग पिता-माताका कर्म फल संतानमें अर्पण करके दोषीका अपराध निर्दोषपर लादकर इस रहस्यका भेद करना चाहते हैं, परन्तु इससे प्रकृतिका रहस्य भेद होना तो दूर रहा वह और भी जटिल हो जाता है। ऐसा करनेसे प्रकृतिके नियमका अनियम और ईश्वरके विचारको हम अविचार बना डालते हैं। संसारमें सभी जगह हम कार्य और कारणका नियम देखते हैं, तब भला उसका मनुष्योंके ही लिये व्यक्तिक्रम क्यों होगा ? वास्तवमें जगतमें दैव कुछ नहीं है। सूत्र नियमोंसे ही संसार चल रहा है, उस नियममें हेर फेर करनेकी किसे सामर्थ्य है ? पूर्व जन्मके कर्मानुसार रुचि वासना और प्रवृत्तियोंके आकर्षणसे जीव भिन्न भिन्न अवस्थामें जन्म ग्रहण करता है। जैसे चैतन्य एक शक्ति है, वैसे ही कर्मफल भी एक शक्ति है, इसीका दूसरा नाम अदृष्ट या भाग्य है। चैतन्यका जिस प्रकार नाश नहीं होता, उसी प्रकार कर्मफलका भी बिनाश नहीं हो सकता; परन्तु दोनोंका रूपान्तर हो सकता है। लकड़ीमें आग लगनेसे जैसे वह नष्ट नहीं होती, केवल भस्म और

धुएँ के रूपमें बदल जाती है वैसे ही मनुष्य भी अपने कर्मसे अपनी स्वाधीन प्रकृति रूपी अग्निके संयोगसे अपने कर्मफलको उत्तमसे अधम अथवा अधमसे उत्तम बना सकता है। वर्तमान शुभ या अशुभ कर्मोंसे अपने जीवनके तराजूको भारी करके उसी परिमाणमें अतीत और भविष्यतको शुभाशुभा कर्मोंद्वारा हलका कर सकता है, और अपनी इच्छानुसार अपने सुख दुःख उन्नति अवनतिको घटा बढ़ा सकता है, अर्थात् अपने भाग्यको नियंत्रित कर सकता है।

महम्मद—इच्छानुसार ? गुरुदेव, मनुष्यकी इच्छामें कितना बल है ? वह जिसे अच्छा समझता है उसे भी वह कर नहीं सकता। सच पूछिये तो हम लोग प्रकृतिके वशमें हैं, और प्रकृतिके हाथोंके खिलौने हैं।

संन्यासी—इसमें सन्देह नहीं कि मनुष्यके स्वाधीन बुद्धिका विस्तार बहुत ही कम है। परन्तु तौ भी कुछ है तो सही। पशु और मनुष्यकी तुलना करके देखो, पशु भी कर्म करते हैं, प्रवृत्तिके अधीन होकर अपनी जीवन रक्षाके लिये अन्धेकी तरह वे भी काम करते हैं। उनके कर्मोंका भी फल मिलता है। दुष्ट घोड़ेको सजा मिलती है, अच्छे कुत्तेको सुख और आदर प्राप्त होता है। परन्तु चाहे थोड़ा हो या अधिक जहाँ भला-बुरा विचारनेकी सामर्थ्य होती है वहाँ उसी परिमाणमें उसे चुन लेनेकी भी क्षमता रहती है। यही हमारी स्वाधीन बुद्धि का प्रमाण है। मनुष्यकी यह स्वाधीन प्रवृत्ति भी क्रम विकास नियमके अधीन है। ज्यों ज्यों मनुष्योंमें चैतन्य शक्तिका विकास होता है, त्यों त्यों उसमें स्वाधीन प्रवृत्ति भी प्रस्फुटित होती है।

अर्थात् उसे स्वाधीनताके साथ काम करनेकी और भला बुरा सोचने की सामर्थ्य बढ़ जाती है। इसलिये उन्नतिके साथ ही साथ जीवोंके कर्मोंकी जिम्मेवारी भी बढ़ती जाती है। पूर्व जन्मोंके कर्मफलसे ही मनुष्य फिर इस पृथ्वीपर भिन्न-भिन्न अवस्थामें जन्म ग्रहण करता है।

महम्मदका हृदय इन बातोंको सुनकर स्तम्भित होगया, उनका बहुत दिनका विश्वास हिल गया। सत्य और असत्यके मिलनेसे उनके मनमें उथल पुथल मच गयी। उन्होंने कहा—तब क्या पृथ्वी ही हम लोगोंके लिये परलोक है ? स्वर्ग-नर्क क्या सब मिथ्या है ?

संन्यासी—एक प्रकारसे मिथ्या भी है, और एक प्रकारसे सत्य भी। मैंने जहाँ तक समझा है वहाँ तक मेरी समझमें स्वर्ग और नर्क कोई स्थान नहीं है, यह मृत्युके बाद आत्माकी एक दुःख सुख-मय अवस्था मात्र है। दिव्य ज्ञानी कहते हैं कि मृत्युके बाद देह-मुक्त आत्माका तुरन्त पुनर्जन्म नहीं होता। नवीनाकृति धारण करनेके पहले कुछ समय तक वह देह-मुक्त जीव अशरीरी सूक्ष्म अवस्थामें पहलेके जन्मोंका कर्मफल (सुख-दुःख) भोग करता है। सुख-दुःख भोगका अवसान होनेपर उसका फिर पुनर्जन्म होता है।

मसीन—भली प्रकार समझमें नहीं आया। एक बार फिर समझाकर कहिये।

संन्यासी—कर्म दो प्रकारका है—स्थूल और सूक्ष्म। हम शरीरसे जो कुछ करते हैं वह भी कर्म है और मनसे जो करते हैं वह भी। हमारा प्रत्येक काम, प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक चिन्ता और प्रत्येक ध्यान कर्म है। पर शरीरसे किया हुआ कर्म जो बाह्य जगत्

में कार्य्य करता है, वह स्थूल कर्म है; और चिन्ता कल्पना इच्छा ध्यान इत्यादि जो सूक्ष्म जगतमें कार्य्य करता है वह सूक्ष्म कर्म है। देह स्थूल है इसलिये इस देहसे पृथ्वीपर स्थूल कर्मोंका भोग जिस प्रकार रत्तीरत्ती मिलता है उसी प्रकार सूक्ष्म कर्मोंका भोग नहीं मिल सकता। इसीलिये जिन कर्मोंका दण्ड और पुरस्कार जीवित कालमें पृथ्वीपर नहीं मिल सकता, उसका फल मृत्युके बाद अशरीरी सूक्ष्म आत्मामय अवस्थामें भली प्रकार भोग करना पड़ता है। इसीलिये मेरो समझमें स्वर्ग और नर्क कोई स्थान विशेष नहीं है। आत्माकी एक अवस्था मात्र है। इसी सुख या दुःख भोगका अवसान होनेपर पुनर्जन्म होता है।

पाप भोगावसानेतु पुनर्जन्म भवेद् बहु।

पुण्य भोगावसानेतु नान्यथा भवित ध्रुवम् ॥

पाप भोगका अवसान होनेसे कर्मानुसार इस संसारमें जीवोंका बहु पुनर्जन्म होता है, उसी प्रकार पुण्यावसान होने पर स्वर्गसे गिरे हुए पुण्यात्मा पुरुषोंका भी बहु जन्म हुआ करता है, इसमें कुछ भी असत्य नहीं है।

पृथ्वीका यह क्षुद्र जीवन जो अनंत कालके तुलनामें एक क्षण मात्र भी नहीं है, उसके पाप पुण्यसे अनंत स्वर्ग और नर्कका भोग कैसे प्राप्त हो सकता है ?

मसीन—तब क्या यह लोक और परलोक स्वप्न है ? उच्च लोक, उन्नत लोक इत्यादि क्या आकाश-कुसुम है ?

संन्यासी—यह भी मैं कैसे कह सकता हूँ ? अनंत संसार-चक्र में पृथ्वी ही जीवोंकी एक मात्र गति कैसे हो सकती है ? जहाँ तक उन्नति करनेसे उन्नतिका सोपान उत्तीर्ण करके एक उच्च लोकमें पहुँचा जा सकता है वह एक जन्म मात्रमें प्राप्त नहीं हो सकता । जन्म जन्मान्तरमें हम लोग थोड़ा-थोड़ा ज्ञान प्राप्त करके कुछ-कुछ उन्नत हो सकते हैं । मनुष्य असम्पूर्ण जीव है, पग-पगपर वह गिरता है । इसलिये उन्नतिके सोपानपर जब वह एक पग आगे बढ़ता है तब दस पग पीछे हट जाता है । इसलिये यदि एक ही जन्ममें उसे उठना पड़ता तो वह कभी भी उठ न सकता । परन्तु हजारों बार उठता-गिरता पाप-पुण्यका ज्ञान प्राप्त करके दुर्बल जीव जिसमें बलवान होकर उच्च सोपानपर चढ़ सके, इसलिये प्रकृति देवीने उसे यह अगणित समय प्रदान किया है । आज जिसको हम गिरते देखते हैं उसके विषयमें यही समझना होगा कि अभी उसे ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ है । पाप-पुण्य जीवनके अलग-अलग दो रास्ते हैं । पापके बाद पुण्यका संचार होता है, पुण्यके बाद पाप-भाव भी मनमें उदय होता है । इसलिये पापियोंको देखकर घृणा न करो । कौन कह सकता है कि उन्हीं पापियोंमें हम भी एक पापी नहीं हैं ? कौन जान सकता है कि उन्हीं पापियोंमेंसे कोई हमसे भी ऊँचे न उठ सकेगा ।

महम्मदके सामने मानो एक विशाल सत्यके राज्यका द्वार खुल गया, परन्तु जैसे अन्धकारसे उजालेमें आनेसे आँखोंमें चकचौंध लग जाती है, उसी प्रकार उन्हें भी जान पड़ा । संन्यासीने फिर कहा—जैसे अगणित युग-युगान्तरोंके बाद अनेक ग्रहोंमें, असंख्य

योनियोंमें भ्रमण करके तुम मनुष्य हुए हो, उसी प्रकार न जाने कितने युगोंमें, धीरे-धीरे उन्नतिके अगणित सोपानोंपर चढ़ते हुए दूसरे उच्च लोकके योग्य उन्नत अवस्थामें पहुँच सकोगे। असल बात यह है कि पृथ्वी जीवोंको जिस परिमाणमें उन्नत कर सकती है, उसी उन्नत परिमाणमें न आनेसे मनुष्यको दूसरा लोक प्राप्त नहीं होता। जैसे जीव-जातिमें मनुष्य इस समय श्रेष्ठ जाति है, उसी प्रकार मनुष्योंकी भविष्य-उन्नतिकी श्रेष्ठ कल्पनाका नाम देव-जाति है।

मदम्मद—तब इस लोकमें मुक्तिका क्या अर्थ है ?

संन्यासी—दुःखसे छूट जाना ही मुक्ति है। निष्काम धर्म ही उसका मार्ग है।

महम्मद—मनुष्य निष्काम कैसे हो सकता है ?

संन्यासी—निःस्वार्थ और निर्लोभ होकर, केवल अपना कर्त्तव्य समझकर, जो काम किया जाता है उसे निष्काम कर्म कहते हैं। तृष्णा और वासनासे जो काम किया जाता है उसे सकाम कर्म कहते हैं। पर जब कि प्रत्येक चिन्ता तक कर्म है तब मनुष्योंके लिये बिल्कुल कर्महीन होना असम्भव है। हिन्दू-शास्त्रमें श्रीकृष्ण कहते हैं—कदाचित् किसी अवस्थामें भी ज्ञानी अथवा अज्ञानी बिना कर्म किये नहीं रह सकता। इसलिये पूर्णरूपसे चित्त-शुद्धि और ज्ञानोत्पत्ति जब तक न हो जाय तब तक जाति और आश्रम-विहित कर्म सबको करना चाहिये। क्योंकि चित्त-शुद्धिके अभावके कारण ज्ञानकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। उन्नति प्राप्त करनेके लिये कर्म करना ही आवश्यक है, पर वह कर्म जितना ही निष्काम और निःस्वार्थ रूपसे

होगा उतना ही दुःख कम होगा । तृष्णा ही सब दुःखोंकी जड़ है । इसलिये तृष्णा-रहित निष्काम कर्म हो मुक्तिका उपाय है ।

यह कहते-कहते संन्यासीने देखा न जाने कौन उनकी ओर आ रहा है । उन्होंने कहा—वत्स, आज जाता हूँ, आवश्यकता होने-पर फिर आऊँगा । दुःखसे कभी व्याकुल न होना, दुःख ही सुखोंका कारण है । एक बात और तुमसे आज यह कहनेके लिये मैं आया था कि तुम्हें मक्का जानेकी आवश्यकता नहीं है । कराची जानेसे ही तुम्हें पिताका दर्शन हो जायगा ।

यह कहकर छायाकी भाँति संन्यासीकी वह देव-मूर्ति विलीन हो गयी ।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

परित्याग

पहले कह चुके हैं कि मताहर और महम्मद मसीन व्यवसायी आदमी हैं, चलानीका काम करते हैं। कुछ दिनोसे इन्हें व्यापारमें बराबर घाटा हो रहा है। इस समय उनपर भारी विपत्ति आ पड़ी है, उनके दो जहाजोंका कुछ पता नहीं है। हिन्द-महासागरमें एक बहुत बड़ी आँधी आयी थी, लोगोंका अनुमान है कि दोनों जहाज समुद्रमें डूब गये। यदि वास्तवमें जहाज डूब गये हों तो उन्हें सर्वस्व खाना पड़ेगा। इतना देना हो जायगा कि दूसरे जहाज और सम्पत्ति आदि बिना बेचे ऋण-परिशोध न होगा। इस समय इनके दिन बिगड़े हुए हैं, इसलिये जहाजका डूबना ही अधिक सम्भव जान पड़ता है। पर इसी व्यवसायसे उनका काम चलता है। मसीनको विश्वास था कि सलाउद्दीन चाहे सब धन उड़ा डाले फिर भी मुन्नाको कष्ट न होगा। परन्तु उनके इस विश्वासपर भी आघात पहुँच रहा है। मसीन एक ओर सम्भालते हैं तो दूसरी ओर विपत्ति आ पड़ती है, इसलिये मसीनके निर्भय हृदयमें भी भविष्य-अमंगलकी आशंका उत्पन्न होगयी।

सन्ध्याका समय है, एक बड़े घरके कोनेमें एक दिया टिमटिमा रहा है। दोपहरको पानी बरस गया था; रह-रहकर ठंडी हवाका झोंका आकर क्षीण प्रदीपको बुझानेकी चेष्टा कर रहा है। बाहर

मेढ़ककी 'टर्रटर्र' आवाज और भोंगुरकी भनकारसे यह सुन-सान घर और भी सूना जान पड़ता है। मुन्ना इस सुन सान घरके एक ओर दूटे हुए बाजेकी तरफ पड़ी है। इस दूटे बाजेके तारपर जब-जब आघात होता है, तब-तब वह और भी बेसुरा बजने लगता है। मुन्नाके मनमें जो विचार उठ रहे हैं वे उसे और भी कष्ट दे रहे हैं। आज उसके हृदयमें एक अस्वाभाविक चिन्ता और यातना हो रही है। आज महम्मदकी मजलिस नहीं बैठी, सन्ध्यासे ही वे मुन्नाके पास बैठे हैं। मुन्नाकी व्यथा देखकर वह अपना सब काम भूल गये हैं। संसारकी सब विपत्ति उनके लिये तुच्छ होगयी है। वह सोचते हैं कि मुन्नाका प्रसन्न मुख देखनेसे ही उन्हें सैकड़ों राज्यका सुख प्राप्त हो सकता है, संसारकी सब विपत्तिको हटाकर वह आगे बढ़ सकते हैं। परन्तु महम्मद नहीं जानते कि कैसे मुन्नाके हृदयका दुःख दूर किया जा सकता है। उसके सिरहाने बैठकर स्नेहसे उसके बालोंको सुधारते हुए इधर-उधरकी बातें कहने लगे; परन्तु जब उन्होंने देखा कि मुन्नाको यह अच्छा नहीं लगता, तब चुप होगये। बहुत देर तक इसी प्रकार चुपचाप बैठे रहे। अंतमें एक दीर्घ निःस्वाँस लेकर वह खड़े होगये। खूँटीसे एक सितार उतार उसे बजाते हुए धीरे-धीरे कुछ गाने लगे। शायद उन्होंने सोचा होगा कि मुन्नाका मन गीतकी ओर आकृष्ट होनेसे कुछ कष्ट कम हो जायगा। वह सितार बजाकर गीत गाने लगे; मुन्ना उनके मुँहकी ओर चुपचाप देखने लगी। वह साचने लगी कि लोग कैसे गीत गाते हैं और आनन्द करते हैं ?

एक दिन था, जब मुन्नाको भी गीत अच्छी लगती थी।

संगीतके मधुर स्वरसे वह मुग्ध हो जाती थी। एक साधारण बातसे उसके हृदयमें सुखका स्रोत बहने लगता था। परन्तु इस समय ये भाव उसके हृदयसे दूर हो गये हैं। पुरानी याद यदि क्षणभरके लिये उसके हृदयमें सुखका संचार कर देती है, तो साथ ही हृदयमें एक प्रकारका विचार आकर अधिकार कर लेता है। वह सोचती है कि किसी समय एक गीत सुनकर, एक कविता पढ़कर हृदयमें आनन्दका स्रोत कैसे बहने लगता था ? जब किसीको वह हँसते और खुशी मनाते देखती है तो उसकी पूर्व-स्मृति जाग उठती है और वह सोचती है कि क्या इसी प्रकार चिरकाल-पर्यन्त इसकी प्रसन्नता रहेगी ? मुन्नाकी अवस्था केवल २२ वर्षकी है। वह इसी अवस्थामें ही संसारको लड़कोंका खेल समझती है। मुन्ना प्रति दिन जो सब सांसारिक काम करती है उसे भी वह खिलवाड़ समझती है। उसके हृदयमें कभी-कभी एक अस्वाभाविक गम्भीर भावका उदय होता है। वह उसी भावमेंसे विश्वसंसारको देखती है। परन्तु जब मसीनके संगीतका मीठा स्वर उसके हृदयको स्पर्श करने लगा, उसके मनका भाव धीरे-धीरे परिवर्तन होने लगा। मसीनकी इच्छा-शक्ति अथवा गीतसे उत्तेजित होकर मुन्नाके मुखपर हँसीकी रेखा दिखाई पड़ने लगी। मुन्नाके उदास हृदयमें सुखकी छाया पड़ने लगी पर उसी समय किसीने पीछेसे आकर कहा—वह चले गये अब न लौटेंगे।

सितार बन्द हो गया, गीत थम गयी। निस्तब्ध गृहमें यह प्रश्न उठने लगा—कौन गया—कहाँ गया—फिर लौटकर कौन नहीं आवेगा ?

दासीने कहा—नवाब साहब अपना विवाह करने चले गये, अब यहाँ पर न आवेंगे ।

पत्थरको भी पिघलानेवाली ये करुणा-पूर्ण बातें सुनायी पड़ने लगीं—वह चले गये ! चले गये ! एक बार कह भी नहीं गये । एक बार भेंट भी नहीं की ।

इसके उपरान्त भीषण निस्तब्धताने उस घरपर अधिकार जमा लिया ।

बारहवाँ परिच्छेद

अकेले

चार दिन व्यतीत हो चुके हैं, मुन्ना उसी घरमें एक किनारे बिछौने पर छिन्नलताकी तरह मुर्झाई हुई पड़ी है। सन्ध्याका समय है उसी दिनकी तरह दीपक टिमटिमा रहा है, मसीन चुपचाप बैठे हुए मुन्नाके मुखकी ओर देख रहे हैं। उसका म्लान मुख और घँसी हुई आँखें देखकर एक अव्यक्त वेदनासे उनका हृदय व्यथित हो रहा है। उन्हें ऐसा जान पड़ता है कि जो सुख चला गया है वह अब न लौटेगा। उनका हृदय दुःखसे व्याकुल हो रहा है। बार-बार दीर्घ स्वाँस लेकर जब वह घरके चारो ओर देखते हैं तो उन्हें यह घर श्मशानपुरीकी तरह दिखाई पड़ता है। सलाउद्दीनकी निष्ठुरता और नीचताकी जब उन्हें याद आती है तब उनका हृदय क्रोधसे पूर्ण हो जाता है, पर थोड़ी ही देरमें वह क्रोध गम्भीर दुःखमें परिवर्तन हो जाता है। उनकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। अश्रु-पूर्ण नेत्रोंसे वह मुन्नाकी ओर देखकर फिर सोचने लगते हैं—वह दिन कहीं गया ? जिस दिन यह बालिका मुन्ना सुखकी छवि बसंतकी वायु बहाती हुई इस घरसे उस घरमें दौड़ती और खेलती हुई स्वर्ण हँसकर अपने पिताको हँसाती थी ? महम्मदके गलेमें लिपटकर उससे कहानी सुनती थी ? स्नेह, प्रेम, सुख-शांति मय वह निर्मल हृदय कहीं गया ? ऐसी कितनी ही चाँदनी रातमें वे तीनों, पिता पुत्र

और बहन, एक साथ बागमें बैठकर बातचीत करते थे ? मुन्ना कभी पिताकी गोदमें, कभी मसीनकी गोदमें सिर रखकर सो जाती थी । चाँदनी रातमें सोई हुई उस बालिकाकी छवि मसीनके हृदयमें आज दिखाई पड़ रही है । भाई बहन बागमें घूमते हुए प्रातः काल गुलाबके एक वृक्षमें जब दो फूल खिलते देखते थे, संध्या समय आकाशमें जब एक साथ दो ताराओंको उगते देखते थे, तब उनके मनमें यह विचार उत्पन्न होता था कि हम दोनों भाई बहन भी इन फूलोंकी तरह, उन्हीं ताराओंकी तरह एक ही साथ खिलते हुए एक ही साथ अस्त हो जायेंगे । पर ऐसा क्यों नहीं हुआ ?

कौन कह सकता है कि ऐसा क्यों नहीं हुआ ? सुखका प्रभाव जब बीत जाता है, चाँदनी रात जब चली जाती है, तब वे फूल मुझसे जाते हैं और मलिन हो जाते हैं । परन्तु इस प्रभातकालमें ही फूल क्यों नहीं फ़र जाते, उस ज्योत्स्ना-मयी रात्रिमें ही तारे क्यों नहीं अस्त हो जाते ?

यह सोचते-सोचते पूर्ण स्नेहसे मसीनने मुन्नाके मस्तकपर हाथ रखा । हाथ रखते ही मुन्नाने चौककर एक बार उनकी ओर देखकर निराश स्वरसे कहा—कौन ? मसीन ! इसके बाद फिर उसने तकियामें मुँह छिपा लिया, मानो मुन्नाने जिसको देखनेकी आशा की थी उसे न देख सकी ।

मसीन मुन्नाके हृदयका भाव समझ गये, उनके हृदयमें जो आशा छिपी थी वह भी जाती रही । उन्होंने सोचा कि मुन्नाके विषादमय जीवनके इस अनंत रात्रिके प्रभात होनेकी आशा नहीं

है। यद्यपि मेरा स्नेह समुद्रकी तरह विशाल है तो भी मुन्नाका हृदय उससे शीतल न हो सकेगा। अपना प्राण देकर भी वह उसका दुःख दूर न कर सकेंगे; क्योंकि कष्टरूपी बिजलीने उसका हृदय जला दिया है।

मसीनके इस कष्टमें अभिमान छिपा था कि नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। यदि हो भी तो वह इतना सामान्य था कि उसे मसीन स्वयं भी नहीं अनुभव कर सके। उनके मनमें केवल इसी बातका दुःख था कि वह मुन्नाकी सुख शांति लौटा न सकेंगे।

मनुष्य जिसे पाता है उसे क्यों नहीं चाहता ? जिसे चाहता है उसे क्यों नहीं पाता—संसारका यह रहस्य कौन समझा सकता है ? मसीन मुन्नाकी आँखोंका आँसू अपना जीवन देकर भी पोंछना चाहते हैं, परन्तु उनके इस स्नेहकी असीमतासे मुन्नाका हृदय पूर्ण नहीं हो सकता। और जिसके हृदयमें मुन्नाके लिये एक बूँद भी स्नेह नहीं है, उसके हृदयका एक बूँद स्नेह पानेके लिये मुन्नाका हृदय व्याकुल है।

रात बीतने लगी, बाँसके जंगलसे सियारोंकी आवाजका आन कम होगया। ख़ाँजहाँख़ाँके नौबतखानेसे मुल्तान राग बजकर निस्तब्ध होगया। मसीन अब भी मुन्नाकी ओर देखते हुए सोच रहे थे कि क्या करनेसे पहलेका दिन लौट सकता है, और मुन्नाका म्लान मुख खिल सकता है ?

रात और भी अधिक होगयी, खिड़कियोंसे जो तारे दिखाई पड़ते थे वे हट गये, गंगाके उस पार वनमें एक कोयल एक बार

बोल उठी। महम्मद फिर भी यही सोचते रहे कि कौनसा उपाय करनेसे मुन्ना सुखी होगी ? सोचते-सोचते एक बार उन्होंने धीरेसे पुकारा—मुन्ना !

महम्मदकी इस व्याकुल कण्ठध्वनि मुन्नाके विषादमय हृदयमें प्रवेश किया। मुन्नाने मुँह उठाकर चकित दृष्टिसे उनकी ओर देखा। मसीनका उदास मुख देखकर उसके हृदयमें अनुताप भर गया। उसने सोचा कि—छि, छि, मैंने क्या किया, एकबार मैंने मुख उठाकर भी मसीनकी ओर नहीं देखा, उनका दुःख मैं बिल्कुल भूल ही गयी थी !

मुन्ना धीरे-धीरे उठकर बिछौनेपर बैठ गयी। महम्मदका दोनों हाथ अपने हाथमें लेकर उसने व्याकुल स्वरसे कहा—मसीन, भाई मेरे, मेरे लिये तुम कितना कष्ट उठाओगे ? मुझे छोड़ दो। मैं कहीं चली जाऊँ। मेरे रहनेसे तुम्हारे कष्टका छुटकारा नहीं है। न जाने मैं कैसी अभागिनी हूँ कि मेरे स्पर्शसे हँसा भी आँसू बन जाती है।

महम्मदने करुण स्वरसे कहा—मुझे किस बातका कष्ट है मुन्ना ? मैं तो दिनभर हँसता खेलता रहता हूँ, पर तेरा कष्ट देखकर यदि कभी मेरी आँखोंमें आँसू आ जाते हैं, तो क्या तू उसे कष्ट कहेगी ?

मुन्ना—तुम मेरे लिये दुःख क्यों उठाते हो ? मैंने तुम्हारे लिये ऐसा क्या किया है जिसके लिये तुम दुःख उठाओ ? मैंने जिसको प्राणसे भी बढ़कर प्यार किया था, उसने तो मेरे लिये एक बूँद भी आँसू नहीं गिराया ! उसने तो मेरी ओर एक बार आँख उठाकर भी नहीं देखा ! मैं तो उससे और कुछ नहीं चाहती थी, एक बार

दिनभरमें किसी समय उसका दर्शन कर आती थी, पर मेरा इतना मुख भी उससे सहा नहीं गया !

मुन्ना क्या कहना चाहती थी पर उसने क्या कह डाला ! मसीन उत्तेजित स्वरसे “पाषाण, पाषाण” कह उठे । वह और भी कुछ कहना चाहते थे, परन्तु मुन्नाके हृदयमें चोट लगेगी, यह सोचकर रुक गये । परन्तु यह बात भी मुन्नाको अच्छी न लगी । आँसू पोछकर मुन्नाने कहा—उनका कुछ दोष नहीं है । वह तो पहले बहुत अच्छे थे । पतिका प्रेम मेरी तरह कितनी स्त्रियोंको प्राप्त होता है ? अपनी मूर्खतासे मैंने सब खो दिया । दोष मेरा ही है । यदि मैं उस समय समझ-बूझकर चल सकती तो ऐसा न होता ।

सलाउद्दीनने पहले-पहले जब शराब पीना आरम्भ किया था, उस समय मुन्ना उनके साथ जैसा व्यवहार करती थी, वह सब उसे याद आने लगा । उसे आत्मग्लानि होने लगी । उसे जान पड़ा कि मेरे दोषसे सलाउद्दीन इतनी बुरी हालतमें पहुँच गये । पहले पहल रातको जब सलाउद्दीनको अन्तःपुर आनेमें कुछ विलम्ब हो जाता था या उनके मुँहसे शराबकी दुर्गन्ध आती थी तो मुन्ना रोती हुई अपना मुख फेर लेती थी, बहुत विनती करनेपर भी वह उनसे न बोलती थी । इस प्रकार उसने उनका जीवन असह्य कर दिया था । धीरे-धीरे इस प्रकार मान करना भी जाता रहा, और सलाउद्दीनसे आदर पानेकी आशा भी जाती रही । अब यदि भेंट होती थी तो और कोई बात-चीत न करके केवल उपदेश देती हुई उनका दोष ही मुन्ना दिखाती थी । उनके घृणित चरित्रकी ओर उँगली दिखाकर

मुन्ना उनके हृदयमें केवल कष्ट ही बढ़ाती थी। इससे चिढ़कर वह धीरे-धीरे अपने स्त्रीका संग त्यागकर, दूसरे प्रकारका ऐश और आराम खोजनेमें बाध्य हुए। इसमें दोष किसका अधिक है ? अवश्य ही मुन्ना का।

मुन्नाकी बातोंसे उसके सरल हृदयका निष्कपट हृदय विश्वास प्रकट हुआ, इससे महम्मद और कुछ न कह सके। उन्होंने केवल इतना ही कहा—दोष किसीका नहीं है, दोष विधाताका है। इस प्रकार पवित्र और कोमल हृदयमें कष्ट देकर उनका कौनसा उद्देश्य सिद्ध हो रहा है इसे वही जानते होंगे।

कुछ देर शान्ति रही। इसके बाद मसीनने कहा—मुन्ना, मैं पिताका बुलाने जाऊँगा।

यही बात वह पहले कहना चाहते थे। मुन्नाके दोनों आँखोंसे आँसू बहने लगे। ऐसे स्नेह की, ऐसे आत्म विसर्जनकी मर्यादा मुन्ना समझ न सकी। ऐसे प्रेमसे भी मुन्ना सुखी न हो सकी। मुन्नाने व्याकुल हाकर कहा—भाई ! पिता कहाँ हैं, उनको कहाँ पावेंगे ? हम लोगोंका क्या और कोई है, मसीन ?

मुन्नाकी इन बातोंमें कितनी निराशा, कितनी शून्यता भरी थी ! परन्तु न जाने क्यों इन निराश बातोंमें भी मसीनको आशा छिपी हुई दिखाई पड़ी। उन्हें विश्वास हुआ कि पिताको लौटा लानेसे मुन्ना फिर सुखी हो सकेगी। महम्मद इस आशासे उत्साहित होकर कहने लगे—मुन्ना, पिता चाहे जहाँ होंगे। मैं उन्हें अपने साथ लिवा लाऊँगा।

मुन्नाके लिये इसके सिवा और दूसरी सुखकी कौन सी आशा हो सकती है ? पिताके स्नेहमय गोदमें आश्रय पानेसे वह अपना दुःख भूलकर शांतिसे एक बार सो सकेगी । परन्तु पिता क्या अब आवेगे ? यदि आवें भी तो क्या फिर वह संसारके इस मोह-जालमें फँसकर अपनी शांति भंग करेंगे ? और मसीनको जिन्होंने मुन्नाके लिये न जाने कितना कष्ट उठाया है, अपने सुखके लिये देश-देशान्तरोंमें भेजना क्या उचित होगा ? मुन्नाने मसीन की ओर देखकर कहा—नहीं भाई, मैं तुम्हें भेज न सकूँगी ।

मसीनने मुन्नाकी बात पूरा न होने दिया । उन्होंने कहा कि मुन्ना ऐसा करनेसे मुझे कष्ट होगा, मुझे रोक मत, मेरे सुखकी आशा भङ्ग न कर ।

मुन्नाने मसीनको हृद-प्रतिज्ञा और उत्साहित देखा । उसने उनके बदास चेहरेपर प्रसन्नताका चिन्ह और आशाका विकास देखा । उनकी यह आशा उसे मरिचीका सी जान पड़ी । उसने सोचा कि पिता अब लौटकर इस अँधेरे घरको किंचित प्रकाशित करेंगे, इसकी आशा नहीं । परन्तु महम्मदकी आशा भंग करना भी वह नहीं चाहती थी । इसलिये वह किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ होकर चुप रह गयी ।

मुन्नाके पास रहनेसे मसीनको सुख प्राप्त न होगा, यह मुन्ना जानती थी । इस शमशान-अग्निके निकट, जो आवेगा वही सूख जायगा । इस अग्निको आदरके साथ जो कोई छुएगा वही जल जायगा । तब क्यों मुन्ना मसीनको यहाँ रहनेके लिये आग्रह करना चाहती है ? दूर देशोंमें वन और पर्वतोंपर भी मसीनको इतना कष्ट

नहीं हो सकता जितना उन्हें यहाँ हो रहा है। मुन्नाने सोचा कि इस तम मरुभूमिको छोड़कर मसीन जिस दिन प्रकृतिके शीतल-श्यामल सौंदर्य राज्यमें पदार्पण करेंगे उस दिन मसीनके निर्मल हृदयमें सुखका प्रभात उदय होगा। निर्मल आनन्दसे उनका हृदय प्रफुल्लित हो जायगा, यह सोचकर मुन्नाने कहा—अच्छा तब ऐसा ही करो।

रात्रि और भो गम्भीर हुई, आशा-पूर्ण हृदयसे मसीन वहाँ खेचले गये। मुन्ना अकेली उस निर्जन घरके झरोखेमें खड़ी होकर निस्तब्ध प्रकृतिको सुना-सुनाकर मानों कहने लगी 'अच्छा तब ऐसा ही करो।' हाथ जोड़कर सजलनेत्रोंसे बार-बार आकाशकी ओर देखती हुई कहने लगी—'अच्छा तब ऐसा ही करो।' भगवन् ! एक बार इस दुखियाकी प्रार्थना स्वीकार करो। पिताका शांतिमय मुख मैं एक बार और देख सकूँ, आताके नवीन हृदयकी प्रफुल्लता फिर देख सकूँ।

तेरहवाँ परिच्छेद

खाँ जहाँखाँ

लोगोंका नाम कई प्रकारसे अमर हुआ करता है। अकबर शाहका नाम भी अमर है, और सिराजुद्दौलाका नाम भी। बारेनहेस्टिंगसको भी भारतवासी भूले नहीं हैं, और लार्ड रिपनको भी नहीं भूलेंगे।

हम जिस समयकी बातें लिख रहे हैं, उस समय हुगली शहरके पास दो मनुष्य विचरण कर रहे थे, एक आडम्बरहीन त्यागकी मूर्ति महम्मद मसीन और दूसरे राज्य क्षमताशाली नवाब खाँ जहाँखाँ। इन दोनोंका ही नाम अब तक हुगलीवासियोंके हृदयमें अंकित है। पर भेद दोनोंमें इतना ही है कि, एक स्मृति वसंतकी सुगंधित वायुकी तरह हृदयको प्रफुल्लित करती है और दूसरेकी फूलके काँटेकी तरह हृदयमें चुभती है।

केवल हुगलीमें ही नहीं, बंगदेशके अनेक स्थानोंमें अब भी नवाबका नाम सुनाई पड़ता है। यदि कोई बालक इत्र लगाकर साफ चुनी हुई धोती और कपड़े पहनकर शौक्रीनी करता है तो तुरंत उसके वृद्ध आत्मीय लोग कह उठते हैं कि 'आओ भाई, आओ हमारे नवाब खाँ जहाँखाँ साहब आओ'। यदि कोई घमंडके साथ कुछ बात कह बैठता है तो तुरन्त बूढ़े-बड़े लोग कह उठते हैं कि 'बेटा मानां नवाब खाँ जहाँखाँ हो गये हैं।' ऐयाशी और अत्याचार

के साथ नवाब खॉजहाँ खॉका नाम मानों मिल गया है। नवाबको इस पृथ्वीसे उठे न जाने कितने वर्ष हो गये, परन्तु उनकी निर्दया-विकृतहीन छाया अब भी बंगालमें इधर-उधर घूम रही है। यह छाया कब लुप्त होगी इसे कोई कह नहीं सकता। खॉजहाँखॉ नवाबी वक्तके एक फौजदार हैं; यदपि एक वर्षके लगभग हुआ अँग्रेजोंने बंगालपर विजय प्राप्त किया है, परन्तु खॉजहाँखॉकी इससे कुछ भी हानि नहीं हुई है। उनका पद उसी प्रकार बना है, उनकी क्षमता पहले से भी बढ़ गयी है। अँग्रेजोंके वर्तमान कड़ी शासन प्रणालीमें भी दिहातमें जज और मजिस्ट्रेटोंका कैसा प्रभाव है और वे कैसी मनमानी करते हैं इसे देखकर पाठक समझ सकते हैं कि नवाबका उस समय बंगालमें कितना दुर्दण्ड प्रताप रहा होगा। बंगालमें उस समय अराजकता विराज रही थी। अँग्रेज मीर जाफर को खिलौनेकी तरह सिंहासनपर बैठाकर स्वयं बंगालके हर्ता-कर्ता बननेकी चेष्टा कर रहे थे। ऐसी अवस्थामें एक ओर अँग्रेज और दूसरी ओर नवाब अपना-अपना स्वार्थ साधन कर रहे थे। इस समय उनका ध्यान राज्यकी भलाईकी ओर तनिक भी नहीं था। शासनकी रीतिके अनुसार नया प्रबन्ध तो कुछ भी नहीं हुआ था, पर मुसलमानोंके समय जो कुछ शासन शृंखला थी, इन नये विप्लव के समय वह भी टूट गयी थी। खॉजहाँखॉके सिरपर कोई नहीं था यह कहना अत्युक्ति न होगा। इस समय वही हुगलीके हर्ता-कर्ता विधाता थे। इनके भयसे बाघ और बकरी एक घाटपर पानी पीते थे। परन्तु वास्तवमें लोग उनसे इतना नहीं डरते थे जितना उनके

कर्मचारियोंसे । उनके शासनसे इतना नहीं डरते थे, जितना उनके अशासनसे । यहाँ तक कि, नवाबके कर्मचारी नवाबके भी नवाब थे । नवाब यदि किसीको दो रुपये देनेकी आज्ञा देते थे तो उनके हितैषी कर्मचारीगण उसे एक ही रुपये देकर एक रुपया अपने जेबमें रख लेते थे । वे सोचते थे कि, ऐसा करनेसे ही नवाबका अधिक पुण्य संचय होगा । परन्तु यदि नवाब किसीको एक जूता मारनेकी आज्ञा देते थे तो वे उसे दस जूता बिना किसी प्रकार सोचे-विचारे मार देते थे । इस प्रकार अपनी निस्वार्थ प्रभू-भक्ति के कारण मानों वे अपने अहिंसकी ओर कुछ भी ध्यान न देकर 'येण केण प्रकारेण' वे नवाबके लिये स्वर्ग-राज्यका मार्ग स्वच्छ कर रहे थे । इनके हाथोंसे विचारे गरीबोंको कितना कष्ट सहना पड़ता था वह नीचे की घटनासे मालूम होगा ।

इस समय हुगलीमें जहाँ दिवानी अदालत, मुहाफिज खासा और ब्राह्म स्कूल है, उस समय वहीं खौं जहाँवाँका सदर और अन्दर दो महल बने थे । महलके ही समाने एक बाग था । बागके दोनों कोनेपर सड़कके किनारे दो नौबतखाने बने थे । एक दल पहरेदारोंका महलके सदर दरवाजे पर और एक दल नौबतखानेके सामने पहरा दे रहा था । पहरेदारोंके डरसे इस रास्तेसे कोई गरीब दुखिया आना जाना नहीं चाहते थे । केवल जिनके साथ उनका मासिक-बन्दोबस्त कुछ हो जाता था, वही निर्भय होकर उस रास्तेसे जा सकते थे ।

नौबतखानेके नीचे एक गरीब चूड़ी बेचनेवाला आकर बैठ गया

है। उसके आस-पास उसे घेरकर चींटीकी तरह पहरेदार खड़े हो गये हैं। जान पड़ता है कि यह चूड़ी वाला अभी इस शहरमें नया आया है। यहाँकी हालत उसे मालूम नहीं थी, इसीसे यह इस रास्ते-से पुकारता हुआ चला जाता था। उसको देखते ही प्रधान पहरेदार के मनमें गतरातकी चूड़ीकी फरमाइश याद आ गयी। उसके बाद धीरे-धीरे नीबू मियाँ, अलीम, बब्बर, आदि जितने पहरेदार थे उन्हें जन्म-जन्मान्तरकी याद आ गयी। किसीकी बहन, किसीकी भांजी, किसीकी भांजीकी ननदको एक जोड़ा चूड़ीके लिये रात भर नींद नहीं आई थी, किसीकी प्रेयसीके दामादके बहिनको जड़ाऊ चूड़ी पहरनेकी साध हुई थी, किसीके पतोहूके नानीके हाथोंमें काँसेकी चूड़ी नहीं थी इसीसे मालकिनी मारे लज्जाके निमंत्रणमें नहीं जा सकी थी, यह सब बातें याद आते ही उन लोगोंने सोचा कि बिना पानी पिये एक महीने तक रहा जा सकता है, परन्तु बिना चूड़ी लिये एक दिन भी जीना कठिन है। इस अति-आवश्यक चीजके बिना अब तक वे कैसे जिन्दा थे यही सोचकर उन्हें आश्चर्य होने लगा। जान पड़ता है कि उनमेंसे किसी-किसीको यह भी सन्देह हुआ था कि हम जिन्दा हैं या नहीं।

जो हो, चूड़ीवालेको पुकारकर जब वे घरमें बुला लाये, तब प्रधान पहरेदारने एक जोड़ा विलौरी चूड़ी उठाकर उससे दाम पूछा। उसने कहा—चार आना। जनाब बड़ी सस्ती है आपसे हम मोल-बाल नहीं करेंगे। एक प्रकारसे यों ही इसे मैं दिये जाता हूँ।

चूड़ीवालेने भी मानो हवामें मकान बना डाला था। उसने

सोचा था कि इतने लोग अगर चूड़ी खरीदेंगे तो मैं एक ही दिनमें अमीर हो जाऊँगा। केवल कमी थी तो इतनी ही कि महलके साथ ही एक शाहजादी नहीं मिलेगी। परन्तु एका एक उसका हवाई महल क्षण भरमें गिर पड़ा। मीरअली पहरेदार एक मोटं सोंटिके ऊपर सहारा देकर पास ही बाघकी तरह उसकी ओर देख रहा था, खानेका अवसर मानों वह खोज ही रहा था। भूठ पर उमको वड़ी घृणा थी; नवाबके महलके बाहरका कोई भी कुछ कहता तो वह उसे भूठा कहकर गर्जने लगता था। क्योंकि उसके प्रभू-भक्त साथी लोग आर खासकर मीरअली स्वयं कभी सत्यके सिवाय भूठ नहीं बोलता था। परन्तु बाहरी अदभियोंने मीरअलीको कभी आज तक भूलकर सब बात कहते नहीं सुना था। पर इससे क्या होता है। मीरअली आर उसके बन्धु बाधवाके सिवा दुनियाँ भूठी है, इसका प्रमाण वह स्वयं देता था।

चूड़ीवालेकी बात सुनकर उसने आँखें लाल करके कहा—
बदमाश भूठा ! जानता नहीं, ठीक ऐसी ही चूड़ी अभी मैं दो पैसेमें मोल लाया था ?

एकाएक मीरू मियाँ पहरेदारका मिजाज भी गर्म हो उठा। उसका ऐसा मिजाज पहले था या नहीं यह तो नहीं कहा जा सकता, पर समयके फेरसे सब कुछ हो सकता है। जो आजन्म कविताकी एक सतर भी नहीं लिख सकता, बसंतकालमें कोयलकी आवाज सुनकर वह दो लाइन कविता लिख लेता है। तब पहरेदार विचारेका ही क्या अपराध है ? वह भी निःस्वार्थ भावसे सहसा उत्तेजित

होकर आँखें लालकर कह उठा—इसी तरह तू लोगोंको ठगता है ? कुत्तेका बच्चा ! नहीं जानता कि तेरी जान आज हमारे हाथमें है ?

अब तब्र प्रधान पहरेदार चुप था, परन्तु अब वह भी चुप न रह सका । उसका मिजाज सबसे अधिक गर्म होगया । पहरेदारोंमें इसका नाम गाजी अर्थान् धार्मिक था । यह अपनेको ईमामहुसेनके वंशका कहकर परिचय देता था । रोज पाँच बार नमाज पढ़ता था और काफिरों (हिन्दू) को देखते ही उनका रक्तपान करनेके लिये इसकी लार टपकने लगती थी । इसलिये वह केवल चूड़ीवालेको गाली देकर ही शान्त न रह सका, उसने बड़े जोरसे एक थप्पड़ चूड़ीवालेको मारकर कहा—हम लोगोंको ठगने आया है बदमाश !

बिचारे चूड़ीवालेका शरीर सिरसे पैर तक झन-झना उठा, वह अपनेको सम्हालकर रोते हुए कहने लगा—धर्मावतार, दोहाई है आपकी, दो आना तो मेरा खर्चा पड़ा है ।

चूड़ीवालेको मारकर अपनी बहादुरीसे फूलकर प्रधान पहरेदार बड़े घमण्ड से अपनी बड़ी-बड़ी मूर्खोंपर ताव दे रहा था । चूड़ीवालेकी यह बात सुनते ही उसने गर्जकर कहा—फिर वही बात उल्लू !

चूड़ीवालेने डरकर चारो ओर देखा, उसने सोचा इतने लोग खड़े हैं क्या कोई भी उसपर दया न करेगा ? परन्तु जब उसने देखा कि चारो ओरसे बड़ी-बड़ी लाल पगड़ीवालोंकी लाल-लाल आँखें उसकी ओर घूर रही हैं तब वह बिचारा और भी सहम गया । उसने सोचा कि मैं यमपुरीमें तो नहीं आ गया हूँ ? दो पैसा चूल्हेमें जाय, बिना पैसेके भी वह चूड़ी देकर अपनी जान बचाकर भागना

चाहता था। दामके लिये बिना कुछ कहे वह यह कहकर कि हुजूर जो कहते हैं वह ठीक है, टोकरी सिरपर उठाकर चलने लगा। इसी समय एक पहरेदारने उसके सिरपरसे टोकरी छीनकर कहा—बे अदब ! ऐसा काम कोई करता है ? आज तेरा सिर बिना उतारे मैं न छोड़ूँगा।

चूड़ीवाला रोने लगा, उसने कहा—मैंने तो कुछ नहीं किया, मुझे छोड़ दो भाई, हुजूर, धर्मावतार, मैं हाथ जोड़कर कहता हूँ मुझे छोड़ दो।

पहरेदारने मुँह चिढ़ाकर कहा—भाई-भाई कहता है ! तेरा भाई कौन है रे, उल्लू ! फिर यह बात कहेगा तो तेरा मुँह तोड़ डालूँगा, बिना सलाम किये तू जाने लगा याद है या नहीं ?

तब वाकर अलीने कहा—हाँ, ऐसी बे अदबी ! सलाम नहीं किया ? चल नवाब साहबके पास चल !

चूड़ीवालेने नवाब साहबको किसी जन्ममें भी देखा नहीं था, कि वह मनुष्य हैं या पशु, वह मनुष्यको देखकर खा जाते हैं या नहीं। इसका ज्ञान उसे इसके पहले नहीं था परन्तु इस समय उसे हो गया। नौकरोंका नमूना जैसा उसे दिखाई पड़ा है, उससे मालिककी खूनकी प्यासी नरमुण्ड-धारी भीषण मूर्ति दिखाई पड़ने लगी। चूड़ीवालेका कलेजा काँपने लगा, उसने कहा—दोहाई है सरकारकी, मेरे पास जो कुछ है वह सब सलामीमें देता हूँ मुझे छोड़ दो।

चूड़ीवालेने सोचा सलाम और सलामी एक ही बात है,

इसीलिये इन लोगोंने इतना उपद्रव कर रखा है। उसका यह अनुमान बिल्कुल गलत नहीं था। थोड़े ही देरमें पहरेदारोंने टोकरी खाली करके चूड़ीवालेकी ओर पैरोंसे खसका दिया और कहा— तेरी चीज यहाँ कौन लेगा ? लेजा अपनी चीज।

टोकरी उठाकर वह एक साँसमें वहाँसे भागा। आध कोस आकर उसने दम लिया। चारा और एक बार देखकर उसने एक पेड़के नीचे बैठकर धीरे-धीरे टोकरीका ढकना खोला। जब उसने देखा कि उसकी सारी सम्पत्ति छान गया है, तब वह सिरपर हाथ रखकर रोने लगा। उसी समय उसी मार्गसे महम्मद मसीन कहीं जा रहे थे, उसे रोते देखकर उन्होंने कारण पृच्छा। उसकी सब बातें सुनकर उसी समय उन्होंने उसे चूड़ीका दाम दे दिया और बहुत समझा-बुझाकर नवाब साहबके पास दरखास्त देनेके लिये उसे राजी किया। नवाबके पास दरखास्त भेजी गयी। परन्तु विचारमें पहरेदारोंका कुछ दाप प्रमाणित नहीं हुआ। विचारके बाद दूने घमण्डसे वे छाती फुलाकर अपने-अपने स्थानपर चले आये।

इसी प्रकार विचारके नामसे संसारमें प्रति दिन कितना अविचार और अन्याय हा रहा है, क्षमताके पैरोंके नीचे कितने दुर्बल प्रति दिन पीसे जा रहे हैं, इस अन्यायसे न जाने कब पृथ्वी छुटकारा पावेगी। जिधर देखो, उधर ही मरु-भूमिकी तरह निराशा दिखाई पड़ती है। अनन्त सीमाके उस पार आशा छिप रही है। कभी-कभी जिसे हम आशा समझते हैं वह केवल मरीचिका मात्र होती है।

जिस दिन चूड़ीवालेका विचार हुआ था उसी दिन रातको

उसकी झोपड़ी जलकर भस्म हो गयी। वह दूसरे दिन रोता हुआ महम्मदके पास आया। वह कहने लगा आपहीने मुझसे दरखास्त दिलाकर मेरी यह दुर्दशा करायी है, मैं तो इसीलिये दरखास्त देने के लिये राजी नहीं होता था, क्योंकि मैं जानता था कि ऐसा करने से भारी आफत सिरपर आजायगी।

महम्मदने उसे नयी झोपड़ी बनानेके लिये रुपये दिये। वह दूसरे गांवमें चला गया। महम्मदने सोचा, इस अविचारकी बात एक दिन वे स्वयं खों जहाँखों से कहेंगे।

चौदहवाँ परिच्छेद

प्रधान पहरदार

पूर्व परिच्छेदमें जिन घटनाओंका वर्णन किया गया है, उसके एक ही दो दिन बाद भोलानाथ नवाबी महलके पीछेके रास्तेसे जा रहे थे। इस रास्तेमें नवाबी आडम्बर कुछ नहीं था, पहरदारोंके लाल पगड़ीका रंग तक यहाँ दिखाई नहीं पड़ता था। नवाबीमें केवल नवाबके महलकी पश्चिम दीवार घमण्डसे खड़ी हुई दिखाई पड़ती थी। इधर बहुत कम आदमी चलते-फिरते थे; दो-एक मछलीवाले सिरपर टोकरा उठाये भोलानाथके पाससे जाने लगे। पर वे इन्हें देखते ही क्षण भर ठहर गये और उन्होंने पश्चिम-ओर देखकर दस-बीस बार सलाम किया। भोलानाथने इसका मतलब कुछ भी नहीं समझा। वह साधारण आदमी हैं राह चलते लोग उन्हें सलाम करेंगे इसकी उन्हें आशा न थी। उनके मनमें बड़ी उत्कण्ठा होने लगी। इतनेमें ही एक तरकारीवालेने भी वहीं आकर पहलेकी तरह पश्चिमकी ओर देखकर कई बार सलाम किया। अब भोलानाथ चुप न रह सके। उसके पास जाकर उन्होंने पूछा कि—किसको सलाम करते हो जी ? यहाँ तो कोई नहीं है ?

वह अपनेको कोई नहीं मैं ही समझने थे। तरकारीवालेने खड़े होकर दिवारकी ओर उँगली दिखादी। भोलानाथ यद्यपि इसका यथेष्ट रहस्य कुछ भी नहीं समझ सके पर इतना समझ गये कि,

सलामके लक्ष्य वह नहीं हैं—यह दीवाल है। यह समझकर उनके हृदयसे एक भारी बोझा हट गया पर आश्चर्यका भाव कुछ कम नहीं हुआ।

भोलानाथने कभी इस जन्ममें ऐसी आश्चर्य जनक घटना नहीं देखा था। वह एक मुसलमानको जानते थे जो रोज पाँचवार नमाज पढ़ता था, और हिन्दुओंके देवी देवताको देखने ही प्रणाम करता था। वैष्णवोंके साथ हरिकीर्तन करता था, बौद्धोंके साथ बुद्धकी उपासना भी करता था, परन्तु कभी वह भी ऐसा काम नहीं करता था। घर द्वार इत्यादि जिसे भोलानाथ जड़ पदार्थ समझते थे, उनके सामने उसने भी कभी सिर नहीं झुकाया था। तौ भी उसकी ये बातें भोलानाथको ऐसी रहस्यमय जान पड़ी कि एक दिन उन्होंने उस मुसलमानको पकड़कर पूछा था कि क्यों भाई, यह क्या बात है? उसने कहा था—महाशय, कौन देवता सच्चे है इसे कौन जान सकता है इसलिये सबको संतुष्ट रखना अच्छा है।

उसी दिनसे भोलानाथ सार्व-भौमिक धर्म-ग्रहणका तात्पर्य समझ गये थे, परन्तु आजकी घटना देखकर वह इसका तात्पर्य न समझ सके, इसीलिये वह तरकारीवालेसे कह उठे—दीवालको सलाम करते हो? वह तो जड़ पदार्थ है।

उसने कहा—महाशय, आपके देवता तो सब जगहसे देखते हैं। तब क्या इस दीवालके भीतरसे कोई न देख सकेगा?

ये बातें भोलानाथके समझमें नहीं आई। वह हाथ रगड़ते हुए पूछने लगे—क्या कहा जी, दीवालके भीतर भी क्या तुम्हारे पीर रहते हैं?

उसने कहा—हाँ, पीर ही हैं। विना सलाम किये हम लोगोंका सिर क्या बच सकता है ? आप क्या इस शहरके रहनेवाले नहीं हैं ? सलाम न करनेसे चूड़ीवालेकी क्या दुर्गति हुई थी क्या आपको नहीं मालूम ? उसी दिनसे नवाबने हुक्म दिया है कि इस महलके पाससे जा कोई विना सिर झुकाये जायगा, उसके सिरसे गङ्गाका पुल बनाया जायगा।

भोलानाथ यह सुनकर बड़े चिन्तित हो गये, एक बार धूमकर सदर फाटक पर आकर प्रधान पहरदारको सम्बोधन करके कहा—क्या जी दरवान जी, एक बात कहनेके लिये आया हूँ। एक बार नवाब साहबसे आप मुलाकात करा सकते हैं ?

पहरदार—क्या बोलता है, यह उल्लू कहाँसे आया ?

भोलानाथने हँसकर कहा—नहीं साहब, नहीं, मैं उल्लू नहीं हूँ। मैं महम्मद मसीन साहबका गायक भोलानाथ हूँ।

भोलानाथने सोचा था कि परिचय पाकर पहरदार तुरंत उन्हें नवाब साहबके पास ले जायगा। परन्तु पहरदारने कहा—कौन है तेरा महम्मद मसीन ? वह तो नवाब साहबके पैरोंका जूता है।

भोलानाथने राम-राम कहकर कानों पर हाथ रख लिया और उन्हें बड़ा क्रोध आया। उन्होंने कहा—दरवानजी, तुम लोगोंको बड़ा घमंड हो गया है। हमारे मालिक तुम्हारे मालिकसे हजार-गुणा अच्छे हैं।

पहरदारने बहुत आदमियोंको देखा था, पर ऐसे झगड़ालू आदमीको नहीं ! उसे इच्छा हुई कि लात मारकर इसे दूर कर दें,

परन्तु नवाब साहब इसी समय बागमें घूमने आते थे, इसलिये उसने अपनी इच्छाको दमन करके कहा—क्या बकबक करता है जायगा या नहीं ?

भोलानाथ—क्रोध न करो। तुम्हारे मालिकके इज्जतका खजाना क्या इतना खाली हो गया है कि राह चलते लोगोंसे सलाम लेकर उसे पूरा करना पड़ रहा है ? पर मेरे मालिक अपने मानसे इतने परिपूर्ण हैं कि, दूसरेसे वह रत्ती भर भी मान नहीं चाहते। बल्कि गरीब दुखियोंको मान वह बाँटते रहने पर भी उसे समाप्त नहीं कर सकते। अच्छा अब बताओ, किसके मालिक बड़े हैं ?

पहरेदारको बंगला भापाका इतना ज्ञान नहीं था कि, भोलानाथकी बातोंका अर्थ समझ सकता। उसने सोचा, कि भोलानाथने उसे कोई बुरी गाली दी है। इससे उसे अब सह्य नहीं होता, उसने भोलानाथका गला बाँधे हाथसे धर दबाया। भोलानाथ भी छोड़ने वाले नहीं थे। ज्योंही उनका सिर नीचा हुआ त्योंही उन्होंने दोनों हाथोंसे उसकी छाती पकड़ ली। तब उसने भी उनका गला छोड़कर उन्हींकी प्रथा अवलंबन की। इस प्रकार दोनों जमीन पर गिर पड़े। दूसरे पहरेदार 'हैं हैं' करते हुए चारो ओरसे आ गये। वृद्ध भोलानाथकी हड्डियाँ पीसकर मैदा बनानेके लिये चारो ओरसे हाथ उठा, पर इतनेमें ही नवाब साहब बागमें आकर खड़े हो गये। पहरेदार सब डरके मारे 'नवाब साहब नवाब साहब' कहकर खड़े हो गये। प्रधान पहरेदारने नवाबका नाम सुनकर भोलानाथको छोड़कर झटपट जमीनसे उठकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि

नवाब साहबकी आँखोंसे मारे क्रोधके चिनगारी निकल रही है। यह देखकर वह काँप उठा। भोलानाथ भी धूल झाड़कर खड़े हो गये। बागमें नवाब साहबको देखकर अपना अभिप्राय सिद्ध होनेका सुयोग जानकर वह जेबसे चिल्लाकर कहने लगे—मैं एक बात कहनेके लिये आया हूँ गरीबोंके प्रति अन्याय न कीजिये, ईश्वरने आपको उनकी रक्षा करनेके लिये भेजा है, बध करनेके लिये नहीं।

भोलानाथकी बातें पूरी भी नहीं हुई थी कि नवाब साहब तुरंत वहाँसे महलमें चले गये। भोलानाथ निराश होकर घर आकर तम्बूरा लेकर गाने लगे।

पंद्रहवाँ परिच्छेद

विचार

ख जहाँखाँ के जिम्मे काम बहुत था, परन्तु वह उसकी पर्वाह नहीं करते थे। सुन्दरी बेगमों के कोमल अधरों की हँसी से, उनके मदिरा भरे हुए लोचनों के कटाक्ष से ही उनका सम्बन्ध अधिक है। खाँ जहाँखाँ भारी ऐयाश हैं। विलास के प्रमोद वन में, भोग मय फूल शय्या पर अपनी जीवन रात्रि वह बिताया चाहते हैं परन्तु न जाने क्यों उनके हृदय की आकांक्षा किसी प्रकार भी तृप्त नहीं होती। वह जो शांति पाना चाहते हैं, उसे अनेक उपाय करने पर भी वह पा नहीं सके।

जहाँ तृप्ति नहीं है, वहाँ शांति भी नहीं है। खाँ जहाँखाँ लालसा को प्रेम और मोह को निद्रा समझते हैं। परन्तु वह नहीं जानते कि, इस तृष्णा का अवसान नहीं है। इस निद्रा का विराम नहीं है। जीवन के रक्त से जिस आकांक्षा को वह पुष्ट कर रहे हैं, हृदय के अंतिम रक्त बूँद को भी देकर वह उस आकांक्षा को निवृत्त न कर सकेंगे। इस आकांक्षा की प्रतितृप्ति और इस तृष्णा की शांति केवल आत्मबलिदान से ही हो सकती है। परन्तु खाँ जहाँखाँ को यह विदित नहीं है।

ऐसी अवस्थामें कचहरी के काम-काज में उनका कितना मन लगता होगा, यह सहज में ही जाना जा सकता है। यद्यपि प्रति दिन

वह एक बार कचहरीमें जाकर बैठ जाते हैं, परन्तु आधा काम भी समाप्त नहीं होने पाता और वह अन्तःपुरमें चले जाते हैं। इसलिये कर्मचारी लोग ही एक प्रकारसे हर्त्ता-कर्त्ता बन गये हैं। कभी-कभी किसी विशेष कारणसे उनकी कुम्भकर्णी निद्रा जब भङ्ग हो जाती है तब चारो ओर हलचल मच जाता है। कर्मचारीगण मारे डरके काँपने लगते हैं पर नवाब साहब जितना गर्जते हैं उतना बरसते नहीं।

कल तीसरे पहर पहरदारोंका अत्याचर देखकर खाँ जहाँखाँने मारे क्रोधके वागके सब पहरदारोंको निकाल देनेकी आज्ञा दे दी है। एक तो उनके नामसे लगातार इधर कई दिनोंसे अभियोग-पर-अभियोग आ रहे हैं, महम्मद मसीन स्वयं आकर सबेरे पहरदारों-के अत्याचारकी कथा सुना गये है, उसके बाद आज कचहरीके समय अभियोगोंकी अधिकतासे उनके अन्तःपुर जानेका समय भी बीत गया था। यह सब असन्तोष अभी दूर भी नहीं हुआ था कि उनके आँखोंके सामने यह घटना दिखाई पड़ी। आगमें घी पड़ गया। यदि ऐसा न होता तो कदाचिन् खाँ जहाँखाँ इस घटनासे इतने उत्तेजित न होते।

× × × ×

दूसरे दिन नियमानुसार कचहरी लगी। नवाब खाँ जहाँखाँ एक किनखाब बिछे हुए मुक्ताके झालरसे शोभित ऊँचे सिंहासनपर बैठे हैं। उनके दाहिने बायें और पीछे आसा सोटाधारी, भृत्यगण खड़े हैं। भृत्योंके कपड़ेसे अतर गुलाब और फूलोंकी सुगन्ध निकल रही है। नीचे फर्शपर कर्मचारीगण बैठे हैं। फौजदार जहाँनखाँ स्वयं

एक जमींदारीके सम्बन्धमें नवाबके पास बैठकर लड़ाई-भगड़ेको समझा रहे हैं। परन्तु नवाबने थोड़ासा ही सुनकर अधीर होकर कहा—यह सब अभी रहने दो, सिर्फ यह बतलाओ कि खून कै ठो हुआ है ?

नायबने कहा—खून एक भी नहीं हुआ है। हमारे जहाँगीरखाँ-का उन लोगोंने खून मारा है पर और सब लोग भाग आए।

खाँ जहाँखा—जहाँगीर मेरा नौकर होकर भी मार खा आया और मार न सका ! इसलिये उसे एक सौ जूता मारो और उसे छुड़ा दो। उससे यह भी कह दो कि अगर वह मार आता तो इनाम पाता।

नवाब वास्तवमें निष्ठुर और अत्याचारी नहीं थे। राजाओंके युद्ध विग्रहकी तरह दङ्गा-फसाद उस समय जमींदारोंके लिये आत्म-रक्षाका उपाय समझा जाता था। जमींदारोंकी प्रधानता, प्रभुता और मान इसी युद्ध-जयके ऊपर निर्भर करता था। नौकरोंको इसी लिये वे उसी प्रकारसे पुरस्कार या दण्ड देते थे। इसके अतिरिक्त खाँ जहाँखाँ भक्ती आदमी थे, आदिसे अन्त तक सुनकर उसपर गम्भीर विचार करनेका उनमें धैर्य नहीं था। वह सभी बातोंको थोड़ेमें ही निपटाना चाहते थे। इसीसे पहले उनका दिया हुआ दंड बड़ा कठोर होता था परन्तु अन्तमें वह उतना कड़ा नहीं रहता था।

कर्मचारी लोग भी नवाबको भली प्रकार जानते थे। नायबने सोचा कि, नवाबको इस समय यह सब बातें अच्छी नहीं लग रही है, इस समय कुछ और कहनेसे मामला बिगड़ जायगा। इसलिये

दूरदर्शीकी भाँति उसने उसे मुलतबी कर दिया और उठकर जाने लगा । पर नवाबने कहा—तुम्हें ओर क्या कहना है ?

दीवान—हुजूर ! पहरेदारोंके अपराधकी जाँच करने पर मालूम हुआ कि वे दोषी हैं ।

नवाब—इसमें तो सन्देह नहीं था ।

दीवान—परन्तु सबका दोष नहीं है ।

नवाब—पर अधिकोंका तो है न ?

दीवान—हुजूर ! अधिक निर्दोषी हैं ।

नवाब—अधिक निर्दोषी हैं ? मैंने तो अपनी आँखोंसे सबको एक साथ हाथ उठाते देखा था, वह क्या झूठ था ?

दीवान—हुजूर ! वह झूठ नहीं था ।

नवाब—तब क्या था ? मैं तो तुम्हारी बातोंका मतलब कुछ नहीं समझ सका ।

दीवान—उन्होंने मारनेके लिये हाथ नहीं उठाया था । वे उन दोनोंको छुड़ाने जा रहे थे ।

नवाबने देखा, इसपर कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं है । उस समय उनका क्रोध भी ठंडा हो गया था । उनकी इच्छा बात बढ़ानेकी नहीं थी । इसलिये उन्होंने कहा—तब अपराधी कौन है ?

दीवान—प्रधान पहरेदार मशारी !

दीवानसे और प्रधान पहरेदारसे कुछ अनबन थी, वे सोचते थे कि पहरेदार उनकी खातिर जैसी चाहिये वैसी नहीं करता और पहरेदार समझता था कि, दीवान भी नौकर हैं और मैं भी । फिर

हम दीवानके सामने सिर क्यों नीचा करें। असल बात यह थी कि बेगम साहबकी दासी पहरेदारकी बूआ थी इसलिये पहरेदार समझता था कि दीवानके हाथमें उसकी नौकरी नहीं है। परन्तु इस घटनाके बाद जब वह दीवानके शरणमें आया, तब दीवान न्यायके विशेष पक्षपाती हो गये। उन्होंने सोचा कि उसे बचानेसे और किसीको बचा न सकेंगे। दीवानकी बात सुनकर नवाबने कहा—वह क्यों मारता था ?

दीवान—पहरेदार लोग यह नहीं जान सके।

नवाब—अच्छा, तब उसीको निकाल बाहर करो। मदारी जब से प्रधान पहरेदार हुआ तबसे रोज एक न एक बदनामी हो रही है।

उसी समय प्रधान पहरेदारको जवाब दे दिया गया, और सब बच गये।

सोलहवाँ परिच्छेद

स्मृति

हम पहले लिख चुके हैं कि, मदारीकी वूआ शहरवानू वेगमकी दासो थी। इसलिये मदारीके जानके बादसे ही नवाबके महलमें गड़बड़ी मच गयी है। अन्तःपुरमें दिन दोपहरको ही चीजें चोरी जानें लगीं। विछा बच्चाका दूध पी जाती है, रसाईदारिन रसोई भर्ती-भाँति नहो बना सकती, धोबी कपड़ा अच्छा नहीं धोता, यहाँ तक कि राह चलते लाग भी ऐसे वे अदब हो गये हैं कि उनके चिल्लाहटसे वेगम साहबाका नींद नहीं आती। यह सब भी सहा जा सकता था, परन्तु उनके गोदका छः मर्दानका लड़का पहरेदारको याद करके सन्ध्यासे हो ऐसा सो जाता है कि, सारी रात उठनेका नाम भी नहीं लेता। उसे देखनेके लिये हकीम राज आता है, और धैर्य दे जाता है कि ऐसा नींद लड़कोंके लिये बहुत ही लाभ दायक है। परन्तु दासो इससे चिढ़ जाती है। और ऐसे नीम हकीमकी चिकित्सा करनेसे लड़केकी जान न बचेगी, यह बात बारंवार वह वेगम साहबाका समझाती है। वेगम भी पुत्र चिन्तासे व्याकुल होकर रात-दिन राया करती हैं। इस अवस्थामें हकीमने हार मान ली; दूसरे एक चिकित्सकने आकर औपधि दी। उसके खानेसे जब रातभर लड़का राने लगा, तब वेगम साहबाको कुछ धैर्य हुआ, परन्तु मदारीके न रहनेसे और सब असुविधा ज्योंकी त्यों बनी

रही। नवाब घबड़ा उठे। वह इमका कुछ उपाय सोच न सके। एक बार पहरेदारको छुड़ाकर फिर उसे बुलानेकी उन्हे इच्छा नहीं थी, परन्तु घरकी यह अशांति देखकर वे बहुत हो घबड़ा गये हैं। इसके सिवा एक और विपत्ति आ पड़ी है। शहरवान् एक दिन पालकी पर कहीं जा रहीं थीं, उनके पालकीके सामनेसे काँड़े चला गया था। पाठक समझ गये होंगे कि इसकी जड़ क्या है ?

महम्मद मसान जबसे बुढ़ियाका बेगम साहबाके पालकीके सामनेसे ले गये हैं तबसे बेगम साहबा अपनेको निहायत ही अपमानित समझती हैं। क्रोधसे कर्पता हुई वह ज्यों ही पालकीसे उतरों त्यों ही खा जहाँवाँको अन्तःपुरम बुला भेजा। जो कुछ कहना था कहकर कहा कि ऐसे निकम्मे औरतासे भो गये बीते सिपाहियोंको रखनेसे क्या लाभ ? इससे तो छाटे-छाटे लड़कोंको ही रखना अच्छा है। खा जहाँवाँ भी दाँत पाँसों हुए बाहर आकर सिपाहियोंको बुलाया। सिपाही तो पहलसे हा मारे डरके कर्प रहे थे, क्योंकि वे जानते थे कि नवाब चाहे दूसराके लिये कैसे ही क्षमता शाली क्यों न हो, पर बेगम साहबाके सामने उनकी कुछ भी नहीं चलती। अपनी जान हथेली पर लेकर वे सब नवाबके सामने हाजिर हुए। अपनी तरफसे जा कुछ कहना था हाथ जाड़कर कहा। उनकी सब बातें सुननेके बाद नवाब नर्म पड़ गये, भविष्यमें सावधान हानेके लिये ताकाद करके उन्हें रिहाई दी। यह देख कर सिपाहियोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि इस प्रकार उन लोगोंका छुटकारा सहजमें ही कभी नहीं हुआ था। परन्तु इस प्रकारके आश्चर्यसे उनकी

प्रसन्नता दब गयी, क्योंकि यद्यपि उनको सहजमें ही छुटकारा मिल गया, परन्तु उनके आदर्श भावमें उनके मालिक कुछ नीचे हो गये । नवाब यदि उनसेसे प्रत्येकको दस-दस बीस-बीस कोड़े मारकर भी कहते कि महम्मद मसीनका सिर काट लाओ, तो उनकी भक्ति और श्रद्धा नवाब पर ज्यों कि त्यों बनी रहती । परन्तु खाँ जहाँखाँमें चाहे कितना ही दोष क्यों न हो पर वास्तवमें वे अत्याचारी नहीं थे । उन्होंने जब असल बातें जान लीं, और देखा कि महम्मद मसीनके तेजसे सिपाही लोग रुक गये थे, तब सिपाहियोंका दोष उन्हें कुछ भी न दिखाई पड़ा । और इसके अतिरिक्त इस बातमें उन्हें कुछ अपमान भी नहीं दिखाई पड़ा । केवल पुरानी बातें इस समय उन्हें याद आगयी । जब मुन्नासे विवाह करना चाहते थे तब महम्मद मसीनने कहा था कि मुन्नाको हम वनवास दिया नहीं चाहते ।

हा ! उस समय यदि मसीन जानते होते कि मुन्नाका भविष्य इतना अन्धकार मय है, तो उस समय क्या वह ऐसी बातें कह सकते ? उस समय मसीन अपने आशाके प्रकाशसे इस अन्धकारको नहीं देख सके । प्रकाशमें सब कुछ देखा जा सकता है पर अन्धकार नहीं दिखाई पड़ता । इसीसे मुन्नाका भविष्य उन्हें उस समय निर्मल प्रभातकी तरह मधुर जान पड़ा था । वह नहीं जानते थे कि, उनके हृदयका यह प्रभात अन्धकारमें ही दिखाई पड़ा और अन्धकारमें ही विलीन हो जायगा ।

पाठक यदि तुममेंसे कोई अपना अदृश्य जानना चाहता हो तो याद रखो कि उसे जाननेके लिये सुख-शांति, आशा भरोसाका

दीपक बुझा देना होगा। उस समय तुम्हें इसी अन्धकारमें एक संसार व्यापी स्थिर अन्धकार दिखाई पड़ेगा। प्राण पणसे उसके साथ संग्राम करके भी तुम उसे तिलमात्र भी हटा न सकोगे। हजारों चेष्टा करने पर भी उसकी भयकरता कम न कर सकोगे। उस अन्धकार-तरंगके प्रबल शक्तिसे पिसकर तुम्हारा जीवन प्रवाह क्षण भरमें वन्द हो जायगा।

इसीसे हम कहते हैं कि अदृष्ट जाननेकी चेष्टा न करो। जान रखो कि वह प्रकाश नहीं अन्धकार है। उसे न देखना ही अच्छा है।

बनवासकी बात मसीनने कहा था या नहीं, इसमें सन्देह है, परन्तु जब खाँ जहाँखाँके प्रस्तावको उन्होंने अस्वीकार किया, तब यह बात भी उन्हें सच जान पड़ी। खाँ जहाँखाँके अभिमानमें कड़ी चोट लगी। उसी दिनसे उन्होंने सोचा कि, मसीनको अनादरकी दृष्टिसे देखकर, उनके आत्मभिमानमें चोट पहुँचाकर मैं इस अपमानका बदला लूँगा। परन्तु इस घटनाके बाद जिस दिन नवाब नौरत उल्लाखाँके महलमें मसीनके साथ उनकी भेंट हुई और मसीनने स्वाभाविक सरल हास्य मुग्धसे उन्हें अभिवादन किया, उस समय उनका सब संकल्प भंग हो गया। उन्होंने सोचा कि मसीनसे बदला लेनेकी उनमें सामर्थ्य नहीं है। मसीन उनसे बहुत ऊँचे हैं।

असल बात यह है कि खाँ जहाँखाँ नवाब होकर भी महम्मद मसीनको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। मूर्ख जैसे शास्त्रज्ञ पंडितका भय करता है, साधारण मनुष्य महात्माओंको अनादरकी दृष्टिसे देखकर

भी भक्ति भावसे देखता है, उसी प्रकार मसीनके प्रति खाँ जहाँखाँका भाव भी था। वह इस भावको अपने मनसे हटाना चाहते थे, इस भावको वह स्वयं स्वीकार करनेमें भी लज्जित होते थे। पर तो भी अज्ञात रूपसे इस भावने उनके मनपर अधिकार जमा लिया था। क्यों ऐसा होता है, इसका वह कारण कुछ समझ नहीं सकते थे। धनमान, पद मर्यादा आदि सभी बातोंमें वह मसीनसे बढ़कर थे पर तो भी न जाने क्यों इस भावने उनके मनपर अधिकार जमा लिया था? किसी निमंत्रण या सन्नामें सैकड़ों अमीरोंके रहते हुए भी जब मसीन आकर उनसे बात-चीत करते थे, तब वह न जाने क्यों अपनेको सम्मानित समझते थे? मसीन जब उन्हें अभिवादन करते थे तो वह न जाने क्यों अपनेको धन्य समझते थे? इसका कारण खाँ जहाँखाँ समझ नहीं सकते थे। पर अपने मनके इसी भावके कारण उन्होंने सिपाहियोंको क्षमा कर दिया था। महम्मद मसीनसे जब स्वयं वही बदला नहीं ले सकते, तब साधारण सिपाही विचारे क्या कर सकते हैं?

ऐसे बहुतसे लोग हैं, जो ऐसी अवस्थामें दूसरा ही व्यवहार करते हैं। मसल है कि “दूखे पेट बतावे माथा”। पतोहूको न मार सकनेके कारण मजदूरीनको मार बैठते हैं। गोरे मालिकके गालीका प्रतिशोध न ले सकनेके कारण भोजन करते समय व्यंजनका दोष पाकर गृहिणीके ऊपर क्रोध निकाल लेते हैं। परन्तु मनुष्यका स्वभाव एकसा नहीं होता। खाँ जहाँखाँका स्वभाव भी ऐसा नहीं था। एकके दोषका बदला दूसरेसे लेकर उन्हें संतोष नहीं होता था।

उन्होंने यथार्थ क्षमताका स्वाद पा लिया था। इसलिये व्यर्थकी क्षमता दिखानेसे उन्हें संतोष नहीं होता था। इसीलिये बिना दंड दिये ही उन्होंने सिपाहियोंको छोड़ दिया। सिपाहियोंके चले जानेपर वे बहुत देर तक अकेले बैठे रहे। एक विचित्र कष्ट दायक भावनासे उनका मन चंचल हो उठा। शायद पूर्व अपमानकी स्मृति तीव्र रूपसे जाग उठी थी। इसीसे वह रह-रहकर कह उठते थे—क्यों, क्या इससे भी अधिक घोर बनमें वह चली जाती ?

इस घटनाके थोड़े ही दिनोंके उपरान्त उन्होंने सुना कि मुन्नाके पति उसे त्यागकर कहीं चले गये। मसीन भी यहाँ नहीं हैं।

सत्रहवाँ परिच्छेद

बात-चीत

सन्ध्या समय एक नौका एक विस्तृत खेतके सामने आ लगी, पेड़मे नाव बाँधनेके लिये मल्लाह लोग तीर पर कूद पड़े । नावके भीतरसे एक अदमीने मल्लाहोंको पुकारकर कहा—इतनी जल्दी नाव क्यों लगाया ? यहाँ कब तक बैठे रहना होगा ?

मल्लाहोंने कहा—हुजूर, एक रेतके पास हम लोग आ गये हैं इसलिये रातको नाव नहीं चल सकती ।

जिन्होंने भीतरसे पूछा था वे नावके बाहर आकर खड़े हो गये । चारो ओर एक बार देखकर कहा—परन्तु रविवारके पहले नदीके मुहाने तक पहुँचना आवश्यक है, नहीं तो करोंचीकी जहाज उस दिन चली जायगी ।

मल्लाह—आप निश्चित रहें, ऐसा ही होगा ।

मसीनने और कुछ नहीं कहा, नावसे उतरकर पेड़ोंके भुगडके पास आये ।

उस समय नीले आकाशमें सप्तर्षीके चन्द्रमाका केवल आधा मुख ही दिखाई पड़ रहा था, तो भी लज्जावती युवतीकी तरह घूँघटके भीतरसे उसका रूप बिखरा पड़ रहा था । उस रूप-ज्योतिसे श्यामल-शुभ्र-क्षेत्र प्रकाशित हो रहा था । आकाश और पृथ्वी एक दिखाई पड़ रही थी, सौंदर्य-सागरमे विश्व निमग्न हो रहा था ।

परन्तु मसीनकी दृष्टि उस ओर नहीं थी, वे गङ्गाकी ओर देख रहे थे। इस ओर चाँदनीका पूर्ण सौंदर्य नहीं था, दोनों ओरके वृक्षोंकी छाया ने दोनों ओरसे मानों चाँदनीको बाँध लिया था। यहाँ प्रकाश और अन्धकारके मिलनेसे नदीके जलमें ग्रहण सा लगा हुआ दिखाई पड़ता था। छाया और प्रकाशका भी अपूर्व मिलन हो रहा था। यह देखकर मसीनके मनमें यह विचार उत्पन्न हुआ कि पृथ्वीपर सभी चीजोंमें शायद इसी प्रकार प्रकाश और अन्धकारका ग्रहण लगता है। जहाँ प्रकाश है वहीं अन्धकार रहता है, जहाँ सुख है वहीं दुःख भी। एककी चाह करनेसे दूसरेको भी साथ लेना ही पड़ता है। नदीके इस किनारेने दिन भर अन्धकारको धारण किया है, थोड़ा सा प्रकाश पानेके लिये उसकी न जाने कितनी प्रबल वासना हांगी ? परन्तु उसकी इतनी चाह देखकर ही शायद प्रकाश उसकी ओर आँख उठाकर देखना भी नहीं चाहता। इस अखिल विश्वका इसने प्रकाशित कर दिया है परन्तु इस दीन हीन छोटेसे तीरको प्रकाशित करनेमें मालूम होता है उसका धन-भाण्डार समाप्त हो जायगा ? जो प्रकाश था वह छाया बन जाता है, फिर भला इस तीरका अन्धकार कौन दूर करेगा ? वह तो इसके अन्धकारको और भी ग्रहण कर रहा है। जान पड़ता है कि प्रकृतिका यही नियम है, तब क्या प्रकाशको चाहनेसे ही अन्धकार मिलता है ? सुखका चाहनेसे ही दुःख प्राप्त होता है ?

न्योत्सनामयी रात्रिमें स्वप्नको तरह धीरे प्रवाहिणी गङ्गाको ओर देखकर मसानने सोचा कि जहाँ प्रकाश और अन्धकार एकमें

मिल गया है, जहाँ सुख-दुःख सब बराबर है, जहाँ सुखकी आकांक्षा नहीं है और दुःखमें विराग नहीं है, वहीं शान्ति विराजमान है। सुख-दुःखकी समानता ही वास्तविक सुख है। संसारमें दूसरा सुख नहीं है।

सहसा मसीनकी चिन्ता भङ्ग हो गयी। किसोके हाथका कोमल स्पर्श उनके पीठपर हुआ। उन्होंने चौंककर पीछे घूमकर देखा, सहसा उनका निराश हृदय प्रकाशित हो गया। उस निर्जन अपरिचित गङ्गाके किनारे उन्हें चन्द्रमाकी चाँदनीमें संन्यासीकी स्नेहमयी प्रशान्त मूर्ति दिखाई पड़ी। विस्मय और आह्लादसे वह गद्गद हो गये। संन्यासीने धीरे-धीरे कहा—वत्स ! क्या तुमने मुझे याद किया था ?

मसीनने अपनेका सम्हालकर उनका अभिवादन किया। संन्यासीने कहा—मैंने कहा था कि जब आवश्यकता होगी तब मैं आऊँगा, उसे मैं भूला नहीं था; वत्स ! इतने व्याकुल क्यों हो ?

इस स्नेहमय वाक्यसे मसीनका हृदय पुलकित हो उठा। उनके आँखोंमें जल भर आया और वह बालककी तरह व्याकुल होकर कहने लगे—गुरुदेव ! उसको (मुन्ना) अकेली छोड़ आया हूँ, उसके पास उसे धैर्य्य देनेवाला, उसकी देख-भाल करनेवाला कोई नहीं है। उसका कष्ट दूर करनेवाला कोई नहीं है। प्रभो ! वह अकेली है।

संन्यासीने धीरे और गम्भीर स्वरसे कहा—उस शक्तिमय महापुरुषके अनन्त अलंघनीय नियमपर विश्वास कर निश्चित रहो। उसी नियमके वश सब अपने-अपने कर्मानुसार फल भोगा

करते हैं, उसीका नाम नियति है। उस नियतिको खण्डन करना...

संन्यासीकी बात समाप्त नहीं हुई थी कि मसीन अधीर होकर बीचमें ही बोल उठे—यदि नियति इस प्रकार अखण्डनीय है, तब प्रेम और करुणाका क्या अर्थ है ? ईश्वरके निकट प्रार्थना करनेका ही क्या फल है ?

संन्यासीने हँसकर कहा—नियति अखण्डनीय नहीं है। मेरे कहनेका यह अर्थ नहीं था। अपने कर्म-फलसे ही मनुष्य नियतिको बनाता है, और अपने कर्मबलसे ही नियतिका खण्डन कर सकता है। ईश्वरकी दया क्या सबको मिल सकती है ? जो भक्त हैं, जो योग्य हैं, वही उनकी करुणा प्राप्त कर सकते हैं। जिस नियतिको तुमने स्वयं बनाया है, उसे तुम अपने ही कर्मबल और ईश्वरकी करुणासे तोड़ सकते हो। ईश्वर प्रार्थनाका फल अवश्य होता है, प्रार्थनाकी शक्ति अपार है, इससे संसारकी शक्ति अपने में प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार चाहे जिस ओरसे सुख-दुःख अदृष्ट यह सभी मनुष्योंके अधिकारमें हैं ?

संन्यासीकी बातोंसे मसीनका हृदय उत्तेजित हो गया। उन्होंने उत्तेजित स्वरसे कहा—प्रभु ! यह सब बातें आपके ही मुखसे शोभा देती हैं परन्तु जो संसारके कठोर वज्राघातसे जर-जर हो गये हैं, जो दूसरेकी सिर्फ एक बात सुनकर मर जाते हैं, और एक बात से जी उठते हैं, उनके निकट ऐसी बातें उपहास्यमात्र हैं।

संन्यासी—नहीं वत्स, सत्य किसीके निकट उपहास्यास्पद नहीं हो सकता। परन्तु सत्यका मिथ्या भ्रम मात्र होनेसे उपहास्यास्पद

हो सकता है। विचार कर देखो जो मिथ्या है, जो भ्रांति है वही वास्तविक दुःखका कारण है। इसलिये यह भ्रांति और मिथ्या, संसारी और ज्ञानी सबके लिये त्याज्य है। विशेषतः इस सत्यको धारण कर सकनेसे, संसार पीड़ितोंका जितना उपकार हो सकता है, उतना ज्ञानियोंका नहीं। क्योंकि, जो ज्ञानी हैं वे कुछ कुछ दुःख को जय कर चुके हैं, परन्तु जो संसारके दुःख तापसे संतप्त हैं वे यदि समझ जायेंगे कि सुख दुःखका बनानेवाला उनके सिवाय कोई दूसरा नहीं है, तब कमसे कम उसका कष्ट दूर हो सकता है। दूसरे लोग तुम्हारे सुख-दुःखका कारण कुछ घटा सकते हैं सही, परन्तु सुख दुःखके अर्थानतासे अपनेको मुक्त करनेकी सम्पूर्ण क्षमता तुम्हींको है।

संन्यासीने जो कुछ कहा, वह मसीनके हृदयमें बैठ गया। कुछ देर बाद उन्होंने कहा—प्रभो! मैं इस प्रकार सदा नहीं समझ सकता।

कितने प्रबल दुःखसे मसीन इस प्रकार विह्वल हो गये हैं, संन्यासी यह जान गये। उनका करुण हृदय व्यथित हो गया। मसीनके सरल, स्वच्छ, और गौरवर्ण मुखपर विषादकी मलीन छाया जा पड़ी थी, और उनके पगड़ोंके नीचेसे जो लम्बे-लम्बे काले बाल मुखपर आकर उस विषादका और भी बढ़ा रहे थे, उसीको संन्यासा देखने लगे मसीन थोड़ी देर ठहरकर कहने लगे—प्रभो! सुनता हूँ कि, पापसे ही दुःखका उत्पत्ति हाता है। यदि यह सत्य है तो जिसका जीवन इतना पवित्र है, जो पाप किसको कहते हैं यह भी

नहीं जानती, उसे इतना दुःख क्यों है ? आप कहेंगे कि इस जन्म का न सही, पूर्व जन्मके पापोंका फल उसे मिल रहा है परन्तु पूर्व जन्ममें जिसने पाप किया हो वह क्या इस जन्ममें इतना पवित्र हृदय हो सकता है ? क्योंकि पूर्व जन्मके संचित पापोंका प्रभाव उसके स्वभावमें अवश्य ही दिखाई पड़ना चाहिये, नहीं तो कर्मका कोई नियम ही नहीं रह जाता ।

संन्यासी—यह सत्य है, पापमय कर्म फलसे पापमय प्रकृति होती है और पुण्यमय कर्मसे पुण्यमय । इसलिये जिस दुःखके साथ पापमय प्रवृत्ति दिखाई नहीं पड़ती, वह पाप कर्मोंका फल नहीं कहा जा सकता ।

मसीन—यदि दुःख पापोंका फल नहीं है, तो कर्म फलका नियम क्या है, प्रभो ?

संन्यासी—यथार्थ दुःख और यथार्थ सुख पाप और पुण्यसे ही होता है इसमें सन्देह नहीं । ‘पाप कर्म वसात् दुःखम् पुण्य कर्म वसात् सुखम्’ परन्तु दुःख मात्र ही पापका फल और सुख मात्र ही पुण्यका फल नहीं है । जो दुःख जीवोंको अपने और पराये हितके लिये प्राप्त होता है वह दुःख दुःख हाने पर भी पुण्यमय और वास्तविक सुखका कारण है । जैसे प्रेम और करुणा जनित दुःख । इसके विरुद्ध, एक प्रकारका सुख मनुष्योंको ईर्ष्या परितृप्तिसे और हत्या करनेसे भी प्राप्त होता है, परन्तु उस सुखका परिणाम अत्यन्त शोक जनक है । वास्तविक पाप और कुछ नहीं है, जीवोंकी उन्नति और मङ्गलमें जिससे बाधा पहुँचे, वही पाप है । इसीलिये

पापहीन दुःखको दुःख कहना ही नहीं चाहिये । क्योंकि उससे जीवोंकी उन्नति ही होती है ।

दुःख मात्र यदि पाप कर्मोंका फल होता तो दयालु और करुण व्यक्ति मात्र ही पापी समझे जाते । यह जो तुम्हारा हृदय दूसरेके दुःखसे इस प्रकार व्याकुल हो रहा है, अवश्य ही यह भी कर्मफल है इसमें सन्देह नहीं । परन्तु देखो, कितने पुण्य फलसे इस प्रकार की करुणा ममतामय हृदय मनुष्योंको प्राप्त होता है । वास्तवमें यह दुःख दुःख नहीं है, अति पवित्र आनन्द लाभका उपाय मात्र है ।

मसीन—तो क्या हम लोग सुख दुःखका भिन्न अर्थ समझते हैं, दुखोंका अनुभव नाम ही दुःख नहीं है ?

संन्यासी—नहीं । हमारे इन्द्रियोंको क्षणिक कष्ट और सुख पहुँचानेवाले सुख दुःखको ही यदि हम सुख दुःख कहें, तो उनका यथार्थ अर्थ लोप हो जायगा क्योंकि वाग्मना चाहे पापमय हो अथवा पुण्यमय उसकी मिद्धि होनेसे ही एक प्रकारकी तृप्ति होती है । जैसे यदि कोई चोर चोरी करनेका सङ्कल्प करके उसमें कृतकार्य्य हो जाय, तो उसे क्षणिक प्रसन्नता अवश्य प्राप्त होगी, पर क्या तुम उसे सुख कह सकते हो ?

मसीन—नहीं, अन्याय कार्योंका बुरा फल अवश्य ही प्राप्त होगा ।

संन्यासी—बस तब समझ लो कि स्थायी आनन्दका ही नाम सुख है । इसलिये बुरे कामोंकी सफलतासे जो सुख प्राप्त होता है

उसे दुःख ही कहना पड़ेगा, क्योंकि वह सुख हमारे भविष्य-दुःख-का कारण है। इसी प्रकार जिस दुःखसे स्थायी सुख मिल सकता है, उसे ही सुख कहा जा सकता है। जैसे यदि कोई अन्याय कर्म करनेसे दण्ड पाकर, सुधर जाय तो उस दण्डका कष्ट उसके भविष्य-सुखका कारण हो सकता है। इसी प्रकार जो अनुचित काम करके भी उसका दण्ड न पानेसे अन्यायको सुख समझ बैठता है भविष्य में उसे भयंकर दुःख प्राप्त होता है। वास्तवमें पापमय प्रवृत्तिको दूर करनेके ही लिये पापका फल दुःखमय बनाया गया है। जो अन्यायका काम करके भी दुःखका अनुभव नहीं करते वे ही यथार्थमें दुःखी और अभागे हैं। क्योंकि वे उन्नति सापानपर उठने की शक्ति खो देते हैं।

मसीन—मैं देखता हूँ कि यदि हम सुख-दुःखकी ओर लक्ष्य न करके केवल कर्तव्य समझकर कर्म कर सकें तो निराशाका कष्ट हमको न भोगना पड़े। तृष्णा ही सब कष्टोंकी जड़ है। तृष्णासे ही पाप ताप, दुःख-शोककी उत्पत्ति होती है। परन्तु इस तृष्णाको निवारण करनेका क्या उपाय है प्रभो ?

संन्यासी—विषही विषकी औषधि है। तृष्णासे ही दुःख उत्पन्न होता है और फिर उस दुःखसे तृष्णाकी निवृत्ति होती है। दुःखमें पड़नेसे संसारिक सुखोंकी चंचलता जान पड़ती है और इससे धीरे धीरे सुखकी आरसे मन हट जाता है। इसालिये मैं कहता हूँ दुःख ही सुखका कारण है। कान कह सकता है, मुन्नाके उन्नतिके ही लिये उसे यह दुःख नहीं हो रहा है ?

मसीनका हृदय पूर्णतः शांत हो गया । एक टुकड़ा काले बादल से चन्द्रमा ढँक गया था, वह धीरे धीरे फिर निकल आया । चाँदनी फैल गयी । संन्यासीने उसी चन्द्रमाके प्रकाशमें देखा कि मसीनकी प्रशान्त, करुणापूर्ण, प्रेम-मयी नेत्रोंमें प्रातःकालके ओसकी तरह दो बूँद आँसू दिखाई पड़ रहे हैं । वह आँसू आशाका आनन्दाश्रु हृदय के अपरिमित स्नेहका उच्छ्वास था ।

अठारहवाँ परिच्छेद

प्रस्ताव

मुन्ना दिन भर अकेली खिड़कीमें बैठी शून्य दृष्टिसे पेड़ोंकी ओर देखा करती है। उसकी आँखोंसे कभी कभी आँसू बहने लगते हैं, किसीके पैरकी आहट पाते ही वह आँखें पोंछकर वहाँसे चली जाती है। सूनी अट्टालिकाके प्रत्येक घरोंमें घूमकर वह किसीको मानो खोजने लगती है, पर उसे पाती नहीं। घरमें जिनकी अतीत स्मृति, सुख-दुःखका अनेक चिन्ह दिखाई पड़ता है वे अब कहीं दिखाई नहीं पड़ते। मुन्नाको देखकर वह स्मृति और वे चिन्ह मानों रो-रोकर कहने लगते हैं, 'नहीं जी नहीं, वे अब यहाँ नहीं हैं।' मुन्ना रोती हुई फिर आकर खिड़कीमें खड़ी हो जाती है बागके पेड़ोंका मर्मर शब्द फिर वही बात कहने लगता है। गंगाकी कल-कल-ध्वनि में भी वही बात सुनाई पड़ती है। मुन्ना अधिक सहन नहीं कर सकती। हृदयको दबाकर बिछौनेपर सो जाती है।

परन्तु उसके आँसुओंको कौन पोछेगा; उसको मर्म वेदनामें उसे कौन धैर्य देगा ? उसका अब यहाँ कौन है ? इस असीम विश्व संसारमें अनाथिनी अकेली है। उसके पति नहीं हैं, उसके स्नेहमय पिता नहीं हैं, उसके सुखमें सुखी, दुःखमें दुःखी रहनेवाला एक मात्र भाई भी मुन्नाके जीवनकी अन्तिम ज्योतिको बुझाकर चला

गया। अब मुन्नाका कौन है ? उसे चारों ओर घोर अन्धकार, और निराशा दिखाई पड़ती है।

चार-पाँच महीने हो गये जबसे मसीन गये हैं तबसे उनका कोई समाचार नहीं मिला है। उनके जानेके बाद पिताका एक पत्र मुन्ना को मिला था परन्तु उसमें मसीनके विषयमें कुछ नहीं लिखा था। उसे भी बहुत दिन हो गये। पिता और भाई किसीका भी समाचार उसे नहीं मिला। दिनपर दिन मुन्नाके हृदयपर दुःखका बोझ बढ़ रहा है, दिनपर दिन उसकी देह क्षीण हो रही है। उसके मुखकी कान्ति शीघ्र और विरग होती जाती है। वह अपने हृदयमें पत्थर बाँधकर धैर्यसे आशाकी और देख रहा है। परन्तु अब तो वह देख नहीं सकता। प्रति दिन कितने दुःख और कष्टसे एक एक युगों की तरह दिन निकल जाता है, दिनान्तमें जब सूर्यकी किरण बलीन हो जाते हैं। तब भी किसीका कोई समाचार उसके पास नहीं आता। वह कितना सहन कर सकता है ? दिन-पर-दिन उसका धैर्य छूटा जा रहा है, आशा टूट रही है। ज्यों-ज्यों दिन बीतता जाता है, उसे जान पड़ता है कि—उसी प्रकार दिनपर-दिन, वर्षपर वर्ष बीतता जायगा। इस दग्ध हृदयको लेकर अनन्त काल तक वह इस अन्धकारमें पड़ा हागा तो भी कोई लौटकर न आवेगा। क्या वे लोग इस पृथ्वीपर नहीं हैं ? मर्मान्तिक यातना और आत्म-ग्लानिसे अवसन्न होकर मुन्ना सोचती है कि, हा ! मैंने क्या किया—उन्हें कहाँ भेज दिया ? अपने सुखके लिये उन सबका विसर्जन मैंने कर दिया ! सब चले गये, कोई नहीं रहा, क्या वे अब न लौटेंगे ?

पिताको शांति देनेकी इच्छासे, मसीनको सुखी करनेकी कामनासे मुन्नाने उनके जानमें बाधा नहीं दी, पर अब उसे यह बात भूलसी गयी है। वह केवल सांचती है कि मैंने अपने ही सुखके लिये अपने ही स्वार्थके लिये उन्हें मृत्युके मुखमें भेज दिया है।

दोपहर बीत चली है, बेला ढल गयी है, तो भो पेड़ोंके ऊपर थोड़ी बहुत धूप चमक रही है। छत पर कौवे दल बांधकर 'वाँव-काँव' कर रहे हैं, बागमें बड़े-बड़े पेड़ों पर तरह-तरहके पक्षी मनकी प्रसन्नतासे चह-चहा रहे हैं। मुन्ना इस समय खुले बरामदेमें आकर बैठ गया है। नव बसतकी हवा प्रेम हास्यकी तरह दक्षिणसे धीरे-धीरे बह रही है। उसके स्पर्शसे फूलोंकी कलियाँ कुछ कुछ खिलने लगीं हैं। आम, लीची, बादाम और झाँके पेड़ोंकी शाखाएँ एक साथ मिलकर, थाड़ा हिल हिलकर गीत गानें लगीं हैं, बरामदेके पास मौलश्रीके पेड़की शाखासे कभी-कभी पत्तियाँ झरकर मुन्नाके देह पर गिर पड़ती हैं। कामिनीके पेड़में छिपकर कोयल रह-रहकर गीत गाने लगती है, दूर पर कहींसे एक कोयल सप्तम् स्वरमें 'कुहू कुहू' कर रही है।

नीले आकाशमें तरह-तरहके पहाड़ दिखाई पड़ते हैं। बागके घने वृक्षोंके बीचसे आकाश समुद्रकी तरह दिखाई पड़ता है। मुन्ना एक टक उसी ओर देख रही है, वह सोचती है कि इसी समुद्रमें तो वे नहीं बह रहे हैं? परन्तु कहीं दिखाई तो नहीं पड़ते? इतने पास हैं, तो फिर दिखाई क्यों नहीं पड़ते?

एक दासीने उसके पास आयी और उसके बालोंको जो जटाकी

तरह उलझ गये थे गुरभाने लगी । फिर भोलानाथकी स्त्री आकर उसके पास बैठ गयी । मसीन जबसे गये हैं तबसे रोज वइ मुन्नाको देखने आती है । मुन्ना एक बार उसकी ओर देखकर फिर आकाशकी ओर देखने लगी । थोड़ी देर बाद फिर किसीके पैरका शब्द हुआ, मुन्ना चौंककर पीछे देखने लगी । आजकल मुन्ना हवाके शब्दसे भी चौंक उठती है । एक अपरिचित स्त्री उसे दिखाई पड़ी परन्तु तुरंत मुन्नाने मुँह फेरकर पहलेकी तरह आकाशकी ओर देखने लगी । स्त्री धीरे-धीरे आकर उसके सामने बैठ गयी । भोलानाथकी स्त्रीने कहा—तुम कौन हो जी ?

स्त्री—कोई नहीं जी । इसी मढ़ल्लेमें रहती हूँ, मेरा नाम मैना है । बीबी जी शायद यही हैं न ?

दासीने बाल मुसुझाते हुए कहा—क्यों जी, तुम्हें इससे क्या मतलब ?

स्त्री—क्या पृछनेमें भी हर्ज है ?

दासी चिढ़ गयी । कंघी जमीनमें रखकर कहने लगी कि तू कौन है ? मुझसे झगड़ा करने आयी है ?

भोलानाथकी स्त्री—चुप रहो मोती, झगड़ा करनेसे क्या लाभ ?

मोती कंघी उठाकर फिर मुन्नाका सिर झाड़ने लगी और कहने लगी—देखो न झगड़ा मोल लेकर लड़ने आयी है !

स्त्री—मैं झगड़ा कर रही हूँ या तू ? देखो तो सही, मैं तो अच्छी बात कहने आयी थी पर इसने तो झगड़ा ही करना आरम्भ कर दिया ।

दासी फिर कुछ कहना चाहती थी, परन्तु भोलानाथकी स्त्रीने उसे रोककर कहा—क्या कहने आई हो ? कहो न ।

स्त्री—बड़ी अच्छी खबर । सुनते ही इनका मलीन मुख चाँद की तरह चमक उठेगा ।

मुन्ना अब तक दूसरी ओर देख रही थी । सहसा उसकी ओर चकित दृष्टिसे देखने लगी, उसका हृदय मानों काँप उठा । उसने कुछ पूछना चाहा पर पूछ न सकी । भोलानाथकी स्त्री उसके मनकी बात समझ गयी । उसने भी कुछ उत्सुकताके साथ पूछा—महम्मद मसीन साहब क्या आ रहे हैं ?

तृपित व्यक्ति जैसे जलकी ओर देखता है उसी प्रकार मुन्ना उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगी । उस स्त्रीने कुछ हँसकर कहा—नहीं जी नहीं, यह ऐसी साधारण खबर नहीं है । तुम्हारी बीबीजी रानी होंगी । नवाब खाँ जहाँखाँने शादीका पैगाम भेजा है ।

मुन्नाका पीला मुख सहसा लाल हो गया, पर तुरन्त ही और भी पीला हो । गया उसकी आँखोंमें आँसू भर आये, उसने सिर नीचा कर लिया । स्त्रीने कहा—हाँ जी, मुँह उठाकर इधर देखो, कुछ कहो । नवाबसे क्या कहूँगी, बतादो ।

स्निग्ध बादलमें बिजली छिपी रहती है, उपाके प्रकाशमें भी ताप रहता है, मुन्नाके स्वाभाविक कोमल हृदयमें भी जा गर्व छिपा था, उसमें प्रबल आघात लगा । मुन्नासे अब सहन न हो सका, जीवनमें उसने अपनेको इतना अपमानित कभी नहीं समझा था, इतनी क्रोधित भी वह कभी नहीं हुई थी । कष्ट, दुःख क्रोध और

अपमानसे वह अधीर होकर खड़ी हो गयी; कम्पित और उत्तेजित स्वरसे उसने कहा—उनसे कह देना कि अभी मुझे गङ्गाकी गोदमें आश्रय है ।

मुन्ना तेजीके साथ वहाँ से चली चली गयी और दूसरे कमरेमें जाकर किवाड़ बन्दकर जमीनपर लेटकर फूट-फूटकर रोने लगी । बार-बार विलाप करके कहने लगी—पिता तुम कहाँ हो ? इस अपमानसे मेरी रक्षा कौन करेगा ? भाई मसीन, इस समय तुम भी कहाँ चले गये ? क्या तुम भी एक बार मेरी खबर न लोगे ? किन्तु तुम तो बिना बुलाये ही आकर मुझे धैर्य देत थे, इस समय मैं व्याकुल होकर तुम्हें पुकार रही हूँ तो भी क्या मेरी खबर न लोगे ?

निस्तब्ध गृहमें मुन्नाके रोनेकी प्रतिध्वनि होने लगी । उसके रुदनसे कठोर दीवाल भी मानो रोने लगी परन्तु और किसीने उसकी कोई खबर न ली ।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

परामर्श

मुन्ना जब चली गयी, तब वह स्त्री भौचक सी हो गयी । ऐसी अच्छी बात सुनकर मुन्ना क्यों क्रोधित हो गयी, इसे वह समझ न सकी । उसने कहा—बापरे, यह कैसी लड़की है । अच्छी बात भी कहनेसे ऐसा क्यों करती है ? हम लोगोसे यदि कोई ऐसी बात कहे तो हम उसे सिरपर रख लें ।

भोलानाथकी स्त्री—हाँ जी, तुम लोगोमें यह कैसी चाल है ? विधवा होनेपर भी हम लोगोमें विवाह नहीं होता पर पतिके रहते ही तुम लोगोमें कैसे विवाह हो जाता है !

स्त्री—कौन जाने भाई तुम लोगोमें क्या चाल है, पर हम लोगोकी चाल तो बहुत अच्छी है । यदि पति हमें त्याग दे तो चाहे वह जिन्दा रहे या न रहे हमको उससे क्या मतलब ?

दासी—माजी ! हम लोगोमें भी तुरंत शादी थोड़े ही न हो जाती है । पतिके मरने पर या त्याग करने पर चालीस दिन तक हम लोगोको शोक करना पड़ता है ।

भोलानाथकी स्त्री—वाह ! चालीस दिन तो बहुत दिन है । तब तक यम तुम लोगोको क्यों नहीं ले जाते, मैं तो यही सोचती हूँ !

स्त्री—यम यदि हम लोगोको ले जाय तो फिर शादी कौन

करे ? क्या कहें, वैसी नयी उम्र नहीं है, नहीं तो मेरा शौहर जबसे मरा तबसे मेरी भी दो-तीन शादी हो जाती ।

यह कहकर वह हँसने लगी और सोचा कि मैंने कैसी दिछुगीकी बात कही है । उसकी उस हँसीके विकाससे उसकी पान खाई हुई दोनों काली ओठोंसे काले-काले दातोंकी दो पंक्ति दिखाई पड़ने लगी । यदि कविकी भाषामें कहें तो कह सकते हैं कि नील कमलमें भौरें गूँजने लगे । हँसीके वेगसे उसकी देह हिलने लगी । कानोंकी बाली हिलने लगी । यह हँसती हुई अपने हाँथोंको हिलाती हुई वहाँ से उठकर चली गयी । परन्तु बरन्दा पार करके जब वह रास्तेमें पहुँची तब उसके मनमें अनेक तरहकी चिन्ता होने लगी । बड़ी हिम्मत करके उसने नवाबसे इस कामका भार लिया था, परन्तु उसकी वह हिम्मत अब कहाँ गयी ! दीवान न जाने उसे क्या कहेंगे ? यह बुरी खबर लेकर वह नवाबके यहाँ कैसे जायगी ?

रास्तेमें जब वह जा रही थी तो उसे हमारा पूर्व परिचित प्रधान पहरेदार दिखाई पड़ा । जबसे उसकी नौकरी छूट गयी है तबसे वह घर ही पर रहता है । नवाबके यहाँके किसी नौकरको अपने घरके पाससे जाते देखकर वह बड़ा प्रसन्न हो जाता है और उसे अपने घर ले जाता है । पहले जिन पर वह प्रभुत्व करता था अब उसीसे बार-बार सलाम करके अपने दुर्दशाकी बात सुनाता । फिर नौकरी पर बहाल होनेकी आशासे वह उसका चिरकृतज्ञ बन जाता । परन्तु ज्यों ही वह उसके घरसे बाहर निकलता, त्यों ही अँगुठा दिखाकर वह उसका मुण्डपात करनेका विचार करने लगता ।

मैना नवाबके यह आन-जान लगी है, यह खबर जबसे उसे मिली है, तबसे मैना उसकी मौसी हो गयी है। मैनाको देखते ही वह मौसी मौसी करके उससे अपने घर चलनेके लिये विनती करने लगा। मौसी भी अपना डर बतानेमें चूकी नहीं। उसे क्षणभरका भी समय नहीं है, नवाब उसके लिये व्याकुल हो रहे हैं, यह बातें विशेष रूपसे पहरेदारको बताकर उसने उसके प्रस्ताव पर घोर आपत्ति प्रकाशितकी। परन्तु इतनी आपत्ति करते हुए भी बिना आपत्तिके वह उसके साथ उसके घरमें जाकर बैठ गयी। असलमें नवाबके यहाँ जानेको उसे कुछ भी उत्कण्ठा नहीं थी बल्कि यह बुरी खबर लेकर जानेमें उसे संकोच मालूम होता था।

इधर-उधरकी बातोंके बाद पहरेदारने कहा—मौसो जी, क्या कुछ प्रबन्ध हुआ ?

नवाबके यहाँ नौकरी फिर लगा देनेके लिये सिपाहीने मौसीसे कई बार कहा था। मौसीने भी उसे तसल्ली देकर कहा था कि तुम्हारे नौकरीकी चिन्ताके कारण मुझे रातको नींद भी नहीं आती। परन्तु वास्तवमें इस बातकी उसे याद भी नहीं थी। इसलिये पहरेदारने जो सोचकर इस बातको कहा था, मैना उसे समझ न सकी। मैनाके मनमें उस समय और ही विचार उठ रहे थे। इसलिये उसने उसी प्रकार समझकर कहा—होगा क्या ! लड़की क्या है मानो बाप ! बात कहते ही खाने दौड़ती है ! पर, हाँ, रे ! तूमे यह खबर कैसे मिली ? यह बात तो किसीके जाननेकी नहीं है ?

पहरेदार बड़ा चतुर था। उसने सोचा कि कुछ न कुछ इसमें

गुप्त बात अवश्य है। उसे इसके पेटसे बाहर निकालना चाहिये। उसने कहा—वाह ! मैं न जानू यह भी कोई बात है। सब बातें पहले मेरे पास आती हैं। हाँ, तो उस लड़कीने क्या कहा ?

मैना—ऐसा कमबख्त लड़की मैंने कहीं नहीं देखी, किसी प्रकार भी वह शादी करना नहीं चाहता !

पहरेदार अन्दाजसे उसका सब मतलब समझ गया। उसने कहा—यह तो बड़े आश्चर्य्यकी बात है। हाँ तो वह कहाँकी लड़की है मौसी ?

मैना—सब जानता है और यह नहीं जानता ? वही उस बड़े मकानकी मुन्ना बीबी, महम्मद मसानकी बहन।

पहरेदारको बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उसने कहा—यह तो मैं जानता हूँ फिर क्या हुआ है ?

मैना—फिर होगा क्या ? अब नवाब साहबसे जाकर क्या कहूँ बतलाओ ?

पहरेदार—उनसे जाकर कहो—और कुछ नहीं, एक बार हुक्म देनेकी देर है।

मैनाने सोचा, बात तो बुरी नहीं है। उसने कहा—बेटा, वह किसीके फन्देमें नहीं आवेगी। क्या तू उसे ला सकेगा ?

पहरेदारने दाँत पीसकर भौंहे चढ़ाकर कहा—क्यों न सकूँगा ? उसकी बहनको पकड़ लाऊँगा। अगर उसको पाऊँ तो उसका सिर काट डालूँ; काफिर !

मैना—काफिर क्यों कहता है रे ? वह तो मुसलमान है।

पहरेदार—वह काफिर नहीं, तो है क्या ? उसके अमले काफिर हैं, गुमास्ते काफिर हैं, कारिन्दे काफिर हैं, और उसके गवैये काफिर हैं उसके सब साथी काफिर हैं । उसका रक्त-पान कर सकनेसे मैं विहिश्त जा सकता हूँ ।

मैना—तब तू वहीं जा । मैं अब नवाबके यहाँ जाती हूँ ।

पहरेदार—दोहाई मौसी, भूलना नहीं नवाब साहबसे कहना कि इस वन्देके रहते उन्हें कोई सोच न करना पड़ेगा । केवल चरणों में आश्रय चाहता हूँ ।

बीसवाँ परिच्छेद

उत्तेजना

संसारमें जो वस्तु दुर्लभ होती है उसीका गौरव अधिक होता है। खाँ जहाँखाँने जबसे सुना है कि, मुन्ना उनके प्रस्तावसे सहमत नहीं है, तबसे उनके हृदयमें मुन्नाका गौरव बहुत अधिक हो गया है।

खाँ जहाँखाँने कभी सोचा भी नहीं था कि मुन्ना उनकी प्रार्थना को अस्वीकार कर देगी। अभागिनी, अनाथिनी मुन्ना इस बुरी हालत में भी नवाब खाँ जहाँखाँकी बेगम होनेसे इन्कार करेगी, इसका उन्हें ध्यान भी नहीं था। इस समाचारसे उनकी आशापर विजली गिर पड़ी। उनके आत्म अभिमानमें कड़ी चोट लगी। वह प्राणपण से इस चोटको भुलानेकी चेष्टा करने लगे। मन-ही-मन मुन्नाका चित्र उन्होंने जो अङ्कित किया था उसे क्रोध रूपी अग्निमें भस्म करनेकी चेष्टा करने लगे। बहते हुए वासना श्रोतको वह रोकनेकी इच्छा करने लगे परन्तु सफल नहीं हुए। उनके हृदयमें मुन्नाकी वह दिव्य छवि और भी उज्ज्वल हो उठी। रुद्ध वासनाका श्रोत और भी प्रबल हो उठा।

खाँ जहाँखाँको कभी प्रेमका भाव उदय नहीं हुआ था। जब जब उन्होंने अपना नया विवाह किया था, तब तब उसीके प्रेममें वह मग्न रहते थे। परन्तु कभी किसीके प्रेमसे उनके हृदयमें इस

प्रकारकी आग नहीं जली थी। इस नवप्रज्वलित अग्निके सामने वह सब प्रेम-अग्नि निस्तेज और शीतल मालूम होने लगी।

नवाबकी आज्ञासे मैना उनके पास खबर लेकर आयी थी। वह खड़ी-खड़ी उनके नैराश्यपूर्ण मुखको देखने लगी। उसने अपनी तीव्र दृष्टिसे नवाबके हृदय तकको देख लिया। वह उनकी दुर्बलता समझ गयी और तब धीरे-धीरे कहने लगी—अभी तो और भी उपाय है।

नवाब साहब चौंक उठे, चकित दृष्टिसे उसकी ओर उन्होंने देखा, मानो उस दृष्टिका यही मतलब था कि क्या उपाय है ?

मैना—हुजूर ! आपका दासानुदास सेवक मदारअली आपके हुक्ममें हाजिर है—सिर्फ हुक्मकी देर है।

नवाबने कुछ कहा नहीं, कुछ पूछा भी नहीं, एक दूसरेको जान गये।

ऐसे बहुतसे काम हैं जिसे मनुष्यको अपने निकट भी प्रकाश करनेकी इच्छा नहीं होती, इसी प्रकारका यह भी एक काम था। उस कामको करते हुए भी मनुष्य जान-बूझकर आँख मूँद लेना चाहता है, मानो ऐसा करनेसे ही उसकी बुराई ढक जायगी।

मैना नवाबका संकोच समझ गयी उसने साहस करके कहा—ऐसा करनेमें तो कोई दोष भी नहीं है, वह थोड़े दिनोंमें आपही वशमें हो जायगी।

मैनाकी यह बात नवाबको अच्छी नहीं लगी। उन्होंने क्रोधसे मैनाकी ओर देखा, वह तब और कुछ कहनेका साहस न कर

सकी । सलाम करके धीरे-धीरे चली गयी । दीवानसे जाकर अपने मनकी सब बातें भली प्रकार खोलकर कह दी ।

वह चली गयी, परन्तु उसका प्रभाव नहीं गया । वह जो बात कह गयी थी, घरमें रह रहकर वही बातें प्रतिध्वनित होने लगी, नवाब साहब घबड़ाकर उस घरसे उठकर चले गये ।

एक्कीसवाँ परिच्छेद

वही बात

सलाउद्दीन चले गये, और घरमें एक पैसा भी छोड़ नहीं गये । उनकी अवशिष्ट सम्पत्ति बिक्रि गयी, तो भी ऋण परिशाथ नहीं हुआ, पावनेदार लोग रहनेका मकान तक बिकवानका उद्योग करने लगे । केवल यही नहीं इसी समय जहाज डूबनेका भी समाचार आया । मुन्नाके पिता या मसीन इस समय यदि होते तो कुछ न कुछ व्यवस्था कर लेते, परन्तु मुन्ना इस समय विल्कुल ही निःसहाय है । दो दिन बाद उसके रहनेका भी ठिकाना न रह जायगा । अनाथिनी बलिका अदृश्यके प्रबल आँधीसे गिरे हुए पेड़की तरह छिन्न भिन्न होकर संसार समुद्रमें न जाने कहाँ बह जायगी ।

यह बात जब खाँ जहाँखाँने सुना, तब उनके मनमें एक बार फिर आशाका संचार हुआ ।

अपने मालिककी वासना पूरी न कर सकनेके कारण दीवानके मनमें भी बड़ा दुख था । नवाबके मनकी हालत वह अच्छी तरह जानते थे, सफल होनेसे लाभकी बहुत बड़ी आशा थी पर यदि सफल न हुए तो भी सहानुभूति प्रकट करनेका यह उत्तम अवसर था । वह इस सुयोगको छोड़ना नहीं चाहते थे । उन्होंने नवाबसे जाकर कहा—हुजूर ! अगर हुक्म दीजिये तो एक बार फिर पैगाम

भेजा जाय, औरतोंका घमंड जब तक नहीं टूटता तब तक वह बशमें नहीं होती ।

नवाब साहब भी यही सोच रहे थे ।

एक बार फिर मुन्नाके पास प्रस्ताव भेजा गया । परन्तु दो दिन बाद जब फिर दीवान साहबने अपना मुँह ऐसा मुँह लेकर नवाब साहबसे आकर कहाकि, मुन्ना अब भी सहमत नहीं है, तब नवाबको सहन नहीं हुआ । वह क्रोधित होकर कह उठे—एक मामूली औरतसे बार-बार यह अपमान ! किसने तुमसे ऐसा करनेके लिये कहा था ?

दीवान यह न कह सका कि आपने ही कहा था । उसने यह बात हजम करके कहा—हुजूर ! कसूर हो गया, माफ कीजिये । परन्तु इस अपमानका बदला क्या नहीं लिया जा सकता ?

नवाब—बदला ! मामूली औरतसे बदला लेकर तुम लोग अपनेको वीर समझ सकते हो, परन्तु मैं नहीं ।

दीवान—मैं यह नहीं कहता । यदि आप चाहें तो आपकी मनोकामना अब भी पूरी हो सकती है । सिर्फ हुक्मकी देर है ।

नवाबने उमकी ओर देखा, जो बात मैदाने कहा था वही यह भी कह रहा है । परन्तु इस बार नवाब साहब 'चौंके' नहीं । उन्होंने कहा—परन्तु जबर्दस्ती करनेसे क्या दिल मिल सकता है ?

दीवान—हुजूर ! यह बात जब आप स्वयं कह रहे हैं तब मुझे कुछ कहना उचित नहीं है । परन्तु आप क्या जबर्दस्तीकर रहे हैं ? आप तो अपना तन-मन, और धन देकर उसकी पूजा करना चाहते

हैं। प्रेमसे क्या हृदय न मिलेगा? नूरजहाँ क्या जहाँगीरका अनादर कर सकी थी?

नवाब—परन्तु?

दीवान—मैं समझ गया। आप कहना चाहते हैं कि यह पाप है परन्तु निराश्रयको आश्रय देना क्या पाप है? यदि आश्रय देने पर भी उसकी इच्छा न होगी तो आप शादी न कीजियेगा। यदि उसके भाग्यमें भीख ही माँगना बड़ा होगा तो उसे रास्तेमें इसीलिये छोड़ दीजियेगा। इसमें तो कोई पाप नहीं है।

नवाबको और कुछ अब कहना नहीं रहा। असल बात यह थी कि किसी प्रकारकी युक्तिके जालसे अपनी बुद्धिको ढाँकनेके लिये खों जहाँखा स्वयं उत्सुक थे। परन्तु अबतक उन्हें कोई जाल ऐसा नहीं मिला था। अब तक जान-बूझकर अन्याय करनेके लिये उनकी इच्छा नहीं थी। कदाचित्त ऐसा अभ्यास न होनेके कारण हो रहा था। पर कुछ दिन बाद उनका यह संकोच भी न रह जाता, क्योंकि प्रवृत्तिने एक बार जिसे दास बना लिया है—न्याय—अन्यायका विचार उसके मनमें अधिक दिन तक नहीं ठहर सकता।

दीवान उनके मनकी बात समझ गया था। इसीसे उसने सोचा कि नवाबकी वासनापूर्ण करनेके लिये युक्ति दिखवाकर यदि उनका संकोच दूर कर दिया जाय तो नवाब साहब अवश्य ही प्रसन्न होंगे।

नवाब साहब थोड़ी देर चुप रहे। उसके बाद उन्होंने कहा—
अच्छा अभी जाँव फिर जो कुछ होगा कहूँगा।

बाइसवाँ परिच्छेद

प्रवृत्ति

दीवान जब चला गया तब नवाबके मनमें अनेक तरहके विचार उठने लगे। आज ही नहीं, जिस दिनसे मैदाने यह बात कही थी उसी दिनसे उनके मनमें इस प्रकारका विप्लव हो रहा था। उसी दिनसे वह अपने हृदयके साथ सत्र बल लगाकर रात-दिन युद्धकर रहे थे। उसी दिनसे नवाबको अन्तःपुरका पेश आराम अच्छा नहीं लगता था। वह कभी-कभी एकान्त कुंजमें अथवा पेड़ोंके नीचे बैठकर सोचने लगते थे। वे सोचते सोचते एका एक चौंक उठते थे। उन्हें ऐसा जान पड़ता था कि कोई कह रहा है कि इसमें दोष ही क्या है ? निस्तब्ध रात्रिमें वह गहरी नींदसे एकाएक जाग पड़ते थे। उस समय उन्हें जान पड़ता था कि कोई कह रहा है कि इसमें दोष ही क्या है ? वह अपने विवेकसे इस विद्रोही भावको परास्त किया चाहते थे परन्तु परास्त कर नहीं सकते थे। रात दिन अपने मनके तर्क-वितर्कसे खाँ जहाँखाँकी शान्ति दूर हो गयी थी।

ऐसी अवस्थामें वे कभी नहीं पड़े थे। अभ्यासके कारण उनका हृदय अब भी पत्थरकी तरह निरुत्तर नहीं हो गया है, स्वार्थके चरणों पर अपने हृदयको बलिदान करनेमें अब तक वह निपुण नहीं हुए थे, इसीसे प्रकृति उनके कानोंमें लगातार इस उत्तेजनाका

महा-मन्त्र दे रही थी कि इसमें दोष ही क्या है ?

परन्तु आज वह अपनी आत्म रक्षा नहीं कर सके । इतने दिन तक जिस सशयसे वह दूर भाग रहे थे, आज उसीको वह उक्ति समझकर भेंटने लगे । उन्होंने सोचा कि वास्तवमें, मैं निराश्रयको आश्रय दूँगा, इसमें दोष काहेका ? अपना हृदय देकर उसकी पूजा करूँगा, इसमें दोष क्या हो सकता है ? उस पूजाको क्या कोई अप्राप्त्यकर सकता है ! नहीं-नहीं, ऐसा नहीं हो सकता—नहीं हो सकता । आज वह अपने मनके इस तर्कका उत्तर न दे सके, आज वह तर्कमें हार गये, युद्धमें परास्त हो गये । आज वह स्वयं अपने ही निकट आप ठग गये । वासनाके अतीत, प्रवृत्तिके अतीत, स्वार्थके अतीत, मनुष्यके हृदयमें जो अन्तःतर देश है, यदि उस अन्तःतर प्रदेशमें छिपकर वह अनुसन्धानकर सकते, तो समझ सकते कि वह किस प्रकार प्रतारित हुए हैं ! परन्तु आत्म परीक्षा करनेका उन्हें साहस नहीं है। सूर्यके प्रकाशसे जैसे तारे मलिन हो जाते हैं, वसी प्रकार इस लालसाकी प्रबलतासे उनके सैकड़ों गुण निस्तेज हो गये ।

मनुष्य ! तुम्हारी क्या सामर्थ्य है कि तुम प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त करना चाहते हो ? सावधान ! इसी प्रकार लोग अप्रसर होते हैं और इसी प्रकार अपनेको नष्ट कर देते हैं । प्रवृत्तिके प्रबल भँवरमें पड़ने पर जब तक वह अंतिम सीमा तक नहीं पहुँचता जब तक उसे चेतना नहीं होती । परन्तु उस समय चेतना होने पर भी उसमेंसे उसके बाहर निकलनेकी शक्ति नहीं रह जाती, यदि शक्ति हो भी तो अवसर नहीं मिलता । वह जान-बूझकर पतंगकी

तरह प्रवृत्ति रूपी अग्निमें जलनेके लिये दौड़ता है और फिर वहाँ से लौट नहीं सकता। सावधान ! मनुष्यों प्रवृत्तिका अंकुर देखो तुम्हारे मनमें निकलने न पावे।

हाय ! कौन कह सकता है कि इसी प्रकार कितने दयालु पुरुष निष्ठुर हो गये हैं, कितने पुण्यात्मा पापी बन गये हैं, और कितने रत्नोंमें कलंक लग गया है !

आज जो मनुष्य पिशाचकी तरह मनुष्यका रक्तपान करके प्रसन्न हो रहा है, वही कुछ दिन पहले एक वूँद आँसू देखकर व्याकुल हो जाता था। आज जो स्त्रियाँ राक्षसीकी तरह नीच पैशाचिक-भावसे उन्मत्त होकर जीवन बिता रही हैं, वही दो दिन पहले पापका सामान्य दृश्य देखकर काँप उठती थीं। कौन कह सकता है कि उनका यह परिवर्तन क्षण-स्थायी उग्र प्रवृत्तिके कारण नहीं हुआ है ?

खाँ जहाँखाँ !—कौन कह सकता है कि तुम सामर्थी हो ! तुम तो प्रवृत्तिके हाथोंमें एक साधारण खिलौनेकी तरह हो। तिनकेकी तरह फूँककर प्रवृत्तिने जिसे अपने पैरोंके नीचे कुचलकर उसका सर्वस्व चूरकर दिया, वह तो दुर्बल है—अत्यन्त दुर्बल है। संसारमें ऐसा कौन है जो दुर्बल न हो परन्तु अपनी दुर्बलताको पहिचानकर जो उससे घृणाकर सकता है वही सामर्थी है। परन्तु खाँ जहाँखाँ ! जिस क्षण तुम्हें अपनी दुर्बलता पर प्रेम उत्पन्न हुआ, उसी क्षण तुमने मृत्युको जीवन समझकर आलिंगन किया। क्षमताको अपने ही हाथोंसे तोड़कर दूर फेंक दिया।

तेइसवाँ परिच्छेद

कृतज्ञता

एक भोपड़ीमें माता और पुत्रमें बात-चीत हो रही थी ।

माता—हजार रुपया ! कितना होता है ? कै गन्डा ?

पुत्र—कै गन्डा होता है यह तो मैं नहीं जानता ।

माता—तो भी बीस गन्डेके लगभग तो होगा न ?

पुत्र—उससे भी बहुत ज्यादा ।

माता—उससे भी बहुत ज्यादा ? तब उसे गिनेंगे कैसे ?

बुढ़ियाके मनमें गिननेकी महा चिन्ता उपस्थित हुई यह देखकर पुत्रने कहा— न गिन सकेगी न सही ।

बुढ़िया अपना पोपला मुँह खेलकर लड़कोंकी तरह देखने लगी । ऐसी अजीब बातें मानों उसने कभी सुनी नहीं थी । थोड़ी देर बाद उसने कहा—तू यह कैसी बात कहता है, बिना गिने मैं उसे रखूंगी कैसे ? देख न—घर छवानेमें पाँच गन्डेसे कम क्या लगेगा ? उसके बाद बहू लाना होगा, उसमें भी पाँच गन्डेसे कम खर्च नहीं पड़ेगा । रुपयेके लिये ही अब तक पतोहूका मुँह न देख सकी ।

यह कहकर बुढ़िया आँखका आँसू पोंछने लगी ।

पुत्र—अरे इतना पिन-पिनाली क्यों है, यह सभी होगा—

माता—सिर्फ इतनेसे ही तो काम न चलेगा न, बहूके लिये दो-एक गहना भी बनवाना पड़ेगा ? एक जोड़ा पैजेय, छागल,

चूड़ी, ताबीज, बन्दी बेना यह सब बिना दिये मैं मुँह दिखाई कैसे करूँगी ?

पुत्र—इसमें कितना लगेगा ?

माता—उस दिन बक्सीकी माँने बहूके लिये यह सब खरीदा था, उसमें छः सात गंडा रुपया खर्च होगया था ।

पुत्र—तब कौन बड़ी बात है, ऐसा गहना तो तू बहुत सा बनवा सकेगी ।

माताने बहुत ही प्रसन्न होकर कहा—हाँ ! तब और कुछ हो या न हो, पैजेब तो चाँदीकी ही बनवाना होगा, मेरी बहू चाँदीकी पैजेब पहिनकर झम-झम करके घूमेगी ! पाँच गन्डे रुपयेमें अच्छी पैजेब बन जायगी ।

पुत्र—बनवा दी जायगी ।

माता—तब क्यों न ताबीज भी चाँदीकी ही बनवाई जाय ? पाँच गन्डे रुपयेमें एक जोड़ा ताबीज मोतीकी माँने बनवाया था ।

पुत्र—अच्छी बात है ।

माताके प्रसन्नताकी उस समय सीमा न रही । उसने एक-एक करके सभी गहने चाँदोके बनवानेका प्रबन्ध कर डाला । उसके बाद सचमुच जैसे कोई रुपया गिने उसी प्रकार जमीनमें हाथ रखकर एक-एक गहनेके लिये रुपये गिन-गिनकर भलग करने लगी । गिनते-गिनते उसने कहा—क्यों रे अली, इतना धन तुम्हे कहाँ मिला ?

पुत्र—अभी मिला कहों, मिलेगा ।

माता—वह एक ही बात है। कौन देगा ?

पुत्र—खाँ जहाँखाँ।

माता—खाँ जहाँखाँ ? उनकी जय हो ! पर यह तो बताकि वह क्यों रुपया देंगे ?

पुत्र चुप हो गया। माँ ने कहा—चुप क्यों हो गया ?

पुत्र—कोई योही रुपये थोड़े ही देगा है, काम करना होगा।

माता—क्या काम ?

पुत्र—तुझसे कैसे कहूँ ? बात बिगड़ जाय तब ?

बुढ़ियाको बड़ा कौतुहल हुआ, उसने कहा—माँ से कहनेमें बात बिगड़ जायगी ? इतना अविश्वास ? खुदा ! खुदा !!

पुत्रके पेटमें बात पच नहीं रही थी, उसने कहा—तब सुन, पर किसीसे कहना नहीं। बीबी जीको चुराकर लाना होगा।

माता—बीबी जी ! कौन बीबी जी ?

पुत्र—मुन्ना बीबी।

माता सूने जमीनके ऊपर जो कल्पित रुपये गिन रही थी उन्हें घृणासे दूर फेंककर कहा—निमक हराम कहींका। तू ऐसा काम करेगा तो तेरे गलेमें मैं छूरी भोंक दूँगी। तू जानता नहीं किसने तुझे दो दो बार बचाया था, किसके अन्नसे अब तक तू जी रहा है ? उसीकी बहनको तू चुराना चाहता है ? अल्लाह ! अल्लाह !!

पुत्र—इसीसे तो मैं तुझसे कहना नहीं चाहता था। मैं जानता था कि कहनेसे ही गड़बड़ हो जायगा। बैठकर आरामसे जिन्दगी बिता सकेगी, इतना भी नहीं समझती ? सोच तो सही कितने रुपये ?

माताने चिढ़कर कहा—ऐसे रूपये पर मैं लात मारती हूँ !

पुत्रके मनमें भी पहलेसे कभी-कभी अनुतापका भाव आरहा था। माताकी बात सुनकर उसने सोचाकि वास्तवमें काम अच्छा नहीं है। अब उसने कहा—परन्तु अब तो सब ठीक-ठाक हो गया है, अब इससे हटें कैसे ? नवाब साहब क्या योंही छोड़ देंगे ?

माता—क्या ठीक-ठाक हुआ है, सब साफ-साफ कह।

तब पुत्रने जो कुछ प्रबन्ध हुआ था कह दिया। बुढ़ियाने सुन कर कहा—इसमें सोच काहेका, तूने जैसे उन लोगोंके साथ जानेके लिये कहा है, वैसे चले जाना, ऐसा करनेसे तेरे ऊपर किसीको सन्देह न होगा। और मैं जाकर अभी यह बात बीबीजीसे कह देती हूँ, वह सन्ध्याके पहले ही घर छोड़कर चली जायँगी। ऐसा करनेसे दोनों ओर कुछ गड़-बड़ न होगा।

बुढ़िया तुरंत उठकर मुन्नाके घर चली गयी।

संसारमें जिसकी रक्षा करते हो, वह तुम्हारी भी रक्षा करता है। संसारमें एक तिनकेका भी अनादर नहीं किया जा सकता। दुस्तर समुद्रमें बहते हुएको एक तिनका भी पथ-प्रदर्शक होकर तीरपर लेजा सकता है। एक दिन वह भी तुमसे अधिक क्षमतावान हो सकता है। इसीसे हम कहते हैं, किसीकी उपेक्षा न करो। मसीनने जब बुढ़ियाका उपकार किया था, तब क्या वह जानते थे कि एक दिन यह सामान्य दीन-हीन स्त्री उनका भी उपकार करेगी, जिसका बदला वह अपना जीवन देकर भी न दे सकेंगे ?

चौबीसवाँ परिच्छेद परामर्श

आजकल मसीनके घरमें दरवान और नौकर चाकरोंका जमघट बिल्कुल नहीं है। इसीसे फाटक रात-दिन भीतरसे ही बन्द रहता है। कोई भीतर जाना चाहता है तो उसे दरवाजा खलवाकर जाना पड़ता है। बुढ़ियाने आकर जब दरवाजेपर कई बार पुकारा तब भोलानाथने नीचे आकर दरवाजा खोल दिया। मसीनके जानेके बादसे मुन्नाके रक्षककी तरह वह यहीं रहते हैं। केवल स्नान और भोजन करनेके लिये वह दो-एक बार घर जाते हैं।

बुढ़ियाको भोलानाथ पहिचानते थे, क्यों कि वह कभी-कभी मसीनसे रुपये लेनेके लिये आती थी। आज उन्होंने जब उसे देखा तब समझा कि कुछ भित्ता मँगनेके लिये वह आई है। इसलिये उन्होंने पूछा—बुढ़िया माई, क्या चाहिये ?

बुढ़िया—मैं एकबात कहनेके लिये आई हूँ। पहले उसे सुन लीजिये।

बुढ़ियाके स्वर और भावमें एक प्रकारकी अस्वाभाविक गंभीरता प्रकट हो रही थी, जिससे भोलानाथके मनमें एकाएक विपत्ति की आशङ्का हो उठी। उन्होंने झटपट दरवाजा बन्द करके पूछा—क्या बात है ?

बुढ़िया—आज रातको इस घरमें चोरी होगी, सावधान रहना !

भोलानाथ—चोरी ! यहाँ रखाही क्या है कि कोई चोरी करने आवेगा ?

बुढ़िया—धन दौलतसे बढ़कर एक रत्न जो यहाँ मुझा बीबी हैं
उन्होंने चुरानेके लिये खाँ जहाँखाने हुक्म दिया है ।

भोलानाथ सिरपर हाथ धरकर चिन्तासे व्याकुल होकर कहने
लगे—ऐसा भी क्या हो सकता है ?

बुढ़िया—खुदा करे कि ऐसा न हो, परन्तु मैं भूठ नहीं कहती ।
भोलानाथके हाथ-पैर अवसन्न हो गये । उनके ललाटसे पसीना
चूने लगा । उन्होंने बरामदेकी एक खूँटी दोनों हाथोंसे पकड़कर
अपनेको सम्हालकर कहा—राम राम ! यह क्या मामला है !

बुढ़िया—जी, इस प्रकार घबड़ाने से तो काम न चलेगा । कुछ
उपाय करना चाहिये ।

भोलानाथ—ठीक है !

यह कहकर वह झटपट दरवाजा खोल कर एक पैर ज्यों ही
बाहर निकाला त्यों ही बुढ़ियाने कहा—जनाब आप क्या करते हैं ?
कहाँ जाते हैं ?

उनका एक पैर चौखटके इस पार और दूसरा उस पार था;
उन्होंने कहा—मैं आदमी बुलाने जाता हूँ, डाकुओंके आने पर वे
उन्हें मारकर भगा देंगे ।

बुढ़िया—वे लोग बहुतसे हैं । इतने डाकुओंको भगाना सहल
नहीं है । और इसी समय इतने लोगोंको आप जुटा भी न सकेंगे ।

भोलानाथको मानो होश हुआ । उन्होंने कहा—ठीक है, इसके
लिये भी रुपये की आवश्यकता है, पर रुपये तो हमारे पास नहीं
हैं । पर बुढ़िया माई क्या जब लोग इस बातको सुनेंगे तब क्या

मुझा बीबीकी रक्षा करनेके लिये दौड़ न पड़ेंगे ? ऐसे भयङ्कर अत्याचारका समाचार सुनकर क्या मनुष्य चुप रह सकता है ?

बुढ़ियाने अत्यन्त दुःखसे हँसकर कहा—भाई इस समय आप पागलकी भाँति क्यों बातें करते हैं ? खाँ जहाँखाँका नाम सुनकर कौन ऐसा है जो अपना प्राण देनेके लिये यहाँ आवेगा ? और यदि कोई आवे भी, तो क्या तुम खाँ जहाँखाँके साथ लड़कर विजय प्राप्त कर सकोगे ? उनके इशारेसे क्या तुम्हारा घर-द्वार धन-दौलत जलाकर खाक न कर दिया जायगा ?

भोलानाथ हताश होकर कहने लगे—तब क्या करूँ ? इसी समय बीबीजीको लेकर घर छोड़कर कहीं चला जाऊँ ?

बुढ़िया—अभी बहुत रोशनी है, अभी जाना ठीक नहीं । कोई देख लेगा तो सर्वनाश हो जायगा । थोड़ी देर और ठहर जायँ । थोड़ा अँधेरा हो जाने पर यहाँसे भाग जाना । वे सब दो पहर रातको आवेंगे । पर यह तो बताओ कि कहाँ भाग जावोगे ?

भोलानाथकी आँखोंमें आँसू आ गया ।

बुढ़िया—इस बातको खूब समझ लीजिये कि वेलोग जब बीबीजीको इस घरमें न पावेगे तो पहले आपके ही घर खोजने जायँगे ।

भोलानाथ कुछ उत्तर न दे सके । फिर बुढ़ियाने कहा—अगर आप कहें तो आज रातभर बीबीजीको मैं अपने घरमें ले जाकर रखलूँ ।

भोलानाथ इससे सहमत हो गये । दूसरा कोई होता तो इस प्रस्तावसे सहजमें सहमत न होता । क्योंकि हजार हो, तो बुढ़िया एक अपरिचित साधारण स्त्री है । दो-एक बार उसे देखनेके अति-

रिक्त भोलानाथ उसका विशेष परिचय कुछ भी नहीं जानते थे। मुन्नासे भी बुढ़ियाकी जान पहिचान नहीं है, मुन्नाको उसने अभी आँखसे देखा भी नहीं है। तिसपर मुन्नाके लिये उसको इतनी माया क्यों हो रही है—कि वह माँगकर उसे आश्रय देना चाहती है। यह बात कहीं खुल जाय तो खाँ जहाँखाँ किस प्रकार उसपर क्रोधित होंगे यह जानकर भी बुढ़िया इसकी पर्वाह नहीं कर रही हैं। इन सब बातोंको सोचकर दूसरा कोई होता तो उसके मनमें अनेक तरहके विचार उत्पन्न होते और वह मुन्नाको इस बुढ़ियाके घर भेजनेमें बहुत कुछ आगा पीछा करता, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु भोलानाथ स्वतंत्र विचारके मनुष्य थे, वह जानते थे कि जहाँ अत्याचार है वहीं सहानुभूति भी है, जहाँ अन्याय है वहीं सहृदयता भी है, इसमें अपना पराया, परिचित अपरिचितकी क्या आवश्यकता है? ऐसी जगह वह जो स्वयं करते, उसे ही वह सबके लिये स्वाभाविक समझते थे, इसके विरुद्ध देखकर वह चकित होते। इसलिये बुढ़ियापर उन्हें तनिक भी सन्देह नहीं हुआ। उनका हृदय कृतज्ञतासे परिपूर्ण हो गया। पर वह एक शब्द भी कह न सके, केवल अश्रुपूर्ण कृतज्ञ नेत्रोंसे बुढ़ियाकी ओर देखते हुए वह अपना हाथ मलने लगे। बुढ़िया यदि तानपूरा होती तो उन तारोंको झनकारकर अपने मनकी कृतज्ञता वह सहजमें ही प्रकाशित कर सकते। बुढ़िया उनकी इस नये प्रकारकी कृतज्ञता समझ सकी या नहीं यह कौन जानता है? पर वह थोड़ी देर निस्तब्ध होकर खड़ी रही और फिर सलाम करके चली गयी।

पचीसवाँ परिच्छेद

डाकू

घोर अन्धकारसे जिस समय झाड़ीका अन्धकार दूना हो गया उस समय-दो पहर रात बीते सशस्त्र डाकू महम्मद मसीनके घरके इधर उधर आकर खड़े हो गये । पापकी कराल मूर्ति मानो शांतिमयी रजनीके हृदय पर खड़ी होकर विकट हास्य करने लगे । निस्तब्ध बन काँप उठा । सुप्त पक्षीगण मारे भयके चीत्कार करने लगे । दो स्यार झाड़ीसे निकलकर चकित दृष्टिसे डाकुओंकी ओर देखकर धीरे-धीरे जंगलमें चले गये । डाकुओंने किसी बात पर ध्यान न देकर अपना कार्य आरम्भ कर दिया । थोड़ी ही देरमें सेंध लगाकर दीवालमें एक बड़ा मोखा कर डाला । उसी मोखेसे एक-एक करके वे सब बागमें घुस गये । बागमें जब उनका पैर सूखे पत्तों पर पड़ने लगा तब उसके शब्दसे और तारोंके प्रकाशसे उनका हृदय एक बार काँप उठा । भयभीत दृष्टिसे वे बार बार इधर-उधर देखते हुए अपने सर्दारके पीछे-पीछे चलने लगे । घरके बरामदेके नीचे आकर वे खड़े हो गये । उसी समय एक डाकू बरामदेका खम्भा पकड़कर ऊपर चढ़ गया और कमरसे एक रस्सीकी सीढ़ी निकालकर नीचे लटका दिया । उसी सीढ़ीसे एक डाकू और भी ऊपर आगया । उन दोनोंने रस्सीकी दो सीढ़ी लटकाकर और दो डाकुओंको ऊपर चढ़ा लिया । इसी प्रकारसे

थोड़ी ही देरमें बहुतसे डाकू ऊपर चढ़ आये । केवल दो-चार नीचे रह गये । ऊपर आकर एक डाकू दक्षिणके एक टूटी हुई खिड़कीसे घरमें घुस गया । यह सब पता मैदाने बता दिया था । घरमें अन्धकार देखकर जेबसे चकमक पत्थर निकालकर रोशनी कर लिया । तब बाहर जितने डाकू थे सब घरमें घुस आये । उसी रोशनीसे प्रत्येक अपनी-अपनी मसाल जलाकर मुन्नाको खोजने लगे । निःतन्ध रात्रिमें सूने घरकी दीवालपर उनकी छाया नाचती हुई एक घरसे दूसरे घरमें जाने लगी । वह शून्य-भवन मानों प्रेतों का बिहार-क्षेत्र होगया । वे खोजते-खोजते थक गये, तो भी उन्हें कोई घरमें न मिला । अन्तमें निराश होकर उन्होंने सोचा कि मुन्ना कहीं भाग गयी । इन डाकुओंका सर्दार वही प्रधान, पहरेदार मदारी था । उसने सोचा कि मुन्ना और कहाँ भाग कर जायगी ? वही पाजी काफिर भोलानाथ उसे अपने घर ले गया होगा ! वह मन-ही-मन गर्जने लगा और कहने लगा कि बचा मेरे हाथसे बचकर तुम कहाँ जावोगे ? वह उसी समय अपने साथियोंको लेकर बागमें उतर आया । वहाँसे दौड़कर छड़दिवालीके बाहर गया । पाँच-छः बलवान डाकुओंको वहीं थोड़ी देर और खोजनेके लिये छोड़कर वह वहाँसे चला गया ।

छड़दिवालीके बाहर झाड़ीमें मैना दो-चार डाकुओंके सहित उसका आसरा देख रही थी । मदारी उसे यहीं बैठनेके लिये कह गया था । उसके आते ही मैदाने बड़े आग्रहसे उसकी ओर देखा । पर मुन्नाको न देखकर हताश होगयी । और उसने कहा—क्या हुआ ?

उसने जब सुना, मुन्ना यहाँ नहीं है, तब दाँतोंसे ओठ काटती हुई उसने कहा—यह क्या बात है ! वह तो कभी घरके बाहर भी नहीं निकलती और आज वह यहाँ नहीं है ! जान पड़ता है किसीने बात खोल दी है, जिसने ऐसा किया होगा, उसको आज मैं जिन्दा न छोड़ूँगी ।

अन्धकारमें मैनाका क्राधान्ध मुख तो नहीं दिखाई पड़ा, परन्तु उसके विकृत स्वरसे भाड़ोंमें मानो पिशाचिनी नाचने लगी । अली उसकी बात सुनकर काँपने लगा । मदारो भी दाँत पीसकर कहने लगा—उसे मैं अपने नहींसे चीर डालूँगा । परन्तु अभी—उसकी बातें सुनकर अली सचमुचमें अपने शरीरपर नहीं और दाँतोंकी तीक्ष्ण धारका अनुभव करने लगा, वह मारे डरके एक पेड़को डाल पकड़कर कहने लगा—अल्लाहकी कसम, मैंने इन सब बातोंको किसीसे भी नहीं कहा है ।

अली बिचारेने इसके पहले कभी ऐसा काम नहीं किया था । वह मेहनत करके सदैव खाता रहा । इस काममें वह आज पड़ाही था । क्या करनेसे क्या होता है, यह सब उसे माजूम नहीं था । इसलिये उसने डरसे घबड़ाकर इन बातोंको कह डाला । उसको यह बात सुनते ही मदारोने उसका गला धर दबाया और कहा—निमकहराम, तूने ही कहा है ।

अली थर-थर काँपने लगा । उसने कहा—अल्लाहकी कसम, मैंने नहीं कहा है, मेरी माँने कहा है ।

मैना दाँत पीसती हुई कहनेलगी—हाँ ! तेरी माँने कहा है !

बता वह कहाँ है नहीं तो यहीं तुझे हलाल कर डालूँगी । अलीने कम्पित स्वरमें कहा—मुझे छोड़ दो, मैं सब बतला देता हूँ ।

मदारीने उसका गला छोड़ दिया । उसने कहा—अल्लाहकी कसम, मेरा कसूर नहीं है, मेरी माँ उसे घर ले गयी है ।

उसे दंड देनेका अवसर न देखकर दण्ड भविष्यके लिये मुलतवी रखकर मदारीने कहा—चल तब वहीं चल । उसी क्षण वे दौड़ते हुए बुढ़ियाके घरकी ओर चल पड़े ।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

बन्दी

बुढ़ियाके चले जानेपर भोलानाथने गृहिणीको बुलाकर सब बातें खोलकर कह दिया। गृहिणी मुन्नासे यह सब बातें कहनेके लिये भन्तःपुरमें गयी। भोलानाथ चुपचाप अकेले बाहर एक घरमें बैठे रहे। वह उस समय चिन्ता-समुद्रमें डूब रहे थे। कुछ दिन पहले शायद ऐसे कष्टके अवस्थामें तानपूराको बजाकर कुछ शान्त हो जाते या कोई उपाय सोच लेते, परन्तु जबसे मसीन चले गए हैं तबसे उनका यह अभ्यास भी विल्कुल छूट गया है। तभीसे तानपूरासे उनका सम्पर्क नहीं रह गया। मसीनके जानेपर एक दिन भोलानाथ तानपूरा उठाकर जब बजाने लगे तब उनके आँखोंसे आँसू बहने लगे थे। उसी दिनसे मसीनके यहाँका तानपूरा और उनके घरका भी तानपूरा दोनों ही कहीं छिप गया। भोलानाथको दिखाई नहीं पड़ा। अभ्यास बस कभी-कभी जब उनका हाथ तानपूराके लिये फड़कने लगता तब वह मसीनके बैठकामें आकर खड़े हो जाते, एक बार चारो ओर देखने लगते। जहाँ मसीन आकर बैठते थे, और जहाँ भोलानाथ बैठकर गाते थे और जहाँ घर जाती समय वह तानपूराको रख जाते थे उधर एक बार देखकर एक दीर्घ निःस्वास लेकर वह बैठकसे बाहर चले आते थे। फिर तानपूरा खोजने वह नहीं आते थे।

मसीनके जानेके बादसे ही भोलानाथ उदास हो गये हैं। तिसपर आज इस विपत्तिकी आशंकासे वे और भी व्याकुल हो गये हैं। भोलानाथ उस समय केवल मन-ही मन कहने लगे 'असहाय निर्दोषीको यह दंड ? हे देवी, महामाया ! मैंने सदा तेरे करुणा पर विश्वास किया है। सदासे मैं जानता हूँ कि तू दुष्टोंका दमन और शिष्टोंका पालन करती है, उस विश्वासको माता आज क्या तू तोड़ देगी ? अपने अनाथ संतानकी ओर आँख उठाकर क्या न देखेगी ?' भोलानाथ हाथ जोड़कर कम्पित कंठसे गाने लगे।

गाते-गाते समय बीत गया। सन्ध्याकी अन्धकार मिलनेसे उनके हृदयमें घोर अन्धकार हो गया। वे उसी अन्धकारमें अकेले बैठे हुए केवल गा रहे थे।

भोलानाथकी गृहिणी लौटकर आगयी। वह स्तब्ध होकर खड़ी हो गीत सुनने लगी। जो कुछ कहने आयी थी, वह भूल गयी। उस करुण गीतको सुनकर उसके आँखोंसे भी अश्रु धारा बहने लगी। क्षण भर बाद उसने अपनेको सम्हालकर धीरेसे कहा—

बीबी जी बाहर आकर खड़ी हैं।

भोलानाथ उसी समय झटपट, आँखें पोछकर उठ खड़े हुए। गृहिणीने कहा—तुम उन्हें लेकर बुढ़ियाके घर चले जाव, मैं मोतीके साथ अपने घर जाती हूँ।

बुढ़ियाके घर मुन्नाको छिपाकर भी भोलानाथ उत्कंठा दूर नहीं हुई। न जाने कैसा मन करने लगा। वह सोचने लगे कि यदि बाकू मुन्नाको घरमें न पाकर दूसरी जगह खोजने जाँय तो, और

किसी प्रकार बुढ़ियाके घरमें पहुँच जाँय तो क्या होगा ? इस विपत्तिसे बचनेके लिये उन्हें एक उपाय सूझ पड़ा । वह मुन्नाको बुढ़ियाके घर पहुँचाकर फिर मसीनके घर आकर बगीचेके एक झाड़ीके नीचे छिप गये । उन्होंने सोचाकि यहाँ बैठकर डाकुओंकी गति विधि में देख सकूँगा । इसलिये जब वे इस घरको खोजकर जाने लगेंगे उसी समय मैं बुढ़ियाके घर जाकर मुन्नाको लाऊँगा । इस प्रकार इस विपत्तिसे किसी प्रकार छुटकारा पाकर सबेरा होते ही इस स्थानको नमस्कार करके कहीं अन्यत्र चला जाऊँगा ।

आधी रात्रिको जब डाकू उनके आँखोंके सामनेसे बगीचेमें प्रवेश करके ऊपर चढ़ गये उस समय भोलानाथके शरीरमें खून बड़े वेगसे दौड़ने लगा । वह एक बार उठकर खड़े हो गये, परन्तु फिर आँख मूँदकर बैठ गये । थोड़ी देर बाद जब उनको बगीचेके बाहर जाते हुए देखा तब उनका उत्तेजित शरीर शिथिल हो गया । वह वहीं दीर्घ स्वास लेकर बैठे रहे । थोड़ी देर और बीत गया, जब उन्होंने किसीकी आहट न पाया, तब यह सोच कर कि सब चले गये, झटपट झाड़ीके बाहर निकल आये । परन्तु कुछ दूर जानेके पहले ही दो-चार डाकुओंके सामने वह भापड़े । उनको देखते ही वे सब बोल उठे—‘कौन है रे, पकड़ लो !’ यह कहकर सबने उन्हें घेर लिया । परन्तु जब देखा कि वह पुरुष है, तब हताश होकर उनके पीठपर दो-चार घूँसा जमाकर कहा—औरतको कहाँ रखा है ?

एकाएक बन्दी होकर भोलानाथ पहले भौंचकसे हो गये, पर

फिर अपनेको सम्हाल कर कहा—बाबा, मैंने तुम्हारा क्या किया है ? मुझे क्यों सताते हो ?

उन लोगोंने कहा—चुप रह काफिर, औरत कहाँ है ?

भोलानाथने उत्तर दिया—राम राम ! यह बात क्या कही जा सकती है ? पर तुम लोगोंने सब जगह खोज लिया है, अब मुझसे क्यों पूछते हो ?

फिर दो-चार जबरदस्त चोट उनके पीठपर पड़ी, वह गिरते-गिरते बच गये । डाकू लोग मिलकर उन्हें अनेक तरहकी गालियाँ बेंते हुए रस्सीसे उनका हाथ बाँधने लगे । भोलानाथने कहा—बाँधते क्यों हो ? कहाँ ले जाओगे ? चलो मैं चलता हूँ । उन लोगोंने उनके मुँहपर एक कपड़ा बाँध दिया और हाथकी बँधी हुई रस्सी पकड़कर उन्हें खींचते हुए ले चले ।

सत्ताइसवाँ परिच्छेद

बन्दो

बुढ़ियाके निस्तब्ध कुटीके टिमटिमाते हुए दीपकके उजालेपर एक विपादपूर्ण आशङ्काके भावकी छाया पड़ रही है। एक अज्ञात और अदृश्य आशङ्का अपने निःशब्द, निःस्वास, परस्वामसे कुटीके घोर निस्तब्धताको मानो और भी निस्तब्ध कर रहा है। उस कराल मूर्ति अन्धकारके हाथमें तीखी तलवार भून रही है और रह-रहकर मानों मुन्नाके हृदयको बेधना चाहती है। मुन्नाको जान पड़ता है कि तलवारकी नोक रह रहकर उसके हृदयमें विंध रही है। मुन्नाके हृदयका रक्त प्रवाह इस समय मानो बन्द हो गया है। मुन्ना अज्ञान, पापान मूर्तिको तरह उस अन्धेरी आशङ्काकी ओर देख रही है।

अन्धकार और अदृश्य वस्तुके साथ युद्ध नहीं किया जा सकता। इसीलिये वह इतनी भयानक है, जिसका हृदय सैकड़ों निश्चित विपत्तिमें भी अटल रहता है वह भी इस अनिश्चित भयसे काँप उठता है।

मुन्नाकी वह पीड़ित और उदाम मूर्तिको देखकर अचेतन दीप्त शिखा भी मानों व्याकुल हो गयी है, वह जो रह-रहकर काँप उठती है, वही मानों उसके हृदयका मर्मभेदी दीर्घ निःस्वास है।

बुढ़ियाके मुँहसे कोई बात नहीं निकल रहा है, वह जब कुछ

कहना चाहती है तब उसके हृदयसे केवल हा हाकार शब्द उठने लगता है। निस्तब्ध गृहमें उसका व्याकुल स्वर ऐसा भयङ्कर जान पड़ता है कि उसे सुनकर वह स्वयं चौंक उठती है और निस्तब्ध हो जाती है।

बाहर एकाएक पैरोंका शब्द सुनायी पड़ा, द्वारको किसीने खटखटाया। अलीने पुकार कर कहा—माँ, दरवाजा खोल।

बुढ़ियाने उठकर दरवाजा खोल दिया—उसने सोचा कि भली काम निपटाकर अकेला ही घर लौट आया होगा। परन्तु दरवाजा खोलते ही डाकू घरमें घुस पड़े। मुन्ना अब तक अपने हृदयमें इस तलवारकी नोकका अनुभव कर रही थी, अब मानों वह पूरी उसके हृदयमें बिध गयी। डाकुओंको देखते ही वह मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

डाकू घरमें आकर खड़े हो गये। मैना दीया तेजकरके मुन्नाके मुँहके पास ले आयी। वह एक हाथसे मुन्नाके मुँहका घूँघट खोल कर, बड़े खुशीसे बोल उठी—‘हाँ, हाँ, यही तो है, उठाले! उठाले!!’ परन्तु कोई अग्रसर नहीं हुआ। दीयाके उजालेमें वह निर्जीव देवीके समान मूर्ति जब साफ-साफ डाकुओंको दिखाई पड़ी, तब उन निर्दयी डाकुओंका हृदय भी स्तम्भित हो गया। मैनाने फिर कहा—अब देरी क्यों करत हो? तब मदारीने थराते हुए पैरों और काँपते हुए हाथोंसे मुन्नाको जमीनसे उठा लिया। गोदमें लेकर वह झटपट घरसे बाहर निकल आया। साथके और लोग भी उसके पीछे-पीछे चले।

अट्ठाइसवाँ परिच्छेद

अटल

भोलानाथको नवाबके महलमें लाकर डाकुओंने उनके मुँहका कपड़ा खोल दिया और एक ने जाकर नवाबको खबर दी। कुछ देर बाद लौटकर वह भोलानाथको नवाबके पास ले गया। नवाबके सामने पहुँचते ही भोलानाथने कहा—बन्दगी हुजूर ! छोड़ देनेका हुक्म दीजिये, दुष्ट लोग मुझे जबरदस्ती पकड़ लाये हैं।

नवाबकी आँखें इस समय लाल हो रही थीं, उनका शरीर काँप रहा था, जान पड़ता था कि एक रुद्ध प्रवाह बड़े वेगसे उनके शरीरमें चल रहा है। उन्होंने कहा—तुमने अपने पैरोंमें आप ही बेड़ी डाली है, तुम चाहो तो उसे स्वयं खोल सकते हो।

भोलानाथने देखा कि मामला बेढब है। वह अपना हाथ रगड़ने लगे।

नवाब—कहाँ रखा है, बतलाओ, अभी हम तुम्हें छोड़ देते हैं।

भोलानाथने मन-ही-मन कहा—अब देखता हूँ कि छुटकारा नहीं होगा। उन्होंने नवाबसे कहा—हुजूर ! और जो कुछ पूछना हो पूछें पर यह बात मैं नहीं बता सकता।

खाँ जहाँखाँ बैठे थे, उत्तेजित होकर खड़े हो गये। उन्होंने कहा—बता न सकोगे ? जानते हो, किसके सामने खड़े हो ?

भोलानाथने एक बार गला साफ करके कहा—हुजूर ! हम दोनों ही एक दूसरेके सामने खड़े हैं।

नवाबकी आँखोंसे चिनगारी निकलने लगी। उन्होंने कहा—
न बतानेसे क्या दशा होगी, जानते हो ?

भोलानाथ फिर अपना हाथ रगड़ने लगे।

नवाबने एक डाकूकी ओर देखा, उसने अपनी तलवार म्यानसे निकालकर भोलानाथके सिरके पास ऊँचो करके पकड़ा। नवाबने कहा—देखो !

भोलानाथने तनिक हँसकर कहा—जिसकी इच्छासे संसार चल रहा है, उसीके हाथमें जन्म-मृत्यु है। यदि मुझे इसी प्रकार मारनेकी उसे इच्छा होगी, तो उस इच्छामें अवश्यही कोई उद्देश्य छिपा होगा। इसलिये उस उद्देश्यको पालन करके मरनेमें मुझे दुःख नहीं है।

खाँ जहाँखाँका लाल चेहरा पीला हो गया, वह क्या उत्तर दें, निर्णय न कर सके। सिर नीचा किये हुए उस बड़े कमरेके एक ओरसे दूसरी ओर दो-तीन बार टहलकर वह फिर भोलानाथके सामने जाकर खड़े हो गये। इस बार नम्र स्वरसे उन्होंने धीरे-धीरे कहा—भोलानाथ, मुझसे बैर न करो, तुम मेरी सहायता करो, मुझे सदाके लिये एहसान-मन्द बनालो, नवाब खाँ जहाँखाँ आज तुम्हारे हाथ पर हाथ रखकर शपथ पूर्वक कहता है कि.....

भोलानाथने 'राम राम' कहकर अपना हाथ खींच लिया। और कहा—नवाब साहब ! ऐसी बात न कहिये। पुरस्कारका लोभ न दिखाइये, इससे तो दंडकी बातें अच्छी हैं।

नवाब साहब लज्जित होकर पीछे हट गये। थोड़ा ठहरकर उन्होंने क्रुद्ध होकर कहा—मैं समय देता हूँ, अब भी सोच लो।

भोलानाथ—हुजूर ! जब जन्मा हूँ, तब एक दिन अवश्यही मरना होगा, बिछौने पर पड़े-पड़े रोगसे मरनेकी अपेक्षा आपके हाथोंसे मरना अच्छा ही है ।

नवाब साहबका धैर्य अब जाता रहा । उनकी समस्त आशा निराशामें परिणत हो गयी है, उसने पहलेसेही अपनेको इतना बेवस कर लिया है कि इस समय लगाम खींचनेकी उन्हें सामर्थ्य नहीं है । जिस समय मनुष्यको संसार मात्र अपना विरोधी जान पड़ता है, जिस समय उसे अमृत विष सा दिखाई पड़ता है, और जिस समय दया, करुणा, न्याय और विवेक विद्रोहीसे जान पड़ते हैं उस समय जैसी अवस्था उसकी होती है वैसी ही अवस्था इस समय खौं जहाँखौंकी हुई । उन्होंने ज्याँही इशारा किया, त्योंही भोलानाथके दोनों ओर दो तलवार चमक उठी । भोलानाथने उन दोनों तलवारोंके बीचमें अपना सिर नीचा कर दिया । मृत्युके पहले उन्होंने एक बार फिर कहा—आप जिसे ले सकते हैं उसे ले लीजिये परन्तु जो मेरे हाथमें है, उसे आप न ले सकेंगे ।

भोलानाथके इस अदम्य साहससे नवाब साहब स्तम्भित हो गये । उनकी पहली अवस्था क्षण भरमें विलीन हो गयी । न जाने क्या सोचकर उन्होंने कहा—नहीं, मारनेकी आवश्यकता नहीं है, इसको बन्दी रखो ।

डाकू भोलानाथको लेकर चले गये । कुछ देर बाद मदारीने आकर कहा—हुजूर ! हुक्म तामील, नयी बेगम हाजिर है !

उन्तीसवाँ परिच्छेद

सराय

सिन्धु देशमें मुसलमानोंके अनेक तीर्थ हैं। इसीलिये देश देशान्तरोंसे यहाँ मुसलमान यात्री आया करते हैं। 'मगरपीर' (मंगो पीर) दक्षिण सिन्धुका एक तीर्थ-स्थान है।

मगरपीर कराँचीसे उत्तर तीन कोसपर एक पहाड़ी-घाटी है। यहाँ कुंजोंसे घिरा हुआ एक मन्दिर है और मन्दिरके पास ही छोटे छोटे टापुओंसे घिरा हुआ एक उष्ण जलाशय है। उसमें बड़े-बड़े मगर कुंभ-कर्णी निद्रामें सोये रहते हैं। खजूरके जङ्गलसे निकले हुए एक गन्धकके भरनेसे इस जलाशयकी उत्पत्ति हुई है। इसलिये इसमें स्नान करना बड़ा लाभदायक है।

मुसलमानोंके निकट इस तीर्थका बड़ा महत्त्व है। क्योंकि बहुत दिनोंसे एक दन्त कथा इस प्रकार चली आ रही है कि एक पीरने एक फूलको मगर बना दिया था उसीके वंशज इस जलाशयमें वास करते हैं। अपनी वासना पूरी करनेके लिये लोग मगरपीर जाते हैं और वहाँ बकरी आदि चढ़ाकर मगर देवको प्रसन्न करते हैं।

आज सन्ध्याके थोड़े ही पहले एक समुद्रगामी मसूला (छोटा जहाज) मुसलमान यात्रियोंको लेकर कराँची पहुँचा। संध्या देखकर यात्रियोंने रात भर नावमें ही रहनेका विचार किया है। परन्तु उनमेंसे एक यात्री तीरपर उतरा। पाठक समझ गये

होंगे कि यह महम्मद मसीन हैं। प्रायः चार महीना हुआ मसीनने नौका-यात्रा की थी, यात्रा करनेके उपरान्त एक दिन भी ऐसा नहीं हुआ होगा जिस दिन वह अपने स्थानपर पहुँचनेके लिये व्यग्र न हुए हों। नौका जितनी ही आगे बढ़ती थी उतनी ही उनकी व्याकुलता बढ़ती जाती थी।

मसीनकी व्याकुलता तीर्थ-यात्राके पुण्य-लाभके लिये नहीं थी, यह व्याकुलता पितृ-दर्शन की थी। वह इस इच्छाके आगे रात-दिन आराम और तकलीफ कुछ भी नहीं समझते थे।

नाव तीरपर लगते ही वह व्याकुल हृदयसे उतर पड़े। सिन्धु उस समय अँग्रेजोंके पास नहीं था। इसलिये उन्होंने मीरके राज्यमें प्रवेश किया। कितने दिनोंके बाद, न जाने कितना कष्ट सहन करने बाद आज उन्होंने कराँचीके भूमिपर पैर रखा है। परन्तु पिता कहाँ हैं ? यहाँ वह कहाँ हैं, उनका पता कैसे लगेगा ? जब तक नावपर थे, तब तक उन्हें केवल कराँची पहुँचनेकी उत्कण्ठा थी। उस समय उनके मनमें इस बातका ध्यान नहीं था कि कराँची पहुँचनेपर पिताका दर्शन सहजमें नहीं हो सकेगा। तीरे उतर कर उन्होंने व्याकुल दृष्टिसे चारों ओर देखा। जब उन्होंने देखा कि, चारों ओर अपरिचित दृश्यमें वह बिल्कुल अकेले हैं, तब एकाएक उनका शरीर और मन शिथिल हो गया। थोड़ी देर तक वह चुपचाप केवल समुद्रकी ओर देखते रहे।

जाड़ेका दिन था, समुद्रमें इस समय भीषण तर्जन-गर्जन, और ऊँची-ऊँची लहरें नहीं थीं। मनीरा खण्ड और छोटे-छोटे दीप

प्रशान्त और नीले समुद्रमें शोभायमान हो रहे थे । तीरपर बालूसे बने हुए, काले-काले छोटे-छोटे पहाड़ोंपर चन्द्रमाकी चाँदनी छिटक रही थी । रह-रहकर ठण्डी हवा जोरसे बह रही थी, जिससे मानो जान पड़ता था कि चन्द्रमाकी चाँदनी काँप उठती है । तीरपर टकराती हुई तरंगोंका कल-कल शब्द वायुमें मिल रहा था ।

तीरपर कोई मनुष्य नहीं दिखाई पड़ता; दो-एक मल्लाह मसीन के पास आकर उनकी ओर चकित दृष्टिसे देखकर चले गये । एक मल्लाह उनके पास आकर खड़ा हो गया । वह कुछ कहना चाहता था परन्तु मसीनने पहले ही उससे पूछा—मैं यात्री हूँ, सराय खोजता हूँ । क्या पासमें कोई सराय है ?

मसीनने उससे हिन्दीमें पूछा—परन्तु उसने इसारेसे कहा कि उनकी भाषा वह नहीं समझता । तब उन्होंने फारसीमें कहा परन्तु उसे भी वह नहीं समझ सका । उसी समय एक लम्बा चौड़ा सिन्धो उनके पाससे जा रहा था । मल्लाहने सिन्धी भाषामें उससे कुछ कहा । तब उस व्यक्तिने मसीनके पास आकर फारसीमें उनसे पूछा कि वह क्या चाहते हैं ? मसीनने जो बात पहले पूछा था वही इससे भी पूछा । उसने उत्तर दिया—सराय बहुत दूर नहीं है । चलिये, मैं रास्ता दिखा देता हूँ ।

मसीन उसे धन्यवाद देकर उसके साथ-साथ चले । समुद्रका दृश्य पीछे छूट गया, वे सरायके पास पहुँचे ।

उस समय कराँची अँग्रेजोंके वर्तमान कराँची शहरकी तरह नहीं थी । उस समय समुद्र-किनारे बन्दरगाह नहीं था, तीरपर

केवल मल्लाहोंकी कुछ कुटी थी। करौंची शहरमें भी अधिक इमारत नहीं थी। अधिकांश पत्तोंकी झोपड़ी दिखाई पड़ती थी। कहीं-कहीं अमरोंके दो-एक मकान बने थे। जगह-जगह मसजिद और मन्दिर दिखाई पड़ते थे, परन्तु वे भी बहुत बड़े और सुन्दर नहीं थे। यहाँ पेड़ भी अधिक नहीं थे। कहीं-कहीं दो-एक पेड़ चाँदनी में छायाकी भाँति खड़े दिखाई पड़ते थे। वे लोग आपसमें बात चीत करते हुए एक दुकानके पास पहुँचे, इस दुकानके पास एक घर और था, वही यात्रियोंकी सराय थी। मसीनने सिन्धीसे पूछा—क्या आप बतला सकते हैं कि मताहर नामके एक यात्री यहाँ आये हैं ?

सिन्धीने कहा—नहीं, मैं नहीं जानता। यदि आये होंगे तो सरायमें पूछनेसे पता लग सकेगा।

मसीन भी इसी आशासे सरायमें आये थे। सिन्धी उन्हें सरायके द्वार तक पहुँचाकर चला गया। वह भीतर पहुँचे। भीतर बहुतसे यात्री थे, मसीन प्रत्येक यात्रियोंको ध्यानपूर्वक देखने लगे, और प्रत्येकसे ही पूछने लगे कि मताहर आगा नामके कोई यात्री यहाँ आये हैं ? यात्रीगण उनके इस व्यवहारसे चकित हो गये। सभी कौतूहलपूर्ण दृष्टिसे उनकी ओर देखने लगे। कोई-कोई तो उनकी ओर चुपचाप देखने लगे कोई रुढ़ स्वरसे अपरिचित भाषामें बड़बड़ाने लगे, कोई धीरे-धीरे हिन्दीमें कहने लगे—नहीं मताहर आगा यहाँ कोई नहीं है।

अन्तमें एक यात्रीने कहा—मताहर आगा ! जब मगरपीर में

गया था तब इस नामके एक आदमीको मैंने वहाँ देखा था सही !

एक अव्यक्त आनन्दसे मसीनका हृदय परिपूर्ण हो गया ।

उन्होंने पूछा—उसके बाद ?

उसने कहा—उसके बाद हम लोग वहाँसे लौट आये, वे लोग मक्का जानेवाले जितने यात्री थे वहीं रह गये, इससे अधिक मैं और कुछ नहीं जानता ।

मसीन—यह कितने दिनकी बात है ?

यात्री—सात-आठ दिन भया होगा ।

मसीन—मगर पीर यहाँसे कितना दूर है ?

यात्री—तीन कोस ।

मसीन—मुझे रास्ता दिखाकर कोई वहाँ आज ही ले जा सकता है ?

यात्री—मैं नहीं कह सकता । हम लोग दिनको गये थे । मेरे साथ जो गया था उसका घर पास ही है, उससे आप पूछ सकते हैं ।

यात्रीने सरायके द्वारपर आकर अँगुलीसे अपने साथका घर बता दिया, मसीन उस ओर दौड़ पड़े । उसके घर पहुँचकर उन्होंने उसे वहाँ नहीं देखा । उसके पुत्रने कहा कि वह घर नहीं है । यात्रीको लेकर कहीं गया है । मसीनने निराश होकर पूछा—और कोई साथी यहाँ आज मिल सकता है अथवा नहीं ?

लड़का—आज रातको तो कोई आदमीके मिलनेकी आशा नहीं है; दिनको अनेक आदमी मिल सकते हैं ।

मसीन—मगरपीरका रास्ता किधरसे है ? मुझे भली भाँति समझा दो ।

उस लड़केने उनका संकल्प समझकर, जहाँतक हो सका, पता बतला दिया । परन्तु साथ ही यह भी कह दिया कि जाना हो जायँ पर मैं समझता हूँ कि रात भर वहीं रह जाना अच्छा है । जिस प्रकार ठंड पड़ रही है, और रास्ता भूल जायँगे तो इस ठंडमें बड़ा कष्ट होगा ।

यह कहकर वह लड़का द्वार बन्द करने लगा । मसीन उसके बतलाये मार्गसे आगे बढ़े । उन्होंने सोचा कि यदि रातको यथा स्थान न भी पहुँच सकूँगा तो भी कमसे कम उसके कुछ पास तक पहुँच ही जाऊँगा । सबेरा होते ही वहाँ पहुँच जाऊँगा ।

चारो ओर सूखा और सूना विस्तृत मैदान दिखाई पड़ता है । कहीं-कहीं दो-एक काँटेदार छोटे-छोटे पेड़ और सूखी घास दिखाई दे रही है । इसके अतिरिक्त न तो कहीं पेड़ हैं न खेत और न कहीं वस्ती । कङ्कड़ पत्थरसे भरी ऊँची-नीची बलुआ जमीन, निस्तब्ध समुद्रकी तरह धाँय-धाँयकर रही है । कहीं-कहीं दूरपर छोटे-छोटे पहाड़ोंकी श्रेणी, आकाशके बादलकी तरह दिखाई पड़ती है । आकाश में चन्द्रमा निकला है, हवासे जो धूल उड़ रही है उससे चाँदनी कुछ धूमिल हो रही है । ठिठुरनेवाली ठंडी हवा बह रही है, मसीन ऐसे सून-सान मैदानमें ऐसे ठंडमें भी अकेले चले जा रहे हैं । इस ठंडमें भी उनके शरीरसे पसीना निकल रहा है, तो भी वह मैदानका पार नहीं कर सकते । एकाएक निस्तब्ध रात्रिमें उन्हें घंटेका शब्द

सुनाई पड़ा। थोड़ी ही देरमें एक दल ऊँटोंका दिखाई पड़ा। उन्होंने उनके पास आकर एक सवारसे पूछा—मगरपीर यहाँसे कितनी दूर है ? ऊँट सवारने हँसकर उत्तर दिया—पागल ! आज ही पहुँचना चाहता है क्या ? पासमें ही एक सराय है आज वहीं चला जा। मगरपीर आज न पहुँच सकेगा। यह कहकर ऊँट सवार आगे बढ़ गया। मसीन आगे बढ़े। थोड़ी दूर जानेपर ही राहके बाईं ओर उन्हें एक सराय दिखाई पड़ी।

सराय रक्षक जाड़ेके कारण अपने छोटे घरका द्वार बन्द करके आगमसे सो रहा था। एकाएक बार बार दरवाजा खटखटाये जानेसे उसकी नींद खुल गयी। उसने समझा कि कोई नया यात्री आया है। वह सोये ही सोये चिल्लाकर अपना रोष प्रकट करने लगा। परन्तु मसीनके एक बातसे उसकी चिल्लाहट बन्द हो गयी। उसने द्वार खोल दिया और मसीनके सामने आकर खड़ा हो गया। मसीनने उसके हाथोंमें कुछ रुपये देकर कहा—मगरपीर यहाँसे कितनी दूर है बता सकते हो ?

उसके असन्तोषका कारण अब जाता रहा। उसने नम्रता पूर्वक कहा—अभी बहुत दूर है, आप अभी एक कोस आये हैं, दो कोस और जाना पड़ेगा।

मसीनको यह सुनकर आश्चर्य्य हुआ कि अभी वह एक ही कोस आये हैं। उन्होंने चकित होकर पूछा—अभी जानेसे कब तक पहुँचेंगे ?

सराय—ठीक राहसे जानेसे सुबह पहुँच सकते हैं।

मसीनने कहा—ठीक राह कौनसी हैं ?

सराय—यहाँसे जाते समय पञ्चमका मार्ग ही मगरपीरका ठीक रास्ता है, परन्तु उसके बाद राहमें बहुत घुमाव फिराव पड़ गया है। यदि आप मार्ग भूल जायँगे तो पहुँचनेमें बहुत बिलम्ब होगा। रातभर यहीं रह जानेसे अच्छा होगा। कल सवेर मैं आपके साथ आदमी कर दूँगा।

मसान—तुम आज ही क्यों नहीं मेरे साथ चलते ?

सराय—हुजूर ! आपके साथ चलनेमें अपना अहोभाग्य सम्मत्ता हूँ, परन्तु सराय अकेला छोड़कर मैं कैसे चल्छूँ, यदि हमारे ऊपरके लोग जान जायँगे तो मेरा नौकरा छूट जायगा।

विवश होकर मसान रात भर सरायमें ही रहनेका विचार करके पछा—सराय मे इस समय कितने आदमी होंगे ?

सराय—इस समय सराय एकदम खाला है, केवल एक आदमी है। मेरे रहते आपको किसी प्रकारकी असु वधा न हांगी।

रक्षकने सरायके एक कोठरीमें जा चटाईसे घिरी हुई थी। दीया बालकर बड़े यत्नसे उन्हें बैठाया कुछ खानेकी सामग्री और पानी ला दिया। मसीनने इस अतिथि स्तकारके बदलेमें उसे भली भाँति संतुष्ट करके बिदा किया। उसके चले जाने पर मसीन सोये। सोनेके पहले द्वार बन्द किया, परन्तु चटाईका द्वार भलि भाँति न बन्द हो सका, उसके छेदसे नीलाबाशमें चन्द्रमा दिखाई पड़ने लगा। वह उसी ओर देखने लगे। मुन्नाके निर्मल हृदयकी उदासी, चन्द्रमाके कलंककी तरह उन्हें जान पड़ी। चन्द्रमाकी

ओर देखते हुए मसीनको संन्यासीको बात याद आ गयी । लम्बी साँस लेकर मसीनने कहा—संसार एक पहेलीकी तरह है ! जगतमें पापका परिणाम पुण्य है, दुःखका परिणाम शांति है । इस दुःखमय जगतके भीतर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' विद्यमान है । तब दुःखसे किस बातका डर है । चन्द्रमाकी ओर देखते देखते वह सो गये ।

एका-एक मसीन चौंक उठे, उस निर्जन गृहमें न जाने कौन मानो उन्हें पुकार उठा कि उठो । वह उठकर चकित दृष्टिसे घरके चारों ओर देखने लगे, पर कोई दिखाई नहीं पड़ा । केवल वही 'उठो' की प्रति ध्वनि उन्हें चारों ओरसे सुनाई पड़ने लगी । वह उठकर घरके बाहर आये, यह सोचकर कि शायद कोई बाहरसे ही पुकार रहा हो । बाहर भी कोई दिखाई नहीं पड़ा । परन्तु सहसा किसी बीमार मनुष्यकी कातर ध्वनि उनके कानोंमें पड़ी । यह ध्वनि कहाँसे आ रही है, यह जाननेके लिये वह ध्यान लगाकर सुनने लगे । परन्तु फिर वह ध्वनि सुनाई नहीं पड़ी । मसीनका हृदय व्याकुल हो उठा । इस निर्जन स्थानमें किस रोगीका यह कातर स्वर सुनाई पड़ रहा है ? उन्हें याद पड़ा कि वह जिस घरमें सोये थे, उसीके पास एक और यात्री टिका है । मसीन यह सोच कर कि यह स्वर उसीका होगा, उस कोठरीके द्वारपर आ खड़े हुए, वहाँ उन्हें फिर वही कातर ध्वनि सुनाई पड़ी । उन्होंने धीरे-धीरे चटाईका दरवाजा खोल दिया, घरमें एक आदमी सोया हुआ दिखाई पड़ा । वह सोया हुआ मनुष्य उसी समय करवट बदलकर कातर स्वरसे कह उठा—“आह ! पुकारे !”

मसीन चौंक उठे । धीरे-धीरे घरमें प्रवेश किया । वे रोगीके पास जाकर खड़े हो गये । कोठरीके कोनेमें रखे हुए एक दीपककी धीमी रोशनी रोगीके मुखपर पड़ रही थी । मसोनने जीर्ण-शीर्ण, मुमूर्षु मताहरको पहिचान लिया ।

तीसवाँ परिच्छेद

मृत्यु

मताहर और कितने दिन तक कन्याको बिना देखे रह सकते थे। मक्कासे घर लौटनेके अभिप्रायसे वह थोड़े ही दिन हुआ यहाँ आये हैं। उन्होंने सोचाकि तीर्थ-दर्शन करके अपने घर लौट चलेंगे। परन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और होता है कुछ। मगर-पीर देखकर जिस दिन यहाँ वे पहुँचे थे, उसी दिनसे वह बीमार हो गये हैं। साथमें जो लोग थे, वे दो-एक दिन तक उनके लिये ठहर गये, परन्तु फिर वे दूसरे तीर्थमें चले गये। वे लोग तीर्थ-यात्राके लिये आये थे, रोगीके पास अधिक दिन तक ठहरनेका उन्हें अवकाश नहीं था। निस्सहाय अकेले मताहर निर्जन प्रांतमें पड़े रहे। यहाँ सराय-रक्षकके सिवा उनका और कोई सहायक नहीं था। अपनी शक्तिभर वह मताहरकी सेवा करनेमें त्रुटि नहीं करता था। उसकी बुढ़िया माँ प्रायः दिन भर उनकी सेवा शुश्रूषा करती थी। रातको भी वह अकेले छोड़कर नहीं जाती थी। उसका पुत्र भी कभी-कभी आकर खबर ले जाता था। उन्हें जिन चीजोंकी आवश्यकता होती थी उसे भी वह लाकर देता था पर दूने दाममें। इसके अतिरिक्त वह और भी एक काम करता था। टोटका ओटका जो कुछ उसे मालूम था वह उसका निःसंकोच होकर प्रयोग करता था। परन्तु पीड़ा कठिन थी, कठिन ज्वरके

साथ ही नाना प्रकारका विकार उत्पन्न हो गया था। सराय-रक्षकके डाक्टरीसे उन्हें कुछ लाभ न हुआ। जिस दिनसे मताहर बिछौने पर पड़े थे, उस दिनसे बराबर वह छटपटा रहे थे। बेचैनी दिन-पर-दिन बढ़ती जाती थी। परन्तु आज सन्ध्यासे उस प्रकारकी बेचैनी नहीं है। ज्वर धीमा पड़ गया है, विकार भी छूट गया है, परन्तु एक कुलक्षण बना है, प्यास कुछ कम नहीं हुई है। इन कई दिनोंके बाद आज सन्ध्यासे उनके आँखोंमें नींद आई है। परन्तु प्यासके कारण रह-रहकर नींद खुल जाती है, पानी पीकर फिर वह सो जाते हैं। सराय-रक्षक आज अपने औषधिका गुण देखकर फूला नहीं समाता था। उसे अब तनिक भी सन्देह नहीं रह गया था कि शीघ्र ही मताहर उसकी औषधिसे आराम न हो जायँगे। इस समय वह इसी सोचमें पड़ा है कि इस औषधिको स्वप्नमें पाई हुई औषधि कहकर कब परिचय दे सकेंगे। स्वप्न प्राप्त औषधि ही उस समयकी 'पेटेन्ट' दवा थी।

एक पहरके बाद मताहरकी नींद फिर खुल गयी। उन्होंने जल माँगा। पास ही बुढ़िया बैठी थी, उसने जल दिया। जल पीकर वह फिर सो गये। थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया भी सो गयी। कुछ देर बाद फिर जब मताहरने जल माँगा तब बुढ़ियाने उन्हें जल नहीं दिया। उसके बदले मताहरने एक दूसरे आदमीको देखा। विस्मित होकर वे उसके मुखकी ओर देखने लगे। नींदका झोंका उनका जाता रहा, दोनों हाथ उठाकर क्षीण स्वरसे उन्होंने कहा—
यह कौन ? मसीन ?

मसीननं दोनों हाथोंसे पिताका दोनों हाथ पकड़ लिया। उनके आँखोंसे अश्रुधारा बहने लगी। कुछ देर बाद मसीननं कहा—बाबा ! मैं तुम्हें घर ले चलनेके लिये आया हूँ !

मताहरने भरे हुए कण्ठसे कहा—बड़े असमयमें मुझे ले चलने के लिये आया है, बेटा ! अब क्या लौटनेका समय है ?

मसीन पहले ही समझ गये थे, वह चुपचाप रोने लगे। मताहरने कहा—जब मैं घरसे चला था उस समय सोचा था कि अब फिर लौटना न पड़े तो अच्छा है, परन्तु थोड़े ही दिनोंके बाद उस बातको भूलकर घर लौटनेके लिये मन व्याकुल होने लगा। परन्तु जिस बातका मैं भूल गया था उसे विधाता कैसे भूल सकते हैं। उन्हींकी इच्छासे, एक राह छोड़कर मैंने दूसरे पर पैर रख दिया है। इस राहमें साथी कोई नहीं मिलता, जो सब साथी थे, एक-एक करके वे चले गये, अब अकेले इस निर्जन प्रान्तमें पड़े-पड़े इस भयङ्कर रास्तेको पार करनेका आसरा देख रहा हूँ। बेटा ! ऐसे समय तू मुझे लेने आया है !

मसीनने व्याकुल स्वरसे कहा—पिता ! तुम कहाँ जाओगे ? तुम्हारे बिना मुन्नाका कष्ट कौन निवारण करेगा ?

मुन्ना ! इस नामसे मताहरका दुर्बल हृदय आलोकित हो उठा। क्या मुन्ना अब तक जीवित है ? प्रति क्षण वह उसका समाचार जाननेके लिये व्याकुल हो रहे थे, परन्तु न जाने किस आतङ्कसे उनके मुखसे कुछ निकलता न था मताहरने अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे ठहर-ठहरकर बड़े कष्टसे कहा—बेटा ! मैं अत्यन्त स्वार्थी

हूँ। मैं अपना ही कष्ट दूर करनेके लिये घर लौट रहा था, उसके लिये नहीं। मैं तो वहाँ था पर क्या मेरे द्वारा उसका रक्ती भर भी कष्ट दूर हो सका ? मेरे आँखोंके सामने ही वह दिन-पर-दिन सूख रही थी, मेरे आँखोंके सामने ही दिन-दिन उसकी हत्या हो रही थी, और मैं नराधमकी तरह बैठा-बैठा देख रहा था। विधाताने मेरे इस प्राणको वज्रसे भी कठिन बनाया है !

मताहर अब भी अपनेको क्षमा नहीं कर सके हैं, अपना अपराध भूल नहीं सके हैं उनके आँखोंसे प्रबल वेगसे अश्रु-धारा बहने लगी। उनका सर्वांग पसीनेसे तर-बतर हो गया। उन्होंने अवसन्न होकर आँखें मूँद लीं। मसान घबड़ाकर बार-बार उनके मुँहपर जलके छीटे देने लगे कि कुछ देर बाद धीरे-धीरे फिर उनकी आँखें खुली। बड़े कष्टसे उन्होंने पूछा—मुन्ना कैसी है ?

मसानने उनके इस प्रश्नका उत्तर नहीं दिया, केवल इतना ही कहा—सलाउद्दीन चले गये।

मताहर—एक पैसा भी छोड़ नहीं गये ?

मसीन चुप रहे। मताहर कहने लगे—मैं जानता था, मैं बहुत दिन पहलेसे ही इस बातको जानता था। केवल इसे सुननेके लिये ही अब तक आसरा देख रहा था।

मताहर ठहर गये। थोड़ी देर बाद अपने गलेसे एक कवच (जंतर) उतारकर कहा—उसके विपत्तिकालके जिये यह बचा है, उसे दे देना और कहना कि, तुम्हारे पिता मृत्युके समय शांतिसे मरे हैं। तुम्हारी शांतिकी आशासे वह शांतिसे मरे हैं। यदि

पिताकी आंतरिक प्रार्थनाका फल मिल सकता हो तो मेरी यह आशा व्यर्थ न होगी ।

एक प्रकारकी शांति उनके उदास मुख पर दौड़ गई उनके हृदय परसे मानों किसीने एक भारी बोझ उठा लिया । मताहरने हाथ जोड़कर आकाशकी ओर आँखें उठाकर कहा—मुन्ना फिर शांति प्राप्त करेगी, अल्लाह ! मैं जानता हूँ कि इस पापीका वाक्य भी तुम्हारे कानों तक पहुँच गया है ।

मताहर अवसन्न हो गये । थोड़ी देर तक फिर उन्हें कुछ कहनेकी शक्ति न रही । मसीन व्याकुल होकर उनकी सेवा करने लगे ।

एक्तीसवाँ परिच्छेद

संन्यासी

इधर डाकू बुढ़ियाके घरसे मुन्नाको लेकर जंगलमें चले । रात प्रायः बीत रही थी, अन्धेरिया रातके द्वादसीका चन्द्रमा आकाशमें दिखाई पड़ा । मैदानमें, जंगलमें, गंगाके जलमें, और पेड़ों पर तथा डाकुओंके मुखपर एका एक चाँदनी आपड़ी । पापकी अन्धकार मूर्ति उल्लूकी तरह अन्धकारमें ही छिपी रहती है; प्रेतकी तरह उसका प्रभाव अन्धकारमें ही रहता है । प्रकाशमें उस पापकी भयंकरता एका एक डाकुओंको दिखाई पड़ी । वे अपने इस घृणित कामसे भयभीत होकर मानो एक बार चौंकर ठहर गये । उसी समय सिरपरसे एक उल्लू विकट स्वरसे चिल्ला उठा । उनका पत्थरकी तरह कठोर हृदय भी क्षण भरके लिये काँप उठा । डाकू एक दूसरेकी ओर देखने लगे । फिर अपनेको सम्हालकर जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाने लगे । कुछ दूर जाकर उनका पैर रुक गया । सामने उन्होंने एक मूर्ति देखी । जटाजूट विलम्बित एक देव गम्भीर महापुरुष हृदय भेदी कटाक्षसे उनकी ओर देखते हुए उँगली उठाकर बज्र ध्वनिसे कहा—खड़े हो जाओ !

उनके इस आदेशसे पृथ्वी और आकाश मानो थर्रा उठा । जंगलीकी लता मानो स्थिर हो गयी, नक्षत्रोंकी गति तक मानो बन्द हो गयी । उस निस्तब्धता रूपी प्रशांत समुद्रमें मानो केवल उनका वह आदेश वाणी तरंगकी तरह सुनाई पड़ने लगी । डाकू

मंत्र-मुग्धकी भांति शक्तिहीन होकर खड़े हो गये। देव मूर्तिने उनकी ओर अग्रसर होकर प्रधान पहरेदारकी ओर मर्म-भेदी दृष्टिसे देखकर मुन्नाको जमीन पर उतार देनेके लिये इशारा किया। पहरेदारने तुरंत उनके आदेशका पालन किया। संन्यासीने मुन्नाको स्पर्श करके स्नेहमय स्वरसे कहा—बेटी, उठो !

मुन्ना उठकर खड़ी हो गयी, उसे अब किसी प्रकारकी थकावट या दुःख नहीं था। उनके कर स्पर्शसे वह मानो अमृत पीकर सबल हो गयी थी। संन्यासीने कहा—बेटी, आओ हमारे साथ चलो।

वह आगे-आगे चलने लगे, और मुन्ना उनके पीछे पीछे चली। जंगल पार करके राजपथ पर पहुँचकर एक पेड़के नीचे खड़े होकर उन्होंने पूछा—बेटी कहाँ जायगी ?

मुन्नाने सोचा कि वह क्या बताए कि कहाँ जायँगी ? उसके लिये अब स्थान ही कहाँ है ? परन्तु मनकी बात मुखसे नहीं निकली, मनकी बात मनमें ही रह गयी। संन्यासीके मुँहकी ओर एक बार देखकर मुन्नाने सिर नीचा कर लिया। उसने क्या कहा, इसे वह स्वयं नहीं समझ सकी। उसने धीरेसे कहा—घर। संन्यासीने उसे घर तक पहुँचा दिया।

× × × ×

इधर मुन्नाको लेकर जब संन्यासी चले गये तब कुछ देर बाद डाकुओंकी मोह निद्रा टूट गयी। वे उस निस्तब्ध रात्रिमें सुन सान जङ्गलमें अपनेको खड़ा देखकर चकित हो गये। एक दूसरेकी ओर विस्मित-भावसे देखने लगे, सभी एक दूसरेसे मानो पूछने लगे कि

यहाँ क्यों आये थे ? कुछ देर बाद उन्हें धीरे-धीरे पहलेकी घटना स्मरण हो गयी। मुन्नाको लेकर इसी जङ्गलसे जा रहे थे यह उन्हें याद हो गया। परन्तु उसके बाद क्या हुआ यह कुछ भी उनके समझमें नहीं आया। मुन्ना कहाँ गयी, कैसे गयी, यह सब कुछ समझमें नहीं आया। मैनाने कहा—अब नवाबसे जाकर क्या कहूँगा ? इसी जङ्गलमें कहीं वह छिपी होगी, खोजो।

डाकू पेंडों और भाड़ियोंमें मुन्नाको खोजने लगे। परन्तु वहाँ मुन्ना कहाँ ? उन्हें फिर वही मूर्ति दिखाई पड़ी। संन्यासीको देखकर वे फिर भयभोत होकर खड़े हो गये। संन्यासीने उन लोगों के पास आकर कुछ देर तक एक टक बारी बारीसे उनकी ओर देखने लगे। एकाएक डाकुओंके मुँहपर प्रसन्नताका चिन्ह दिखाई पड़ने लगा। वे सब एक साथ मैनाकी ओर फिर कर कहने लगे—बाह ! यही तो बाबीजा हैं ! हम लोग क्या सपना देख रहे थे ! वह यहीं है और हम लाग उन्हें खोज रहे थे।

सब मैनाको पकड़नेके लिये आगे बढ़े, मैना चकित होकर कहने लगी—तुम लोग पागल हो गये हो क्या ? मुझे क्यों.....?

उसो समय मैनाकी दृष्टि संन्यासीकी आँखोंपर पड़ी। उसने क्षण-भर उनकी ओर देखकर, चटपट घूँघट काढ़ लिया। पहरेदार उसको पकड़ने आये, तो उसने कहा—पकड़ना न होगा, चलो मैं चलती हूँ।

डाकुओंके साथ वह घूँघट काढ़े नवाबके महल आ गयी। उसको एक घरमें बैठाकर मदारीने नवाब साहबसे जाकर खबर किया 'हुजूर हुक्म तामील। नयी वेगम मुन्ना बीबी हाजिर है।

बत्तीसवाँ परिच्छेद मोह-मुग्ध

जब मदारीने आकर खाँ जहाँखाँ से कहा कि मुन्ना हाजिर हैं, तब खाँ जहाँखाँका चेहरा फीका हो गया। उनका शरीर काँप उठा, उनके हृदयका बल जाता रहा। इस समाचारके सुननेसे उन्हें जितनी प्रसन्नता होनी चाहिये थी उतनी नहीं हुई, बरन् उसके बदले न जाने कैसी एक प्रकारकी अशांतिसे वह शिथिल हो गये। अब तक वासनाके सफल न होनेसे वह निराश हो गये थे, पर अब सफलता प्राप्त करनेपर उन्हें जान पड़ा कि यदि कार्य सिद्ध न होता तो अच्छा था। हाय ! मनुष्य कितना आत्म-प्रतारक है ! आत्म विरोधिताका ही नाम मानो मनुष्य है।

परन्तु खाँ जहाँखाँका यह भाव अधिक देर तक न रहा। कुछ ही देर बाद उनका भाव बदल गया। उस समय उन्हें केवल इसीका सोच था कि वह मुन्नासे कैसे अपना अपराध क्षमा करायेंगे, किस प्रकार उसके प्रेमके अधिकारी होंगे। वह अपने हृदयको दृढ़ करके मुन्नाको देखनेकी आशासे मदारीके बतलाये हुए घरमें आये। जिस पलंगपर मैना घूँघट काढ़े बैठी थी, काँपते हुए हृदयसे वह उसके निकट धीरे-धीरे आकर खड़े हो गये। तब मैनाने धीरे धीरे अपने घूँघटको कुछ उठाकर नवाब साहबकी ओर कटाक्ष किया। कीचड़में बैठे हुए सूकरका कीचड़से भरा हुआ घृणित मुख जैसे

दिखाई पड़ता है, वैसे ही घूँघटमें मैनाका मुख सूकरीकी तरह दिखाई पड़ा। नवाब साहबके आँखोंके सामन मानो असंख्य कीड़े बल-बला उठे। घृणासे वह मुँह फेर हट गये। उन्होंने सोचा कि भूलसे मैं दूसरे घरमें चला आया हूँ। बाहर मदारी डाकुओंके सहित खड़ा था, वहीं आकर नवाबने पूछा—उसे कहाँ रखा है ?

उसने फिर उसी कमरेको दिखा दिया, नवाब फिर घरमें आकर चारो ओर भली प्रकार देखने लगे, मैनाके अतिरिक्त वहाँ उन्हें और कोई दिखाई नहीं पड़ा। तब मदारीको भीतर बुलाकर पूछा—कहाँ है ?

उसने ऊँगलीसे मैनाको दिखा दिया। उन्होंने चकित होकर कहा—यह तो मैना है ! इस प्रकार वह क्यों बैठी है ?

मदारी—हुजूर ! मैना नहीं है, अल्लाहकी फजल, बीबी जी हैं।

इस प्रकार दृढ़ता और गम्भीरतासे मदारीने इन बातोंको कहा कि नवाबका क्रोध विस्मयमें परिणत हो गया। नवाब कुछ समझ न सके। उन्होंने सोचा कि मुझसे हँसो करनेका साहस तो पहरेदारोंको नहीं हो सकता, तब बात क्या है ? मैना उसी समय धीरे धीरे उठकर उनके पास आकर खड़ी हो गयी। और हाथ जोड़कर कहने लगी—प्राणेश्वर !

जैसे साँपको देखकर कोई हट जाता है उसी प्रकार नवाब साहब वहाँसे हट गये। परन्तु वह फिर उनके पास आकर कहने लगी—हृदयेश्वर ! दासी.....

उसकी इस ढिठाईसे नवाबका शरीर सिरसे पैर तक जलने

लगा, वह मारे क्रोधके आपेसे बाहर हो सिपाहियोंको पुकारने लगे । सिपाही लोग घबड़ाकर हाजिर हुए । परन्तु उनके मुखकी आज्ञा मुखमें ही रह गयी । एकाएक एक संन्यासीकी तेजस्वी मूर्ति उन्हे दिखाई पड़ी । संन्यासीके तेजोमय दृश्यसे उनकी दृष्टि स्तम्भित हो गयी ।

संन्यासीने जब खाँ जहाँखाँकी ओरसे अपनी दृष्टि हटा लिया तब खाँ जहाँखाँने चकित होकर मैनाकी ओर देखा । उसकी सुन्दरतासे उनकी आँखें चकाचौंध हो गयी । उन्होंने देखाकि उनके सामने एक स्वर्गकी विशाधारी खड़ी है । घर-द्वार सबकी सुधि भूल गयी, वह उन्मत्तकी तरह मैनाके मुखकी ओर देखते हुए कहने लगे—प्रेयसी, प्राणेश्वरी, मैं अपना तन मन और धन सब कुछ तुम्हारे चरणोंमें अर्पण करता हूँ ।

यह कहकर वह घुटनेके बल बैठकर दोनों हाथोंसे उसके चरणोंको पकड़ लिया । ज्योंही उन्होंने उसके चरणोंका स्पर्श किया, त्योंही उनका मोह भङ्ग हो गया । पहरेदारोंका मोह भी भङ्ग हो गया । मैना भयभीत होकर एक ओर खड़ी हो गयी । पहरेदार भी अत्यन्त भयभीत होकर एक ओर खड़े हो गये । नवाब साहब धीरे-धीरे उठ खड़े हुए । मानो सब लोग एक गहरा स्वर देखकर जाग उठे । घृणा और लज्जासे नवाब साहबका हृदय भर गया, संन्यासीने उनके पास आकर धीमे और गम्भीर स्वरसे कहा—वत्स ! तुम्हारा यह मोह तो क्षणभरमें टूट गया, परन्तु जिस मोहसे अन्धे होकर इससे भी अधिक घृणाका काम करनेके

लिये उद्यत हुए थे, अन्धकारमें पापको प्रकाश समझकर ग्रहण करनेके लिये तैयार हुए थे, वह मोह, और भ्रान्ति क्या नहीं टूटेगी ?

यह कहकर संन्यासी अन्तर्धान हो गये, खाँ जहाँखाँ चौंक उठे । सबको एक प्रकाश बिजलीके लहरकी तरह उनके आँखोंको चका चौंध करके मानो चला गया । क्षण भर बाद ही एक गहरे अन्धकारसे उनका हृदय ढक गया । घृणा, लज्जा और अनुतापसे उनका हृदय आविर्भूत हो गया । मैना और पहरेदार लोग भयसे काँपते हुए यह सोचने लगे कि न जाने आज हमारी क्या दशा होगी ? परन्तु नवाबने उनसे कुछ कहा नहीं । केवल घरसे उन्हे चले जानेका इशारा किया । उसके बाद अकेले अनुतापसे अभ्रुगत करते हुए रात बिता दी । जब सबेरा हुआ तब उषाकी लालिमामें उन्हें जीवनका नया प्रभात दिखाई पड़ा ।

तेतीसवाँ परिच्छेद

अकेली

मुन्नाको उसके दरवाजे तक पहुँचाकर जब संन्यासी चले गये, तब मुन्ना वहीं चुपचाप खड़ी रह गयी। घरमें प्रवेश करनेका साहस उसे न हुआ। यह घर क्या अब उसका है ? इस घरमें क्या उसे आश्रय मिल सकता है ? यहाँ रहनेसे क्या खाँ जहाँखाँके हाथोंसे उसका छुटकारा हो सकता है ? आज वह विफल हो गये हैं परन्तु कल फिर वह सफल हो सकते हैं। इसलिये जान-बूझकर आगमें कूदनेके लिये वह घरमें कैसे प्रवेश कर सकती है।

मुन्नाने देखा वहाँसे कहीं दूर गये बिना उसका छुटकारा नहीं है। जहाँ जन्म लेकर लालित पालित हुई थी, जहाँ जीवनकी आशा, वासना, स्नेह और प्रेम अंकुरित होकर प्रस्फुटित हुआ था, और फिर मर गया था, जहाँ नदीके तरङ्गोंके साथ उसका हृदय नाचता था, जहाँ फूलोंके साथ उसका हृदय विकसित होता था, जहाँ शिशिरके साथ उसका आँसू भरता था, जहाँके पेड़ पल्लव नदी तालाब पशु-पक्षी सभी उसके सुखसे सुखी और दुःखसे दुःखी होते थे, सभी अपने आत्मीय स्वजनसे दिखाई पड़ते थे, आज अपने उसी स्नेहमयी निवास भूमिको परित्याग किये बिना उसका निस्तार नहीं है। उदास दृष्टिसे मुन्नाने चारो ओर देखा, घरके प्रत्येक दीवाल दरवाजे और खिड़कियोंकी ओर देखा। बागके

प्रत्येक पेड़ोंके फूलों तकको वह अतृप्त आग्रहसे देखने लगी । मुन्नाको मानो पहले यह नहीं मालूम था कि वे उसे इतने अधिक प्रिय हैं । उसके अश्रुपूर्ण नेत्रोंके सन्मुख बाल्यकालके खेल, किशोरावस्थाके हर्ष, यौवनकालके अश्रु और नैराश्यके सैकड़ों चित्र जीवित होकर उसे रोकनेके लिये मानो चारो ओरसे अपना-अपना स्नेहमय हाथ फैलाने लगे । मुन्ना अब अधिक देर तक वहाँ खड़ी न रह सकी, झटपट वहाँसे चली गयी ।

जानेके पहले एक बार भोलानाथका आत्मविसर्जी स्नेह, उसे याद पड़ा । एक बार उनसे भेंट करनेकी उसे बड़ी इच्छा हुई । परन्तु भोलानाथ इस समय कहाँ हैं ? उनसे भेंट इस सम कहाँ हो सकती है । और यदि भेंट हो भी तो, वह क्या उसे अकेली यहाँसे जाने देंगे ? मुन्नाके लिये भोलानाथने बहुत कष्ट उठाया है । अब क्यों अपने खांटे किस्मतमें उन्हें बाँधकर उनका बचा हुआ सुख और शांतिको मुन्ना नष्ट करे । मुन्नाको अब किसी बातकी इच्छा न रही । वह किसीकी अपेक्षा न करके अकेली वहाँसे चली गयी । जिसको कभी सूर्यने भी नहीं देखा था, वही कुल वाला अनाथिनी केवल मात्र अपने आँसुओंको साथी बनाकर संसार समुद्रमें अपने अदृष्टको खोजनेके लिये कूद पड़ी ।

चौतीसवाँ परिच्छेद

करुणा

उसके बाद एक दिन-रात बीत गयी, फिर प्रभात हुआ। जो सूर्य कल पश्चिममें डूबा था, आज वह फिर पूर्वमें उदय हुआ। सोये हुए वृक्ष, सोयी हुई गङ्गा नदी और सोयी हुई पृथ्वी सूर्यके किरणोंके स्पर्शसे जाग उठी। केवल अभागिनी मुन्ना कलकी तरह आज भी उदास पेड़के नाचे बैठी है। मुन्नाका हृदय तप्त मरु भूमि की तरह हो रहा है, उतप्त बालू की तरह निराशाकी आँधी चारों ओर उठ रही है। वह सोचता है कि वह इस मरु भूमिको कभी इस जीवनमें पार न कर सकेगी। उसे जान पड़ता है कि पहले जिस अवस्थाको वह दुःख जनक समझती थी वास्तवमें वह इसकी अपेक्षा बसंत उद्यानकी तरह सुखदाई थी। परन्तु उस उद्यानमें उस बसंत ऋतुमें मुन्ना प्रफुल्ल न हो सकी, क्योंकि ऐश्वर्यके कारण मुन्नाको उस सुखका अनुभव न हो सका। परन्तु दुःखकी आँधीमें जब वह बसंत चला गया, तब मुन्ना उसके लिये हाहाकार करने लगी। परन्तु हाँ! अब तो वह दिन लौटकर नहीं आवेगा। जिसको एक बार पैरोंसे ठुकराकर दूर हटा दिया है वह तो अब किसी प्रकार भी बुलानेसे न आवेगा। वह दिन कितना सुखदाई था जब उसके ऊपर पिताका स्नेह और मसीनकी निःस्वार्थ समवेदना अमृतकी तरह उसपर बरसती थी। दिनमें एक बार पतिका

दर्शन करके मुन्ना जब अश्रु-पात करती थी तब उसमें भी मुन्नाको कितना सुख होता था। उस समयकी दीर्घ निःस्वासमें और अश्रु-जलमें कितना गहरा सुख छिपा था। मुन्ना उस समय उस सुखको सुख न समझ सकी थी। केवल उस सुखको दुःख समझ कर, संसारको दुःखमय जानती थी, इसीसे आज मानो संसारने मुन्नाके उस कृतघ्नताका बदला लेनेके लिये उसे दुःखको चिन्हा दिया।

अतीत-कालकी स्मृति तक, मुन्नाके लिये इस समय अत्यन्त सुखदायी जान पड़ती है। जिस मनुष्यकी स्मृतिमें भी सुख न हो, उसके दुःखका कल्पना करना भी कठिन है। ऐसा दुःख संसारमें कहीं है अथवा नहीं यह तो हम नहीं कह सकते, परन्तु यदि हेतो वही पापियोंके लिये सबसे बड़ा नरक है। पाप ही स्मृतिको मिटाना चाहता है, पापी जीवन ही अतीतकी ओरसे भयभीत होकर आँखें फेर लेना चाहता है। परन्तु निष्पाप मनुष्योंके हृदयमें अतीतका हजारों दुःख भी सुखका वेप धारण करके उदय होता है। इसीसे हम कहते हैं, संसारमें पापी ही यथार्थ दुःखी हैं, पापीके अतिरिक्त यथार्थ दुःखी और कोई नहीं है।

थोड़ी-थोड़ी धूप निकल आयी है, एक भुंड भिक्षुकोंका मुन्नाके पाससे चला गया। उसने सोचाकि आज मैं भी इन्हींकी तरह भिखारिणी हूँ, मुझे भी आज द्वार-द्वार भिक्षा माँगना पड़ेगा। उसके हृदयमें बड़े वेगसे एक आँधीसी बहने लगी। वह पुनः सोचने लगी,—हा ! मैं कैसे द्वार-द्वार हाथ फैलाकर भिक्षा माँगूँगी ?

वह रोने लगी, और कहने लगी—हे मृत्यु ! तुम कहाँ हो ? जिसको कोई नहीं, उसके तुम आश्रयदाता हो, तुम उसकी रक्षा करते हो और तुम्हीं उसे शांति देते हो !

अब तक इतने कष्टों भी जो बातें उसके मनमें नहीं उठी थीं, इस समय वही ध्यानमें आने लगी । मुन्नाने सोचा—आत्म हत्याके अतिरिक्त उसकी और कोई गति नहीं है । उस महा पापके अतिरिक्त उसको आश्रय देनेवाला और कोई नहीं है, मुन्ना अपने घुटनों पर सिर रखकर रोने लगी । वह अपने जीवनमें न जाने कितनी बार रो चुकी है, परन्तु इस प्रकार वह कभी नहीं रोई थी । जान बूझकर पहले-पहल वह पाप करना चाहती है । पाप करनेके पहले ही वह उस पापकी यंत्रणाका अनुभव करने लगी । उसे जान पड़ा कि उसका देह और मन पापसे जरजर हो गये हैं पर तो भी उसमें उस पापकी ओरसे लौटनेकी सामर्थ्य नहीं है । ऐसी भयंकर अवस्थामें मुन्ना पहले कभी नहीं पड़ी थी ।

एकाएक उसका वह भाव बदल गया आँखोंका आँसू पोंछकर वह सम्हल गयी, मनको दृढ़ करके उसने कहा—द्विःद्विः, यह मैं क्या सोच रही हूँ ? आत्म हत्या ! मनुष्य होकर दुःखको अपने पैरोंके नीचे न झुका सकी तो मनुष्य जन्मसे लाभ ही क्या ? दुःखके भयसे क्या मैं आत्म हत्या करके अपने मनुष्यत्वको खोदूँ ? कभी नहीं, कदापि नहीं । सहन करना ही मनुष्यत्व है, जब मनुष्य योनिमें जन्म लिया है तब अवश्य ही सहन करनेसे पीछे न हटूँगी । बहुत सह चुकी हूँ, अभी और भी सहूँगी ।

मुन्नाने सोचा—इस अवस्थामें भिक्षा माँगना ही उसके लिये उचित है। इस कर्त्तव्य पालनके लिये वह ईश्वरसे बल माँगने लगी। प्रार्थना करते करते वह उठ खड़ी हुई परन्तु दो-चार पग जाकर ही वह फिर एक वृक्षके नीचे बैठ गयी, उसका सब बल और सब संकल्प जाता रहा।

मुन्ना फिर संकोचको बल पूर्वक दमन करनेकी चेष्टा करके मन ही-मन कहने लगी—हाँ, भिक्षा क्यों न माँगूँगी? परन्तु अकेली वहाँ जाऊँ, कोई आवे तो उसके साथ चली जाऊँगी।

उसी समय एक दल भिक्तोंका फिर उसके पाससे चला गया। यही ठीक अवसर है जानकर मुन्ना उठने लगी। परन्तु उठ न सकी। भिक्त बहुत दूर चले गये। आँखोंसे अदृश्य हो गये। मुन्नाने सोचा—दूसरा दल आता होगा।

इसी प्रकार एकके बाद एक भिक्तोंका दल जाने लगा, और भिक्षा लेकर लौटने लगा। एक पहर बीत गया, दोपहर भी बीत गया, तो भी मुन्ना उसी पेड़के नीचे धैर्य रही। अब दिन ढल गया, मार्गमें कोई भी भिक्त इस समय दिखाई नहीं पड़ता, दो एक पथिक मुन्नाके पास आकर कुछ पूछने लगे, परन्तु ठीक उत्तर न पाकर चले गये। दो-एक पथिक उसके पास आकर उसी पेड़के नीचे बैठ गये, मुन्ना वहाँसे उठकर एक दूसरे पेड़के नीचे एकान्तमें चली गयी। संध्या हो गयी, मुन्ना उस दिन भिक्षा न माँग सकी। वह उसी पेड़के नीचे पड़ी-पड़ी सोचने लगी—इस प्रकार के दिन क्या मरेगा? जब मुझे भीख माँगना ही पड़ेगा, तब संकोच किस

बातका ? एक समय मैं राजाकी लड़की थी, पर अब उससे क्या ? एक समय मैं सोना लुटा सकती थी, परन्तु अब तो बिना भिच्चाके जीना भी कठिन है, तब लज्जा किस बातकी ? एक समय था जब मैं फूलोंकी शैय्या पर सोती थी, परन्तु अब तो कठिन भूमि पर भी मुझे आश्रय नहीं मिलता । सदा किसीका दिन बराबर नहीं जाता ! जो था वह अब नहीं है, तब संकोच किस बातका ? मुन्ना रातभर इसी प्रकार सोचती रही, रातभर हृदयमें बल संग्रह करके सबेरे ज्योंही उसने एक दल भिक्तोंका देखा त्योंही अपनेको सम्हालकर उठ खड़ी हुई । मैलो चद्दरसे अपना सब मुँह ढाँककर भिक्तोंके पीछे चल पड़ी । भिक्तु 'जय जय' कार करते हुए एक घरके पास आकर खड़े हो गये । वहाँ एक आदमी एक-एक मुट्ठी चावल उन्हें देने लगा, उस एक मुट्ठी चावलके लिये एक हाथ पर दस हाथ उठने लगे । एक दूसरेको ठेलकर भिच्चा देनेवालेके सम्मुख आनेकी चेष्टा करने लगे । मुन्ना उस भीड़में खड़ी होनेका साहस न कर सकी इसलिये कुछ दूर एक दर्शककी तरह खड़ी रही । और सब भिखमंगे भीख लेकर चले गये, भिच्चा देनेवाला टोकरी झाड़कर घरके भीतर चला गया । मुन्नाने देखा अब यहाँ भिक्षा मिलनेकी आशा नहीं है, वह निराश होकर उन्हीं भिक्तोंके पीछे-पीछे फिर चली । वे फिर एक घरके पास पहुँचकर भिक्षा माँगने लगे, उस समय मुन्ना पहलेकी अपेक्षा अधिक पास आकर खड़ी हो गयी, परन्तु भीख माँगनेके लिये उसका मुख न खुल सका । हाथ न उठ सका । एक बार उसका हाथ उठा, परन्तु उसी

समय गिर गया। कोई उसे देखकर यह न जान सका कि यह भिखारिणी है। भिक्षा लेकर और सब अपने-अपने स्थान पर चले गये, पर मुन्नाका पैर वहाँसे उठ न सका, सूने हाथ मुख नीचा किए वह वहीं खड़ी रही। हे ईश्वर ! इतने मनुष्य भिक्षा ले गये, पर मुन्नाको एक मुट्ठी तक भोजन न मिली ?

संसारका नियम मुन्ना नहीं जानती थी। बिना गाल बजाये बिना चिढ़ाये राजासे लेकर रंक तक किसीका काम नहीं सधता। गलेके जोरसे झूठा सच्चा हो जाता है और यदि गलेका जोर न हो तो सच्चा भी झूठा बन जाता है। मुन्ना जानती थी कि दुःखियाको लोग आप ही चीन्ह लेते हैं। परन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि बिना आँसू बहाये, बिना आडम्बर रचे कोई भोजन भी नहीं देता। भोजन देनेमें भी लोग आडम्बर रचते हैं, सात समुद्र तेरह नदीको छथल पुथल करके तब एक मुट्ठी अन्न किसीको देते हैं। मुन्ना कभी घरसे बाहर नहीं निकलती थी, वह विचारी संसारका मर्म क्या जाने ? जब उसे घरके बाहर पहले पहल निकलना पड़ा, तब एक साथ ही भिक्षा पात्र हाथमें लेकर। अब तक वह दूसरोंको भिक्षा देती थी, परन्तु भिक्षा लेनेकी रीति उसे मालूम नहीं थी, इसीसे उसे आज भिक्षा न मिल सकी।

जब वह दो जगह जाकर भी भिक्षा न पा सकी, तब उस दिन वह और कहीं भिक्षा माँगने न गयी। वहाँसे वह धीरे धीरे लौटकर उसी पेड़के नीचे आकर बैठ गयी। दोपहर हो गया, धूपसे चारों ओर धिक उठा, प्याससे उसका गला सूख गया, तो भी उसको

इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह उठकर गंगा तट पर जाकर जलपान करती। मुन्ना श्रांत, क्षिप्त और अवसन्न होकर उसी वृक्षके नीचे पड़ गयी।

कुछ देर बाद एक पालकी लेकर कुछ कहॉर वहाँ आये और पालकी को एक पेड़के नीचे रखदिया। पालकी में एक भले घरकी स्त्री थी, उसके साथ एक दासी और दो पहरेदार थे। पालकी जमीन पर रखने पर एक पहरेदारने कहा—माजी आप यहीं ठहरें मैं तबसे जाकर देखूँ कि नाव ठीक हुई है अथवा नहीं।

यह कहकर पहरेदार चला गया। तब दासीने कहा—बहू ! पालकीका दरवाजा खोल दो न, यहाँ कोई नहीं है।

दरवाजा खोलकर उस स्त्रीने पालकीसे झाँककर बाहर देखा। मुन्नाके वृक्षके नीचे पड़ी देखकर दासीसे कहा—अहा ! देख-देख, इसका कैसा रूप है ?

दासीने उसे देखकर कहा—हाँ बहू जी, यह तो कोई भले घरकी मुसलमानिन जान पड़ती है।

स्त्रीने कहा—भला मुसलमानोंके यहाँ ऐसी सुन्दरी कहाँ ? यह कोई हिन्दू होगी।

उस स्त्रीने पालकीसे उतर कर मुन्नाके पास आकर कहा—क्यों जी, तुम कौन हो ?

मुन्नाने अत्यन्त मृदु स्वरसे कहा—मैं भिखारिणी हूँ।

वह स्त्री यह सुनकर चकित हो गयी और कहा—भिखारिणी !

इतना रूप तो राजाओंके घरमें भी नहीं दिखाई पड़ता: भिखारिणीको इतना रूप ?

मुन्नाका सौन्दर्य और उमका सुखे कमलकी तरह उदास मुख देखकर, उसके आँखोंमें आँसू भर आया। अत्यन्त करुणा स्वरसे उसने कहा—इस दोपहरके समय इस पेड़के नीचे क्यों पड़ी हो ? कहीं जाना है ?

मुन्ना—पेड़के नीचे ही मेरा घर है।

यह सुनकर उस स्त्रीको बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा—अहा, तुम्हें घर नहीं है ? तब रातको कहाँ रहोगी, पानी बरसेगा तो कहाँ जाओगी ?

मुन्नाकी आँखोंसे एक बूँद आँसू गिर पड़ा। अपनी अवस्थाका विचार करके नहीं, बल्कि एक अपरिचित स्त्रीका इतना प्रेम देखकर ! करुणा-भरी आँखोंसे उसकी ओर देखकर मुन्नाने कहा—जिसको एक मुट्ठी अन्न नहीं जुटता, उसे आश्रय कहाँ मिलेगा ?

इस बातसे उस स्त्रीके कोमल हृदयमें बड़ी चोट लगी। उसने कहा—मेरे संग चलेगी ? मेरी सखीकी तरह रहना।

अत्यन्त क्षाण विद्युत् रेखाकी तरह तनिक हैसकर मुन्नाने कहा—मैं तो मुसलमानिन हूँ, यह जानने पर क्या तुम मुझे छुओगी ?

मुसलमानिन ! स्त्री कुछ सोचने लगी, थोड़ी देर बाद उसने कहा—मैंने सोचा था कि तुम हिन्दू हो। पर इससे क्या होता है, एक अलग घर में तुम्हें दूँगी, वहीं रहना। मेरे घर कितने आदमी खाते हैं, फिर तुम्हारा प्रतिपालन क्यों न हो सकेगा ? चलो।

एक विजातीय, अपरिचित स्त्रीकी इतनी दया देखकर मुन्ना चकित हो गयी, वह मन-ही-मन कहने लगी, 'धन्य हो तुम हिन्दू कन्या, धन्य हो ! मेरी तरह अभागिनी तुम्हारी इस दयाका प्रतिदान क्या कर सकती है, ईश्वर तुम्हें इसका पुरस्कार देंगे ।

एकाएक उस स्त्रीने पूछा—आज तुमने कुछ खाया है ?

मुन्नाने कुछ उत्तर नहीं दिया । वह स्त्री समझ गयी कि, आज उसने कुछ खाया नहीं है । वह अपनेको धिक्कारने लगी कि अब तक उसने उससे पूछा क्यों नहीं । वह कुछ दूरसे आ रही थी, इसलिये उसके साथ कुछ मिठाई और दो-चार आवश्यक बर्तन भी थे । उसने दासीको झटपट एक लोटा जल लानेके लिये भेज दिया । और स्वयं मिठाई लेकर मुन्नाके हाथमें दे दिया । मुन्नाको अब भूख-प्यास नहीं थी, उसके प्रेमसे ही मुन्नाकी सब उदासी और भूख-प्यास मिट गयी थी । परन्तु उस रमणीके बहुत कहने पर दो-एक मिठाई उसने खा लिया । कुछ देर बाद वह पहरेदार जो घाटपर गया था, एक और नौकरके साथ लौट आया । नौकर नाव ठीक करनेके लिये पहलेसे ही यहाँ आया था । उस नौकरने उस स्त्रीसे कहा—माजी घाटपर नाव आकर लग गयी है । आज कितनी कठिनाईसे इस नावको ठीक किया है इसे मैं ही जानता हूँ ।

स्त्री—क्योंरे बिहारो ! नाव ठीक करनेमें इतनी कठिनाई क्यों पड़ी ?

नौकर—पश्चिमसे न जाने कौन एक शेरजंग नामका कोई नवाब आया है, वह अपने देश जल्द लौट जायगा । इसीलिये पहले से ही जितनी नावें घाटपर थीं सबको ठीक कर लिया है ।

मुन्नाने पहले ही सुना था कि शेरजंगकी लड़कीसे उसके पति सल्लाउद्दीनने विवाह किया है, इसलिये शेरजंगका नाम सुनकर उसका हृदय काँपने लगा। उसने उससे पूछा—क्योंजी, नवाबका घर क्या 'पेड़ों' में है ?

नौकर—हाँ।

मुन्ना—यहाँसे वह कितनी दूर है ?

नौकर—यहाँसे नावपर जानेसे संध्या तक पहुँच सकते हैं। दो चार जो अभी घाटपर है वह भी अभी ही वहाँ जायगी।

मुन्नाने कुछ सोचकर कहा—यदि नाव नवाब के यहाँ जाती हो तो क्या मुझे नाववाले साथ ले चलेंगे ?

स्त्री—तुम वहाँ क्यों जाओगी ?

मुन्ना—वहाँ मेरे एक परिचित हैं।

स्त्रीने उसकी व्याकुलता देख कर नौकर से कहा—जाकर पूछ आओ कि इन्हें वे नावपर ले जायँगे अथवा नहीं ?

नौकर ने उत्तर दिया—आप अपनी पालकी घाटपर ले चलने की आज्ञा दें, मैं तबसे घाटपर जाकर पूछता हूँ।

पालकी घाटपर लगी, दासी और नौकर-चाकरोंके साथ मुन्ना भी घाटपर आकर खड़ी हो गयी। उसके मनमें एक आशा सी उत्पन्न हो गयी थी, जिससे वह अपना सब दुःख भूल गयी थी। घाटपर आकर नौकरने नाववालों से पूछा। उन्होंने कहा—यदि कोई दासी चलना चाहे तो उसे ले चलने का हुकुम है।

मुन्नाने कहा कि—कह दो हाँ दासी ही है।

मुन्ना उस स्त्रीसे बिदा हुई। वह उसे कुछ रुपये देने लगी, पर मुन्नाने उसे न लेकर कहा—बहन, तुम राज राजेश्वरी हो, आज तुमने जो धन मुझे दिया है वह अमूल्य है। उसके अतिरिक्त और कुछ मुझे न चाहिये। ईश्वर तुम्हारा मंगल करे।

उस स्त्रीने सोचा कि मुन्ना अपने आत्मीयके पास जा रही है, इसलिये मनमें आनन्दित हो रही है। उसने कहा—तुम जब सुखी हो जाना तब एक दिन मुझसे भेंट करना, पर यदि कभी दुःखमें पड़ना तो मुझे अपनी बहन समझकर मेरे पास आना।

उस स्त्रीने अपना पता ठिकाना मुन्नाको बतला दिया, मुन्ना गद्गद् कण्ठसे कहने लगी—यदि फिर मुझे भिक्षा माँगना होगा तो मैं पहले तुम्हारे द्वारपर आऊँगी।

वह स्त्री नावपर बैठ गयी। मुन्ना भी दूसरी नावपर चली गयी। नावपर बैठकर जब मुन्नाको कुछ सोचनका अवसर मिला, तब उसके मनमें विचार उत्पन्न हुआ कि मैं तो वहाँ जा रही हूँ। अपनी सौतकी दासी होकर भी यदि दिन भरमें एक बार उनका दर्शन मिल सके तो मैं अपनेको धन्य समझूँगी। परन्तु याद.....। सोचते सोचते मुन्ना सिहर उठी। परन्तु वह क्या ऐसा कर सकेंगे? मैं तो और कुछ नहीं चाहती, जहाँ सैकड़ों दास-दासियोंका पालन हो रहा है, वहाँ इस अभागिनी मुन्नाका.....। मुन्नाकी विचार शक्ति यहीं रुक गयी, उसके हृदयमें गहरा अन्धकार छा गया।

पैंतीसवाँ परिच्छेद

निष्ठुरता

वसंत ऋतुमें जब कभी बदली होती है तब प्रायः आँधी आती है, और पानी बरसात है। उस समय पक्षियोंका चहचहाना रुक जाता है और सुकुमार वसंतऋतु मानो उस दुःसमयमें छिप जाता है। आज भी ऐसा ही हुआ। मुन्नाकी नाव नवाबके यहाँ पहुँचनेक पहले ही आकाश बादलोंसे ढँक गया। साथ-ही-साथ बिजली चमकने लगी और पानी भी बरसने लगा। गङ्गाके दोनों तीरके वृक्ष आँधीके वेगसे हिलने लगे। प्रकृतिका यह भक्षण भाव देखकर मुन्ना डर गयी मानों उसीके अमंगलकी सूचना संसार गर्जकर दे रहा है। उसीके अदृष्टके अन्धकारसे मानो विश्व चराचर ढँक गया है।

थोड़ी ही देरमें नाव नवाबके महलके सामनेकी खाईमें आ लगी। एक मल्लाह मुन्नाको अपने साथ नवाबके महलके द्वार पर ले आया। नयी दासी आयी है, यह समाचार सुनकर नवाबके महलकी एक दासी वहाँ आकर उसे अन्तःपुरमें ले गयी। जब उस दासीने भीतर पहुँचकर उजालेमें मुन्नाका मुख देखा तो वह चौंक उठी, दासीका इतना रूप !

अन्तःपुरमें पैर रखते ही मुन्नाने देखा कि बाहरके भावसे यहाँ कितना अधिक भेद है। यहाँ चारों ओर सुख ही बिराज रहा है !

यहाँ आँधीकी राक्षसी मूर्ति नहीं है। बाहरकी भीषणता कोमल होकर नूपुर ध्वनि और संगीतके मधुर रूपमें चारों ओर विराज रही है।

मुन्नाको साथ लेकर एक कमरेके द्वार पर आकर दासीने कहा—तुम यहीं ठहरो, मैं खबर दे आऊँ।

यह कहकर दासी भीतर चली गयी। हँसीका तरंग नृत्य-गीत, गान-वाद्यका उच्छ्वास उस कमरेसे साफ-साफ मुन्नाको सुनाई पड़ने लगा। उसने समझा कि इसी घरमें मेरे पति अपने नवपत्नीके साथ उत्सवमें मत्त हो रहे हैं। वह अब तक जिस आशाको हृदयमें रखे थी, वह एकाएक विलीन हो गयी। इतनी दूर आकर फिर मुन्नाका मन लौट जानेके लिये उतावला हो गया। पतिके करुणा पर उसे अविश्वास होने लगा। यदि पहिचानकर भी उसके पति निर्दयतासे उसे पैरोंसे ठुकरा दें तो क्या होगा! उसका पीला चेहरा उसका उदास हृदय काँपने लगा। उसी समय एक बार गान वाद्य रुक गया। किसी स्त्रीने कहा—अच्छा, उसे यहाँ ले आव। देखें उसका रूप कैसा है? दूसरी स्त्रीने कहा—बेगम साहबा, रूप देखनेकी यदि इतनी चाह है तो सामने एक आइना रख लेनेसे ही हो सकता है, रूपके भंडारमें अब क्या आपने कुछ बाकी रख छोड़ा है?

और किसी पुरुषने कहा—तुम अपनी सखीको यह समझा दो: मेरी बातोंसे इन्हें विश्वास ही नहीं होता।

इस स्वरको मुन्ना पहिचान गयी। यह उसके पतिका स्वर था।

कितने दिन बाद यह स्वर उसे सुनाई पड़ा है, पर तो भी पहलेके स्वरसे इस स्वरमें बहुत अन्तर है। ऐसी साफ और ऐसी कोमल और ऐसी प्रेमभरी बात मुन्नाने कभी अपने पतिके मुखसे नहीं सुनी थी। मुन्नाके हृदयमें बड़े वेगसे श्रोणित बहने लगा। उसका हृदय काँपने लगा। हाथ-पैर थरथराने लगे। दासीने आकर उससे कहा—भीतर आओ।

उस समय मुन्नाकी सब शक्ति चली गयी थी। उसके मस्तिष्कमें विप्लव मच गया था। वह बिना कुछ कहे सुने दासीके पीछे चली गयी। वह भीतर जाकर व्याकुल दृष्टिसे चारों ओर देखने लगी। उसने देखा कि रत्न और अलंकारोंसे सजी एक युवतीके पास उसके पति बैठे हैं। मुन्ना दीवालके सहारे अपनेको बहुत सम्हालकर खड़ी हो गयी। सलाउद्दीन उसे चीन्ह गये, उनका मुँह फोका पड़ गया। हृदय काँप उठा। वह डर गये कि कहीं रौशन आराके निकट सब भेद खुल न जाय ! मुन्नाको देख कर रौशन आराके हृदयमें दया उत्पन्न हुई, उसने दासीकी ओर देखकर कहा—अहा, इसका मुँह इतना उदास क्यों है ?

इसके बाद उसने मुन्नासे कहा—दासी ! तुम्हारा नाम क्या है ?

सलाउद्दीन कह उठे—नाम ! न जाने कहाँसे एक भिखारिणी आगयी है, इसका नाम क्या ? यह क्या दासी है ? इसको कौन दासी रखेगा ?

वज्रसे भी अधिक मुन्नाके हृदयमें इन बातोंकी चोट लगी।

उसका हृदय विदोर्ण हो गया। अब तक बड़े कष्टसे उसने अपनेको सम्हाल रखा था, पर अब न सम्हाल सकी, पागलकी तरह दौड़कर अपने पतिका चरण पकड़ लिया और मर्मभेदी स्वरसे कहने लगी—पति देव, बड़ी आशासे मैं यहाँ आई हूँ, शरण आई दासी को अपने चरणोंमें आश्रय दो। तुम्हारे अतिरिक्त मेरा और कोई नहीं है, मुझे दूर न करो।

यह कहकर मुन्ना व्याकुल होकर रोने लगी। एक साधारण दीन-हीन स्त्रीका यह व्यवहार देखकर सभी चकित हो गये। नवाब साहब क्या करें यह निर्णय न कर सके। हृत् बुद्धिकी तरह वह वहाँसे हट जानेकी चेष्टा करने लगे। परन्तु हट न सके। मुन्ना अपने कोमल और पसीनेसे भरे हुए दोनों हाथोंसे उनका पैर पकड़कर रोने लगी और कहने लगी—पति देव ! तुम्हारे इन्हीं चरणोंमें मेरा आश्रय है। इस आश्रयको छीनकर तुम कहाँ जाओगे ? तुमने दूसरी सौभाग्यवती रमणीसे विवाह किया है, मुझे दुःख नहीं है। मेरे दुर्भाग्यसे तुम्हारी शांति भङ्ग न हो, मैं हृदयसे यही चाहती हूँ। परन्तु क्या मैं एक धूल-कणकी तरह भी इन चरणोंमें स्थान न पा सकूँगी ? तुमने विवाह किया है, राज्य ऐश्वर्य और पत्नी सभी पाया है, पर क्या इस आश्रित दासीको अपने चरणोंमें भी स्थान न दोगे ?

सलाउद्दीन मुन्नाके इस रुदन और आचरणसे घबड़ा गये। बेगम साहबा न जाने क्या सोचती होंगी, यह सोचकर मुन्नाके हाथोंसे अमना पैर छुड़ाकर उन्होंने दासीसे कहा—इसे उठाकर कहीं ले जाव।

मुन्नाको अब रोनेकी शक्ति भी न रही। उसके पैरोंके नीचेकी पृथ्वी मानो हट गयी। ससार उसे घूमता हुआ दिखाई पड़ने लगा। एक बार स्फुट स्वरसे केवल वह इतना ही कह सकी—‘मैं कहाँ जाऊँ ? इस अभागिनीके लिये और कहाँ स्थान है ?’ इसके बाद वह वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ी। कुछ देर बाद उसकी मूर्च्छा दूर हुई, एक दासी उसे उठाकर दूसरी जगह ले गयी। प्रमोद गृह को शांक्रमय निस्तब्धतासे परिपूर्ण करके मुन्ना वहाँ से चली गयी।

रह-रहकर बादल गरज रहा है, बार बार आँधीका भोंका उस निस्तब्ध गृहको बड़े वेगसे दिलाकर चला जाता है। नीरव और निस्तब्ध गृहमे वर्षाके शब्दमे और भी भीषणता बढ़ रही है। ऐसे आँधी-पानी और बिजलोके समयमें न जाने कौन रह-रहकर अति कहण-स्वरसे रो रोकर कह उठता है—‘मैं कहाँ जाऊँ ? मेरा आश्रय कहाँ है ?’

छत्तीसवाँ परिच्छेद स्मृति

सलाउद्दीनको जिस बातकी डर थी वही हुई। उनके दुर्गतिकी सीमा न रही। मुन्नाके जानेके बाद तुरंत ही रौशन आरा सखियोंके साथ कोप-गृहमें जाकर भीतरसे किवाड़ बन्द कर लिया। सलाउद्दीन द्वारके पास बैठकर धरना देने लगे। प्राण-पणसे बिनती करके रौशन आराको सन्तुष्ट करनेकी चेष्टा करने लगे। परन्तु देवी प्रसन्न न हुई, द्वार ज्योंका त्यों बन्द ही रहा। नवाब साहब तो द्वार पर बैठकर धरना दे रहे थे, और घरके भीतर कमेटी हो रही थी। सखियोंके पास जो कुछ बातोंका अस्त्र-शस्त्र था, वह सब बेचारे सलाउद्दीनके ऊपर छोड़ा गया। किसी सखीने कहा—हमारी सखीके याग्य क्या यही थे? बन्दरके गलेमें मोतियोंकी माला? इस रत्नका गौरव यह क्या समझेंगे?

किसीने कहा—हमारे बेगमके लिये क्या दूसरा वर न मिलता? इतनी खुशामद करके इनसे व्याह करनेको किसने कहा था?

बेगम साहब इस अभिनय की नायक थीं, वह बिछौने पर सोयी सोयी कह रही थी—मेरी तरह दुःखी इस संसारमें और कोई नहीं है।

सखियोंकी प्रेम भरी बातें सुनकर वह कहने लगी—सखी! मेरी मृत्यु क्यों नहीं हुई? अल्लाह मुझे दुनियाँसे उठा ले। यह

दुःख मुझसे नहीं सहा जाता । मुझे रूप नहीं है, यह क्या मैं नहीं जानती थी कि अपनी रूपवती स्त्रीका रूप उन्होंने मुझे दिखा दिया ? अच्छी बात है, उसीको लेकर रहनेसे तो अच्छा होता, फिर मुझसे व्याह करनेकी जरूरत ही क्या थी !

रौशन आराके मनमें अपने रूपका बड़ा गर्व था इसीसे वह इन बातोंको कह रही थी । यह हम नहीं कह सकते कि रौशन आराका रूप अच्छा नहीं था, परन्तु उसको देखकर यदि किसीके मनमें उपन्यासकी नायिकाकी प्रतिभाका उदय न हो तो यह दोष हमारा नहीं है । जो हो अपने रूपकी प्रशंसा रात-दिन सुनते-सुनते रौशन आरा समझने लगी थी कि मेरे बराबर सुन्दरी समामें और कोई नहीं है । परन्तु मुन्नाको देखकर उसके इस अभिमानमें चोट पहुँची थी, इसीसे वह एक बार और अपने रूपकी प्रशंसा सुनकर उस चोटको अच्छी करना चाहती थी ।

रौशन आराकी बातें सुनकर एक सखीने कहा—रूप ! वह तुम्हारे पैरोंके बराबर भी तो पहले होले ?

रौशन आराने कहा—तुम लोग तो ऐसा ही कहती रहती हो ? यदि मुझे रूप होता तो क्या मैं इतनी जल्दी पुरानी हो जाती कि सौत आकर मेरा अपमान करनेका साहस करती ?

बेगम साहबके इस दुःखसे सब सखियोंका हृदय फटने लगा, चारों ओरसे 'हाय हाय' मच गयी, जिसके मनमें जितनी बातें थीं सब सलाउद्दीनको सुना-सुनाकर कही जाने लगीं । उसी समय मौका समझकर एक सखीने दरवाजा खोल दिया, विचारे सला

उद्दीन घरके अन्दर गये । सखियाँ उठकर खड़ी हो गयीं और कहने लगीं—नवाब साहब आये हैं ।

रौशन आराने कहा—तुम लोग उनसे कह दो कि यहाँ से चले जायँ । यहाँ आनेसे अच्छा न होगा ।

पर सखियाँ बिना कुछ कहे दूसरे घरमें चली गयीं । सला-उद्दीन साहस करके रौशन आराके पैरोंके पास बैठ गये । उसके बाद बहुत तरहसे विनती करने लगे, यहाँ तक कि रौशन आराका पैर सिरपर रखकर बहुत देर तक धरना देते रहे । तो भी उसका वह अटूट मान न टूटा । तब हताश होकर उन्होंने कहा—तब मैं जाता हूँ । रौशन आरा मेरे प्रति विमुख है तो फिर संसारमें मेरा क्या काम ? मैं सब छोड़कर फकीरी लूँगा ।

तब रौशन आरा कह उठी—संसारमें रहनेकी चाह नहीं थी तो व्याह क्यों किया ? मैं समझ गयी कि किसके लिये तुम संसार छोड़ना चाहते हो । हा ! मेरे भाग्यमें इतना अपमान लिखा था !

सलाउद्दीन बड़ी विपत्तिमें पड़ गए । उन्होंने कहा—मैं तो तुम्हें अपना तन, मन और धन सब अर्पण कर चुका हूँ, मैं तुम्हें छोड़कर कहाँ जाऊँगा ?

रौशन आरा—यह भी मेरी बदकिस्मती है । इतना भूठ !

सलाउद्दीन—मुझपर अविश्वास न करो । मुझे अपने चरणोंमें आश्रय दो ! मैं तो उसे चीन्हता तक नहीं कि वह कौन है ?

यह सुनकर कि मैं उसे चीन्हता तक नहीं रौशन आराका क्रोध और भी भड़क उठा, उसने कहा—हा ! मेरे किस्मतमें

यही बदा था। इतनी दगा ! यह तो मैं सपनेमें भी नहीं जानती थी।

सलाउद्दीन 'किंकर्तव्य त्रिमूढ़' होकर इसी प्रकारकी और भी दश चार बातें कहने लगे, परन्तु रौशन आरा उनकी बातोंका दूसरा ही अर्थ समझकर अत्यन्त क्रोधित होकर वहाँसे उठने लगी। सलाउद्दीन अन्तमें चुप होकर बैठ गये। इससे और भी बुराई हुई। रौशन आरा रोकर कहने लगी—हाय ! मेरा कोई नहीं है, मेरे मरने पर भी किसीका कुछ नुकसान न होगा !

यह कहकर वह सिर पीटती हुई दूसरे घरमें जाने लगी। सलाउद्दीन उसके पैरों पर गिरकर कहने लगे—इस बार अपराध क्षमा करो। जाव मत !

रौशनआरा अपना पैर भटकारकर वहाँसे चली गयी, उसने एक बार फिरकर भी नहीं देखा। सलाउद्दीन वहाँ बैठे रहे। उनका हृदय दुःख और कष्टसे विदीर्ण होने लगा। रौशन आराके लिये उन्होंने अपने यार दोस्तोंको छोड़ दिया, रात दिन धरना देनेके अतिरिक्त उनके लिये और कोई काम न रहा। पर तो भी वह रौशन आराको प्रसन्न न कर सके। और मुन्नाको किस प्रकार उन्होंने निर्दयताके साथ पैरोंसे ठुकराकर फेंक दिया ? उसके साथ उन्होंने कैसा पैशाचिक व्यवहार किया था ? आज सलाउद्दीनके हृदयमें जब चोट पहुँची तब वह दूसरेका कष्ट समझ सके। सैकड़ों पुरानी बातें उन्हें इस समय याद आने लगीं। मुन्नाका वह आत्म-विमर्जी प्रेम, विनती, व्यवहार, और सरलता-मय उसकी उदास

मूर्ति उन्हें याद आने लगी। आजका व्यवहार, उसका वह दीन-हीन भिखारिणीका वेष और हृदय-भेदी व्याकुल-क्रन्दन उन्हें याद आने लगा। पशुसे भी अधम अपना व्यवहार, पिशाचसे भी अधिक निर्दय आचरण, उनके मनमें ज्वाला-मुखी पहाड़की तरह धधकने लगा। सलाउद्दीन अधिक न सह सके। वहाँसे उठकर वह बरामदेमें आकर खड़े हो गये। उसी आँधी और पानीमें एक बट वृक्षके नीचे एक उल्लू विकट स्वरसे चिल्ला उठा। मानो कह उठा कि निर्दय, पिशाच तूने इस भयानक रात्रिमें उसे निकाल दिया ! सलाउद्दीनने अपने कानोंको उँगलीसे बन्द कर लिया। फिर वही हृदय-भेदी क्रन्दन उस आँधी पानीमें उन्हें सुनाई पड़ने लगा—“मेरा आश्रय कहाँ है, मैं कहाँ जाऊँ ?” सलाउद्दीन पागलकी तरह सोचने लगे—कहाँ जाऊँ, इस यंत्रणासे मेरा छुटकारा कहाँ होगा ? परन्तु उसी समय फिर उन्होंने सोचा कि इस यंत्रणासे अब मेरा छुटकारा नहीं है, यह अग्नि जोवन पर्यन्त उनके हृदयको जलाती रहेगी, इससे उनका छुटकारा नहीं है। उनके हृदयमें इतना मनुष्यत्व नहीं था, इतना तेज नहीं था कि वह अपने जीवन-श्रोतको फिराकर इस पापका प्रायश्चित्त करके अपनी जिन्दगीको बिता सकते। ऐश और आरामसे उनके शरीरका रक्त सूख गया था, उनके हृदयका वज्र चला गया था, वह पशुसे भी अधम हो गये थे। इसलिये मनुष्यत्वहीन निर्जीव प्राणसे अदृष्टके साथ संग्राम करनेकी उनमें सामर्थ्य नहीं थी। मुर्देकी तरह अदृष्टके भाँकेसे प्रवृत्तिकी तरंगोंमें बहनेके सिवा उनके पास और कोई दूसरा उपाय नहीं था।

सैंतीसवाँ परिच्छेद

वैराग्य

वह असहाय निराश्रय बालिका, उस आँधी-पानी तथा अंधकारसे परिपूर्ण विकट रात्रिमें अन्तःपुरसे निकाल बाहर कर दी जाने पर इधर-उधर भटकने लगी ।

भीषण अन्धकार-रूपी राक्षसने अपना भयंकर मुख पसारकर विश्व-संसारको निगल लिया है । आँधीसे पेड़ोंको उखाड़कर, पृथ्वीको कँपाता हुआ वह अटूटहास कर रहा है । उसके साथ प्राण-पणसे युद्ध करते-करते प्रकृति मानो घायल हो गयी है । इस कराल रात्रिमें मनुष्योंकी कौन कहे देव-दानव लोग भी घबड़ा जाते हैं । परन्तु एक लुट्र बालिकाको इससे कुछ भी भय नहीं है । अन्ध-कारमें उसके मस्तक पर लगातार जल-धारा पड़ रही है, पर मुन्नाको उसका कुछ भी ध्यान नहीं है । वृक्षोंकी शाखायें आँधीके वेगसे टूट टूटकर उसके पास गिर रही हैं पर वह उनकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखती । पेड़ों पर बिजलीकी धारा कभी-कभी आजाती है, उसके प्रकाशसे मानों पेड़ जलने लगते हैं, पर मुन्नाको उससे कुछ भी भय नहीं होता; वरन वह उसमें जलनेके लिये दौड़ने लगती है; क्योंकि अब मुन्नाको मृत्युसे भय नहीं है । वह मृत्युको आलिंगन करनेके लिये तैयार है । इस समय संसारमें ऐसा कोई भी दुःख नहीं है, जिसे देखकर मुन्नाको भय हो ।

मुन्नाने जिस आघातको सहन किया है, जिस भीषण दृश्यको देखा है, उसके निकट यह सब केवल खिलवाड़ है। मुन्ना निर्भय होकर लगातार चली जा रही है। जब प्रभात हुआ, आँधी-पानी थम गया, जगतका अन्धकार सूर्यके भयसे छिप गया, तब भी संसारके सब अन्धकारको मुन्ना अपने हृदयमें लिए हुए चली जा रहा थी। विश्राम करना मानों वह भूल गयी थी। न जाने कौन सी शक्तिसे वह चली जा रही थी, ठहरनेकी उसमें सामर्थ्य नहीं थी।

धूप निकल आयी, चारों ओर लोग चलने लगे, मुन्नाकी आँखोंके सामने एक महल दिखाई पड़ा। वह चकित होकर उसे देखने लगी, यह महल उसीका था।

हुगलीसे पण्डुआ प्रायः सात कोस दूर है। दुर्बल मुन्ना आज इस प्रबल यंत्रणाकी असीम उत्तेजनासे एक रात्रिमें ही इतनी दूर चली आई है।

दो दिन पहले जो स्थान उसके लिए सहस्रों मायाका आधार था, जिसके निकट बिदा माँगती समय वह दुःखसे व्याकुल हो गयी थी वही घर, वही बाग और वही नदी आज फिर उसे आँखोंके सामने दिखाई पड़ रहा है। परन्तु आज उन्हें देखकर मुन्नाके हृदयमें कुछ भी चंचलता उत्पन्न न हुई। उसकी आँखोंसे एक वूँद आँसू भी नहीं गिरा। मुन्ना अविचलित हृदयसे उस महलकी ओर देखती हुई सोचने लगी—‘सब मिथ्या है, सब माया है, सब भ्रान्ति है।’ मुन्ना वहीं एक पेड़के नीचे बैठकर चारों ओर देखने लगी। नदी

बह रही थी, पानीसे भीगे हुए पेड़ प्रफुल्ल होकर खड़े थे, पशु-पक्षी और स्त्री-पुरुष आनन्दसे इधर-उधर घूम फिर रहे थे। परन्तु मुन्नाको यह सब माया सी जान पड़ी। जगत-संसार; विश्व-ब्रह्मांड यह सब उसे मिथ्या जान पड़ने लगा। नावों पर मल्लाह बीत गा रहे थे, युवती स्त्रियाँ हँसती हुई गङ्गा-स्नानके लिये घाट पर जा रही थीं। मुन्नाने सोचा 'यह गीत क्यों? यह हँसी क्यों?' चारों ओर देखकर मुन्ना मन-ही-मन कहने लगी—संसारमें सुख नहीं है, संसारमें सत्य नहीं है। संसारके उस पार ही सुखका निवास है। संसारके बाहर ही सत्यका राज्य है, परन्तु संसार यंत्रणा-मय और मिथ्या है।

मुन्नाके हृदयमें अब कोई आशा नहीं थी, कोई वासना नहीं थी, सुख नहीं था, और दुःख भी नहीं था, एक प्रकारके घोर वैराग्यसे उसका हृदय परिपूर्ण हो गया था। इसीसे मुन्ना जगतको शून्य-दृष्टिसे देख रही थी। धीरे-धीरे मुन्नाकी उत्तेजना शिथिल होने लगी, उसे थकावट अनुभव करनेकी शक्ति प्राप्त होने लगी। उसकी उत्तेजित स्नायु-मंडली शिथिल हो गयी। मुन्ना उसी वृत्तके नीचे सो गयी, और गंभीर निद्रामें मग्न हो गयी।

अड़तीसवाँ परिच्छेद

प्रत्यागमन

उसी दिन प्रातःकाल मसीन नौका पर हुगली पहुँचे । नौकासे उन्हें जब अपना वही परिचित घर दिखाई पड़ा, तब वह अपना सब कष्ट भूल गये । बहुत दिनोंके बाद मुन्नाको देखनेकी आशासे उनका हृदय प्रफुल्लित हो गया ।

वह घरमें आकर पहले ही मुन्नाके घरमें गये, परन्तु मुन्ना वहाँ कहाँ ! उन्होंने देखा कि, उसकी सेज सूनी पड़ी है, बहुत दिनोंसे उसे किसीने स्पर्श तक नहीं किया है । यह देखकर चिन्तासे वह व्याकुल हो गये । वह घरके प्रत्येक कमरेमें मुन्नाको खोजने लगे । वहाँ घरमें उसे कहीं न पाकर बागमें खोजने लगे । उन्होंने सोचा कि नदीके किनारे बागमें मुन्ना प्रायः बैठी रहती थी । वहाँ आकर वह उन्मत्तकी तरह चारों ओर देखने लगे । सहसा उद्यानके बाहर वृक्षके नीचे उन्होंने देखा कि न जाने कौन खी पड़ी है । उसके बाल खुल गये हैं और उसका मुँह दुम्हला गया है । मसीन दौड़कर उस वृक्षके पास आ खड़े हुए । वहाँ खड़े होते ही संन्यासीकी तेजस्वी मूर्ति उन्हें दिखाई पड़ी । संन्यासी मुन्नाके सिरहाने खड़े होकर उसके निर्जीव मुखकी ओर देख रहे थे । उन्होंने उँगलीके संकेतसे मसीनको चुप रहनेके लिये कहा । मसीन मुन्नाकी ओर देखते हुए चुपचाप खड़े रहे ।

मुन्नाके उस सुसुप्त मुखपर कैसी शांति विराज रही थी ! मसीनने मुन्नाके सुख पर मृत्युकी छाया देखी, उनका हृदय विदीर्ण हो गया । कुछ दिन पहले, वासनाके मोहमें, उन्होंने जो जागते हुए स्वप्न देखा था, वही इस समय उनके ध्यानमें आगया । मुन्नाका ठीक वैसा ही प्रशान्त मुख था, और ठीक उसी प्रकार उसके सिरके पास संन्यासी खड़े थे । उस दिन तो उन्होंने स्वप्न देखा था, पर आज तो यह स्वप्न नहीं है । आज यह वास्तविक घटना थी । जिस घटनाके सत्य होनेके लिये उन्होंने अब तक प्रार्थना की थी, वही आज सत्य हुई, आज उनकी मनो-कामना पूर्ण हुई । परन्तु किस करुण अवस्थामें ! हा ! वह क्या इसी दिनको देखनेके लिये इतने दिनों तक तरस रहे थे ? वह मुन्नाके लिये जिस शांतिका कामना कर रहे थे, वह क्या यही शांति थी ? वह कितने दिनोंके बाद कितनी दूरसे मुन्नाको देखनेके लिये आये थे, सो क्या उसका यही मृत-मुख ? भाईका हृदय, बहनका गला पकड़कर रोनेके लिये, आदरसे पुकारनेके लिये व्याकुल हो उठा । परन्तु उनमें आगे बढ़नेकी इस समय शक्ति नहीं थी । वह निर्जीवकी तरह वहीं खड़े रहे ।

उनचालीसवाँ परिच्छेद

प्रकाश

मसीनने अचल मूर्तिकी तरह खड़े होकर करुण दृष्टिसे संन्यासीकी ओर देखा। संन्यासीकी दृष्टि पड़ते ही मसीनकी दृष्टि स्तम्भित हो गयी और धीरे-धीरे उनकी चेतना जाती रही। वह बाह्य वस्तु देख न सके। धीरे-धीरे वह अपनेको भी भूल गये। उनका अन्तर और बाहर दोनों ही विस्मृतिमें डूब गया। संन्यासीके अस्तित्वमें उन्होंने अपना अस्तित्व खो दिया। संन्यासीके ज्ञानको उन्होंने अपना ज्ञान समझ लिया। एक विचित्र दृश्य उन्हें दिखाई पड़ा।

सन्ध्याका समय है, वृक्षोंसे सुशोभित एक गिरि-शिखर सामने है। शिखरके नीचे एक सुन्दर कुटी बनी है। कुटीमें मृग-चर्मके ऊपर एक पवित्र सौम्य मूर्ति महापुरुष बैठे हैं। सामने दोनों भाई-बहन अपराधीकी भांति सिर नीचा किये खड़े हैं। संन्यासी उनकी ओर देख रहे हैं। उनकी आँखें स्नेह-अश्रुसे भरी हैं, उनके प्रशांत ललाटमें विपादकी रेखा दिखाई पड़ रही है, उस रेखामें ये शब्द लिखे हैं—‘वत्सगण ! बाहरी कामसे इतना पाप नहीं होता, जितना कि मनकी विकृतिसे और मन्द इच्छासे। अतिथिको मुसलमान समझकर उसे हृदयका आतिथ्य देनेमें पराङ्ग-मुख क्यों हुए, इसका परिणाम क्या होगा, किस तरह इस भावका प्रचालन होगा, इसे कौन कह सकता है ?’ देखते-देखते वह दृश्य विलीन हो गया। सहसा घने अन्धकारमें मसीन डूब गये।

वह अन्धकार जब दूर हो गया तब उन्हें वह कुटी फिर दिखाई न पड़ी। उन्होंने देखा कि सामने मनुष्योंकी एक बड़ी भीड़मेसे दोनों भाई-बहन चले जा रहे हैं, दूरसे एक आदमी उन्हें देख रहा है। धीरे धीरे वह दृश्य भी मसीनके सामनेसे चला गया। इसी प्रकार घूमते हुए चक्रकी तरह उनकी आँखोंके सामने एक दृश्यके बाद दूसरा बदलने लगा। सात रंगका चक्र जिस प्रकार घूमते-घूमते एक रंगमें परिणत हो जाता है उसी प्रकार वह सभी दृश्य छायाकी भांति एकमें मिल गये। मसीन मानों उन सहस्रों छायामें बटकर घूमने लगे। लगातार घूमते घूमते उनकी साँस बन्द हो गयी, वह उसी घूमती हुई सहस्रों छायापर गिर पड़े। यहीं उनके स्वप्नका अन्त हो गया। वह जाग उठे। परन्तु जब वह जागे, तब उनमें बड़ा परिवर्तन हो गया था। उनके चारों ओर एक दिव्य ज्ञानका प्रकाश फैल रहा था। उस समय उनमें हर्ष और विपाद कुछ नहीं था। भेदाभेदका ज्ञान नहीं था। उस समय उनका हृदय एक परम आनन्दसे परिपूर्ण हो गया था।

मसीनने जागकर देखा कि, वे अब बागमें नहीं है। मुन्ना अपने शयन गृहमें पलंग पर सोयी है। वह और भोलानाथ उसके पास खड़े हैं। मुन्ना और भोलानाथ विस्मय-पूर्ण आनन्द दृष्टिसे उनकी ओर देख रहे हैं।

संन्यासीने इन दोनों भाई बहनोंको एक प्रकारकी सुसुप्त अवस्थामें हाँ यहाँ पहुँचा दिया था। घरमें आकर इनकी नींद खुली। भोलानाथ उनके आनेके कुछही पहले बन्धन-मुक्त होकर यहाँ आगये थे।

चालीसवाँ परिच्छेद

एक ही मार्ग पर

मुन्नाकी ज्योंही नोंद खुली त्योंही उसने मसीनको अपनी ओर स्नेहमयी दृष्टिसे देखते हुए पाया। उसकी स्थिर दृष्टि सहसा चंचल हो उठी, उसका उदास मुख सहसा प्रफुल्ल हो उठा। उसने उसी समय फिर अपनी आँखें मूँद लीं, क्योंकि उसने सोचा कि यह मैं स्वप्न देख रही हूँ। मुन्नाको जाग्रत देखकर, और उसके मृतप्रायः देहमें जीवन देखकर मसीनके आनन्दकी सीमा न रही। आनन्द-विह्वल स्वरसे उन्होंने 'मुन्ना-मुन्ना' कहकर उसके दोनों हाथोंको अपने हाथोंमें ले लिया। उनके स्नेह-मय स्वर और स्नेह-स्पर्शसे मुन्नाने फिर आँखें मूँद लीं। धीरे-धीरे उसने विस्मय भरे स्वरसे कहा—मसीन ? यह क्या मैं स्वप्न देख रही हूँ ?

मसीन स्नेहसे विह्वल होकर फिर 'मुन्ना-मुन्ना' कह उठे। मुन्ना भी स्नेह मयी दृष्टिसे उनकी ओर देखने लगी। भोलानाथकी आँखोंसे अविरल अश्रु-धारा बहने लगी। जिस दिन मसीन विदेशसे चले गये उसी दिनसे न जाने कितनी उत्सुकतासे भोलानाथ इस दिनकी बाट जो रहे थे। न जाने कितनी आशंका, कितना कष्ट और कितनी उत्कंठासे उन्होंने ये दिन बिताये थे। कितने दिनोंके बाद आज उन्हें वह दिखाई पड़ा। वह आनन्द-विह्वल हो गये हैं। आज उन्हें तानपूराकी याद बार-बार आने लगी।

एक बार घरमें चारों ओर देखकर वह मसीनके पास पलंगके नीचे बैठ गये और धीरे-धीरे गाने लगे ।

मुन्ना थोड़ी देर बाद जब कुछ स्थस्थ हुई तब पहलेकी बातें उसे याद आने लगीं । उस रातकी आँधी-पानी, पतिका व्यवहार, अपनी निराश्रयावस्था सभी बातें उसे याद आने लगीं । उसके बाद ? उसके बाद ओर कुछ उसे याद नहीं है, इस समय जो कुछ वह देख रही है वह सत्य और जाग्रत घटना है । स्वप्न नहीं है, वास्तवमें ही इस समय मसीन उसके सामने खड़े हैं । मुन्नाने पूछा—मसीन ! पिता ?

इस प्रश्नसे मसीन विह्वल हो गये, मुन्नाकी इस अवस्थाको देखते हुए वह पिताका मृत्यु-संवाद कैसे कहें ? वह चुप रहे । मुन्ना पाषाण-मूर्तिकी तरह शुष्क नेत्रोंसे उनकी ओर देख रही थी । उसका यह पाषाण-भाव देखकर भोलानाथ डर गये । मसीन घबड़ा गये । कुछ देर बाद मुन्नाने अस्पष्ट स्वरसे कहा—मैं समझ गयी मसीन, मैं समझ गयी ! जिस प्रेमके ऊपर मैंने स्थायी विश्वास किया था वह भी स्वप्नकी तरह टूट गया । पर अब उसका दुःख ही क्या ! जो नहीं मिला उसके लिये दुःख क्या ! यदि मिलता भी तो उससे क्या होता ! एक मिथ्या विश्वासको पकड़नेके अतिरिक्त और उससे क्या होता !

मुन्नाका यह वैराग्य देखकर भोलानाथ रोने लगे । उन्होंने कहा—बीबी जी, जो इस लोकमें नहीं मिला, वह परलोकमें मिलेगा । भगवान् किसीको सदा दुःखी नहीं रखते; क्योंकि उनके करुणामय नाममें धब्बा लगता है ।

मुन्नाने पहले कभी भोलानाथसे बातचीत नहीं की थी, परन्तु आज उसे किसी प्रकारका संकोच नहीं था। वह उनकी ओर देखकर कहने लगी—इसे भी कौन जानता है ? कौन जानता है कि परलोकमें भी यह मिथ्या सुख-दुःख हँसी-तमाशा हमारे लिये अपेक्षा नहीं कर रहा होगा। जिस प्रकार इस जन्मके ऊपर हमारा वश नहीं चला, अपनी इच्छासे हम यहाँ नहीं आये, एक अदृष्ट चक्रमें पड़कर निरंतर घूमते रहे, कौन जानता है कि उसी प्रकार भविष्य जन्ममें भी मिथ्या वासना और कामनासे हाहाकार न करना पड़ेगा ?

मसीन मानों चौंक उठे, मुन्नाको ये सब बातें किसने सिखायीं ? वह कुछ कहना चाहते थे कि इतनेमें ही भोलानाथ कह उठे—यदि यही बात है तो यह मिथ्या ही सत्य है ? हमारे ऐसे लोगोंके लिये इस मिथ्यासे बचनेका कोई उपाय नहीं है !

मुन्ना—ऐसा नहीं हो सकता ? सत्य है, संसारके उस पार सत्य छिपा है, हम जिसे देखते हैं उसके बाहर सुख और आशा छिपी है। इन्द्रियोंसे अतीत होकर संसारके सुख-दुखके बाहर जीनेसे वह सत्य मिलता है।

थोड़ी देर तक सब लोग चुप रहे। उसके बाद मुन्नाने कहा—मसीन, मुझसे कुछ छिपाओ मत, जो कुछ हो गया है, उसे अभी कह दो। मैं सब सह सकूँगी।

मसीन सजल नेत्रोंसे पितासे भेंट, उनकी पीड़ा, और उनकी मृत्युका समाचार सब कहने लगे। मुन्ना अपने हृदय पर पत्थर

रखकर ये सब बातें सुनने लगी। यह सब कहते-कहते जब मसीन एक बार ठहर गये तब मुन्ना आँखें मूँदकर दोनों हाथ हृदय पर रखकर कह उठी—पिता तुम शांति लोकमें चले गये मैं अपने अश्रु-जलसे उस शांतिको भंग नहीं करना चाहती।

मुन्नाका स्वर काँप रहा था। मुन्नाने प्राणपणसे आँसुआँको रोकनेकी चेष्टा की। वह जब कृतकार्य हो गयी, तब आँखें खोलकर मसीनकी ओर देखकर बोली—उसके बाद पिताने क्या कहा ?

मसीन मताहरकी अंतिम बातें धीरे-धीरे कह गये। मुन्नाका मुख और भी निर्जीव हो गया। वह अब आँखोंके आँसूको रोक न सकी। उसने मन-ही-मन कहा—हा पिता ! तुमने मृत्युके समयमें भी इस हतभागिनीका स्मरण करते हुए प्राण-त्याग किया है !

चारो दिशा निस्तब्धतासे परिपूर्ण हो गयी थी। कुछ देर बाद मसीनने अपने कपड़ेमेंसे पिताका दिया हुआ एक कवच खोलकर मुन्नाको दे दिया। उसने उसे देखकर मसीनको लौटा दिया। मसीन उसे उलट-पलटकर देखने लगे। एक जगह उन्होंने देखा कि उस कवचमें दबाकर खोलनेका खटका बना हुआ है। उसे दबाते ही वह कवच खुल गया। उसमें एक कागज था। मसीनने उसको निकालकर पढ़ा। वह एक दान-पत्र था। उनके बागमें एक जगह पेड़के नीचे स्वर्ण-मुद्रासे भरे हुए घड़े गड़े हैं। उस दान-पत्रमें मताहर उसीका उल्लेख करके वह सब मुन्नाको दे गये थे। मसीनने उसे पढ़कर मुन्नाको सुना दिया। वह अवि-

चलित भावसे उसे सुन गयी। भोलानाथ कम्पित स्वरसे कह उठे—बीबी जी, उसे (ईश्वरको) हृदयसे धन्यवाद दीजिये, वह असहायका सहायक है, उसीकी यह दया है।

मुन्नाके सूखे ओंठों पर एक क्षीण हँसीकी रेखा दिखाई पड़ी। उसने कहा—भाई, असहायके जो सहाय हैं, उनकी इतनी दया है। उसे जितना मैं धन खोकर समझ सकी हूँ उतना धन रहते नहीं समझ सकी थी। धन खोकर मैंने जो शांति और जो अमृत प्राप्त किया है, वह अगाध धन-राशिसे भी नहीं मिल सकता? फिर आज इस साधारण धनके लिये उसे अधिक धन्यवाद क्या दें? मेरा धन छीनकर उन्होंने मुझ पर जो दया की है, उसके लिये मैं अपना अन्तःकरण उन्हें पहले ही अर्पित कर चुकी हूँ।

मुन्ना यह कहकर ठहर गयी। फिर मसीनकी ओर देखकर उसने कहा—मसीन, मैं अब धनकी इच्छा नहीं रखती। धन लेकर अब मैं क्या करूँगी? जिस दिन एक मुट्ठी अन्नके लिये मैं द्वार-द्वार भोख माँग रही थी, उस दिन कदाचित् यह धन मिलता तो मैं सन्तुष्ट हो सकती थी, परन्तु वह दिन अब नहीं है। उस दिन जो भिखारिणी थी, आज वह संन्यासिनी है। भाई, ऐश्वर्यसे क्या कोई सुखी हो सकता है? हम लोगोंके पास क्या ऐश्वर्य नहीं था? परन्तु उस समय हम लोग भला कितने सुखी थे?

मसीनने कुछ नहीं कहा—उनके मनमें उस समय किस प्रकारका भाव हो रहा था यह नहीं कहा जा सकता। वह केवल

